

DPN 6230

Title: विष्णु प्रतिष्ठा विधि व मेमेसु विधि VISHNU PRATISTHA VIDHI VA MEMESU VIDHI

Run. No. 6921

Cat. No. 18

Micro. No.

Subject *consuetudinal rituals*
प्रतिष्ठा विधि

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *नेपालभाषा निर्देश*
newa direction

Size in cms. 27.5 X 8.3

Folios 140 Lines (in a page) 23/22

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS १२८४ मङ्सिर १

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.: *रेखाचित्र । विष्णुमा व महासमुद्र*
Sketch line drawing of Lord Vishnu & mandak
dark, ornamented beehive paper. Standard.

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / *leather bound cover*

Condition: fine / damaged by worms, rats, water / *बर्गु पुनः पुनः पुनः, कृतिनी दिनालय नेपालीको, एन०*

Beginning, colophon, post-colophon:

पत्राङ्कः १४० / १४ folio number written.

↓
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथ विष्णु प्रतिष्ठा विधिर्लेख्यते ॥ नाना देवप्रतिष्ठा प्रतोद्यापनादि,
श्रीनारद निमन्त्रनं मण्डलं पुराणं अहचार्य गामत्री जयः ...

समाप्ति वाक्य / Post colophon

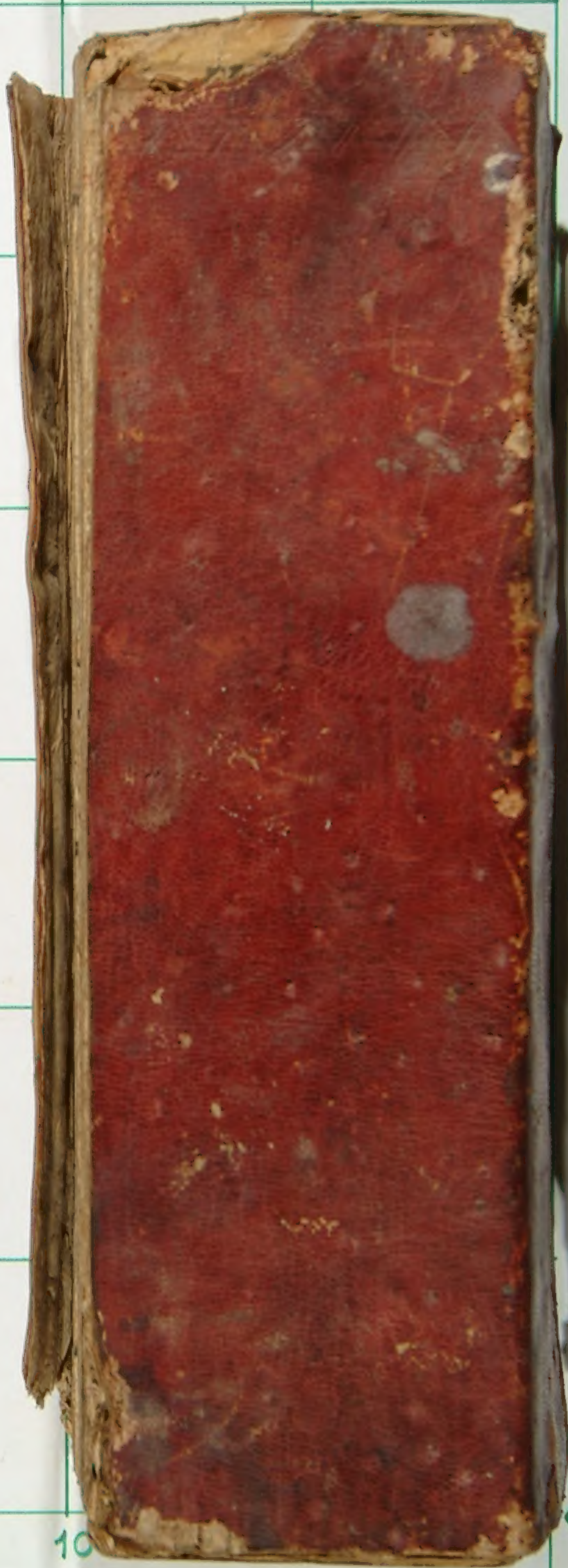
शिव ८२८ मागिछि छुक्क ॥१॥ लेखा सम्पूर्ण मुदा ॥ छुमछु सर्विडा ॥

टिप्पणी - ✓ जवन धल जव नेपाल माथे चमा गः ॥

✓ स्वपय गन्या विष्णु प्रसिद्धि याः ॥ स्वः गन उल्लेख नयू ।

Remark - ✓ Ritual requisities listed in newa

- ✓ nowhere is mentioned identity of Lord Vishnu
consecrated (possibly Vishnu temple of Bhaktapur)



10

0 cms.

5

10

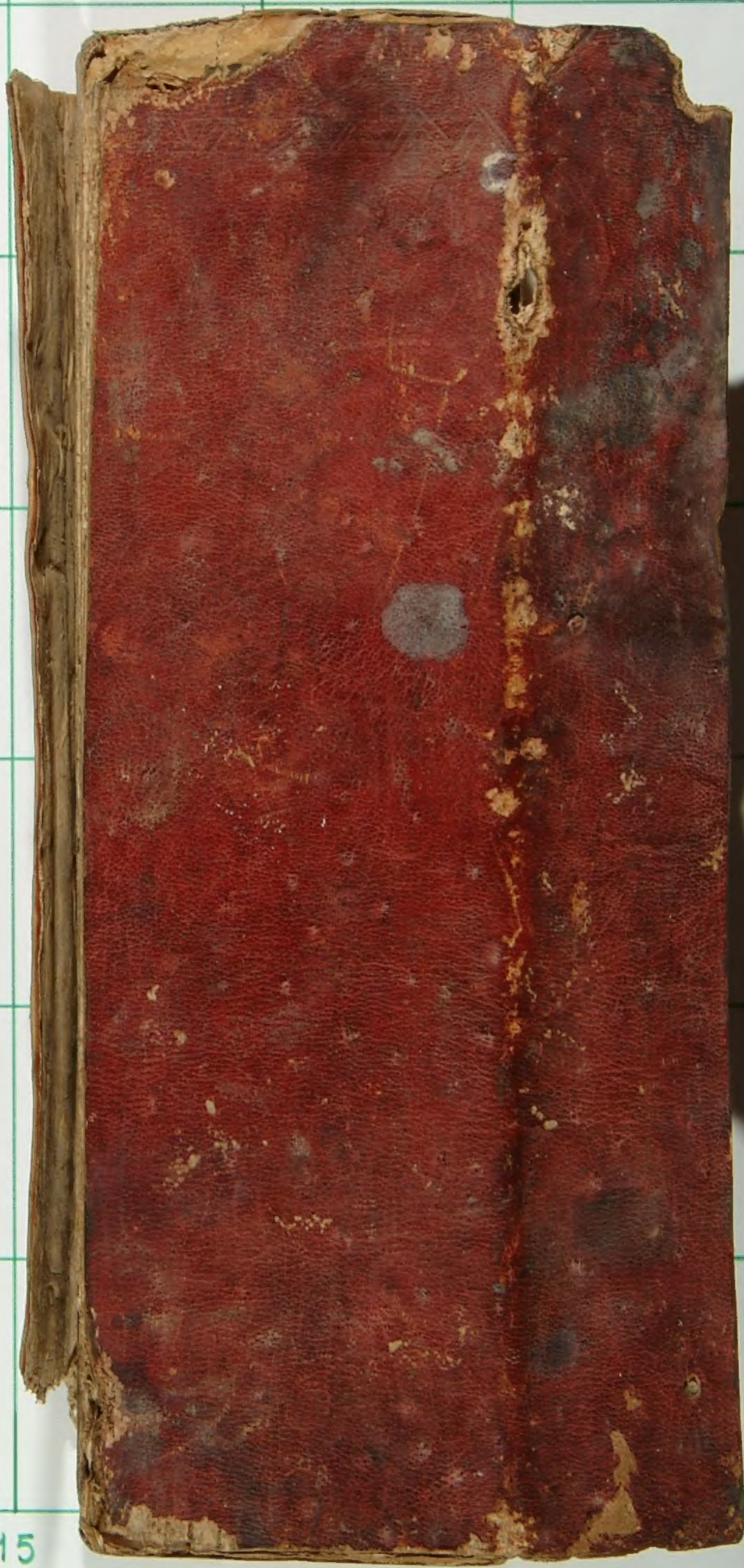
15

20

25

30

15



0 cms.

5

10

15

20

25

30

उत्तमांगनावाक्य ॥ ३० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 (धर्मकामोभयौ कायदागृहगतवशावाशसुखं)

द्वयोरुक्तिस्तवादिषु गच्छन्तु
 तेषां यत्र स्थितं यत्राधीनं तं गच्छन्तु
 तेषां यत्रादिषु गच्छन्तु तेषां यत्रादिषु गच्छन्तु ॥
 का ॥

१ पञ्चतामसमृत्तिका ॥ १० ॥
 मृत्तिका ॥ २ ॥ विष्णुद्वानमृत्तिका ॥ ११ ॥
 नवीयानमृत्तिका ॥
 वक्रमूलमृत्तिका ॥ ४ ॥
 वनाक्षीयामृत्तिका ॥
 वाल्मीकमृत्तिका ॥ ५ ॥
 हस्तिवक्रमृत्तिका ॥ ५ ॥
 (मृत्तिका ॥ ६ ॥
 (मृत्तिका ॥ ७ ॥

विष्णुद्वानमृत्तिका ॥ १२ ॥
 मृत्तिका ॥ ० ॥
 इव न वदन्तु क्वचि
 नावयतामवर्तनव
 मृत्तिका ॥ १० ॥

सिन्धुसमूह वादि ॥ ००००००	कान्तसमूह मृत्तिका ००००००	कान्तसमूह कवाय ॥ ००००००
॥ १ ॥ ००००००	॥ २ ॥ ००००००	॥ ३ ॥ ००००००
॥ ४ ॥ ००००००	॥ ५ ॥ ००००००	॥ ६ ॥ ००००००
॥ ७ ॥ ००००००	॥ ८ ॥ ००००००	॥ ९ ॥ ००००००

आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥

१ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 २ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ३ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ४ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ५ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ६ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ७ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ८ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ९ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥

१ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 २ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ३ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ४ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ५ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ६ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ७ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ८ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥
 ९ आर्षलवनसुखं नृपती मय नमो ॥

ॐ नमो गगनवासुधवा
 य॥ ॥ अथ विष्णु प्रति
 ष्ठा विधिलिख्यते ॥ नो ना
 दवयति ष्ठावता याचना
 दि॥ गगनाय निमनुने
 मधुतयुनश्च नववक्त्र
 यमयगो जयः गगना
 मदि कं कृत्वा ॥ यथा क
 लकलकृदुमधुयादिकं
 कृत्वा ॥ मोक्षप्रदकर्म
 न॥ वाक्मलराजयित्वा ॥
 धृवस्मिन् दिवसं कृत्वा
 नायवासितं ॥ निधी ॥ यथ
 ह्रमधुयं गत्वा निर्माक
 नमानरु ॥ मरुतूतनरा
 लुनवजातिः कलुकवृ
 त्तसमानीय ॥ वक्रियवा
 ल्यः दूवांसययदुदत
 धुलकया सिः रलोठक
 जं नुलाहवृधुवचसमी
 कृत्वा ॥ गेलनदूधु ॥ ॐ
 श्री ॥ भक्तिनिमित्तं ॥

ॐ विश्वतश्चक्रवर्तिवलिदं द्या
 त॥ कृदुमधुयादि वरुकाध
 मूरिकां ट्टीत्वा वहिनि
 क्रिया ॥ अथ मयं गयथा
 जय ॥ तिष्ठत ॥ ॐ ति ॥
 ॥ गगनयागस्ताने संध्या
 दिकं निर्वकर्म कृत्वा ॥ य
 ह्रमधुयादिरिन्नेमृत्वेय
 गयजमानं नसृष्ट्या दं
 कानय ॥ ॐ मयादि ॥
 ॥ यजमानस्य वाक् ॥
 ॐ मोक्षप्रदकर्म ॥ अ
 मृत्विजादि ॐ दमासया
 दार्धकृत्वा ॥ यथमजन
 ॥ ॐ सिद्धि वस्तु क्रियानं
 रं ॥ वाक्मलसमर्थं ॥
 वाक्मलन ॥ ॐ मया
 दिगुवृत्तमनन्या सोद्य
 यावृत्ता ॥ गगवलिद
 यं कृत्वा ॥ गृहनामोक्त
 नवकृत्वा वलिदं ॥ ग
 दवदककृत्वा लः रु
 उकादि ॥ अग्निगमादि

नाद्यावृषशशुनत्रिकंम
मिमानयुधिवाजुगिद
विष्णुवृषनामिसंवादि
मृगानिवृषसंवृगानि
॥ अंगमंदि ॥ ७० ॥ ति
ऊनीकलभावनविधिषा

तमामुयायननयक
मिहसुनसुदकिथं ११२
मंवासाधनं ॥ श्रीतवृष
ननवकार्यलिख ॥ ७० ॥
मृगं नीलवृषीयाः कृष्ण
ग्रीष्ममथरुद्रतगाम
वृषयथायज्जिह्वता
यदधिदद्यात् ॥ कथिला
अद्युतं ॥ दमहायातक
नागनाजरावसद्वव
धुयांकृष्णयांकानथ
त्यदा ॥ ७० ॥ मृगकथल
दद्यात् ॥ मृगशुशुद्वनु ॥ ७० ॥
मथ ॥ ७० ॥ सयकथल
रुद्रयदधिदद्यात् ॥ मृग
त ॥ ७० ॥ मृगकथलदद्या
त्यलमंकक ॥ ७० ॥ दक
ददिमुद्रवृषाहृयं ॥ ७० ॥

मृगदकिहृनतु ॥ ययय
मिमताहृयद्युत ॥ यिवाक
नमथा ॥ ७० ॥ नृयालि
मिह्याकनेमृगोयद्य
रुजनं ॥ वायवागमय
योकमीमनहृक ॥ ७० ॥ द
क ॥ ७० ॥ गामय ॥ ७० ॥ म
मिथयद्यधिपृक्षक ॥ ७० ॥
तसमनिधायनु ॥ ७० ॥ म
मृगदिपृथक् ॥ ७० ॥
समाहितमनारुत्वीय
वृगवृयजयता ॥ ७० ॥
अरुमोयतिगृवीया
पुश्रवविचक्र ॥ ७० ॥
७० ॥ मृगदवतावकि
७० ॥ मथवजनाहृम
कीनवृसा मथवृष
दधि ॥ ७० ॥ वडयावति
द्युत ॥ ७० ॥ रुद्रनदव
वनूवृषक ॥ ७० ॥ दक
७० ॥ वृषयाहृमथसु
यजायत्युदवता ॥ ७० ॥
ततयजमं ॥ ७० ॥ दधि
७० ॥ मथयतिदवता

नमो॥ कज्जुमिरुगसमि
 धरामाकं रुद्राय नमः॥
 करुणाय नमः॥ नादिदान
 यो॥ उं वाचकं युष्मादि
 मिंद्रुसं युष्मामि॥ गुरु
 कं युष्मामि नारिकं युष्मा
 मिभवंतं युष्मामि योयं
 तं युष्मामि वनितासं यु
 क्षामि॥ उं म नसु आ
 योयतां पादसु आ यो
 यतां वरुसु आ यो य
 तां॥ गुरुतु आ यो य
 तां॥ यत्तु कुरु यदा कि
 तंतु आ यो यतानि
 सुयतां तां तलसंध
 तु समहा य॥ ४३॥ अथ
 जय॥ स्वस्व विभवे न
 ० हि ० सी॥ उं त्वमने
 युति॥ ४॥ नमि मनु हसि
 वयं न॥ नमि वं वगव
 सा धने विधि॥ ४॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ध्रुवजीवन्मया ॥ २ ॥ ॐ ह्र
 उदीयक ॥ ३ ॥ नवभयवि
 दिगं ॥ ४ ॥ मयि नमो भगवते
 मं ॥ ५ ॥ दीयमानि गरुति
 मं ॥ ६ ॥ मयि दंष्ट्रीयुद्धो वि
 यता गकं ॥ ७ ॥ मयि सोमम
 श्वरता नृपमहता गन्ध
 वकं सफमं को मो वी न
 वमं हसं हकमि दंष्ट्रीय
 सदानो मयि हं ॥ ८ ॥ अजगन्ध
 दि ॥ ९ ॥ अजगन्ध निजं स
 र्जनं ॥ १० ॥ आवम ॥ ११ ॥ ह
 द्वि ॥ १२ ॥ ॐ यागमय स्वाहा
 या नाय स्वाहा ॥ १३ ॥ या ना
 य स्वाहा ॥ १४ ॥ वेदो य स्वा
 हा ॥ १५ ॥ अग्नय स्वाहा ॥ १६ ॥ वा
 स्वाहा ममय स्वाहा ॥ १७ ॥
 अग्निने वेंगं स्वाहा ॥ १८ ॥
 वाक्काथा व वाय ॥ १९ ॥
 निनव वलिदूजा विधि ॥ २० ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥ ॐ ह्र
 सिह मित्रस्य दिति नमि
 विश्वधाय विश्वस्य उव
 नस्य धर्मा ॥ २३ ॥ पृथिवीं च
 चक्षुषि वीं ॥ २४ ॥ हृद्य विवी
 मादि ॥ २५ ॥ सीमा ॥ २६ ॥ नमि
 र्जनं ॥ २७ ॥ ॐ स्था नायुषि वि
 ना ॥ २८ ॥ अवि वी स्वयं ॥ २९ ॥
 सकथु जनि ॥ ३० ॥ नथ सुय
 न ॥ ३१ ॥ ॐ द्या मित्र न त्वं द
 ववद ॥ ३२ ॥ दवस्था वं दारु
 वकं नममं वं दारु ह्या
 वदी स्वयं ॥ ३३ ॥ ॐ वं वस्य
 त्वा ॥ ३४ ॥ अजगन्ध निजं स
 र्जनं ॥ ३५ ॥ ॐ त्वमग्ने
 रि ॥ ३६ ॥ यवन नमो भगवते
 ॥ ३७ ॥ अजगन्ध निजं स
 वीदिददि ॥ ३८ ॥ वाभुला
 जा ॥ ३९ ॥ अजगन्ध निजं स
 रि को यं नमो भगवते
 व ॥ ४० ॥ ॐ भक्ति कायं

दसूतय नमः॥ ॐ श्री हय
 धर्मवीरि पूजने॥ ॐ यद्वि
 काय लक्ष्मी मूलं य नमः॥
 ॐ स्वस्ति नमः॥ लंजा
 पूजने॥ ॐ सर्वा निरु वि
 ना भय वक्ष मूलं य न
 मः॥ नमः॥ ॐ वक्ष य
 क्षीर्त्त॥ संमार्जनी पूज
 ने॥ नमः॥ वा हय धर्म
 वीरि कथन॥ स्वस्ति नमः
 नु लंजा कथन॥ श्री ध
 मय धर्म कथन॥ ॥ वा
 सा नमः॥ ॐ नमः
 धियत य नमः॥ ॐ यत्वा
 मः॥ मि वन गम्य याम
 क्षं न स्वा वक्ष स विना स
 कं तः॥ अम स्यो नी स
 कं स्य लो क नि र्वा ता स
 दृष्ट्या ददामि॥ नमः॥
 लंजा नमः॥ ॐ वा य वा या
 दिवी तथ अम ना ह व

दातय॥ धिवा सूर्या म्
 सा अरि धि यो॥ ॐ य
 धर्म लो मय सि न सी दि
 लाजा संमार्जनी मृष्टी
 त्वा संमार्जनी नमः वि स
 मूरु नमः॥ ॐ श्री १० भा कि
 वि ति म नु ग॥ ॐ श्री १०
 न नि व र्ग कि क ल म
 य संमार्जनी नमः॥ वा
 दि लंजा च॥ नमः॥
 नमः॥ ॐ नमः
 १० मः॥ वा य च ति म नु
 लंजा नमः॥ ॐ नमः
 नि ॥ नमः॥ वि वि १॥

ततः १० मि व र्ग कि क ल
 मः॥ दि न लंजा क र्ग
 च ति म नु ग॥ ॐ
 १० मः॥ गं न य म न
 ॥ ॐ मि ता सि त स वि
 त॥ ततः १० मि व र्ग कि क
 लंजा नमः॥ ॐ नमः॥

मनःसुखं ज्ञानसमीपं
गत्वा विद्वत्प्रादि
तः विज्ञायकमात्मनः

[illegible]

॥ धर्माविवेकतावधजाना
 मधिदवता। धर्मावनिस्त्रि
 तानित्यं सर्वविधि विना
 धर्मशालं क मदायसा
 मधर्माकि सदितायन
 मशा। ~~उ~~ क दृजा
 यचयनसमीधुसमा
 मतव। ~~मा~~ वाचहमा
 दद॥ ~~उ~~ ~~व~~ ~~न~~ ~~क~~ ~~म~~ ~~ग~~
~~धु~~ ~~ज~~ ~~अ~~ ~~गो~~ ॥ ० ॥ ~~व~~ ~~लि~~ ~~प~~
~~वो~~ ~~न~~ ~~ध~~ ॥ ~~उ~~ ~~अ~~ ~~ध~~ ~~र~~ ~~ह~~ ~~न~~
 वयादशातकमदादि
 त्यस्यगवलि। सयाष
 तस्य४ कामा स४याधू
 आलेपुयुधराक॥
 कमीनरुयुजागोस
 उत्सवयुविहीमक४॥
 वलिपुदोयुयकुकि
 सद्यो कामानशीधि
 गान॥ तस्मात्सर्वधु
 यत्नेन यतिष्ठाना
 विअ४यत४। पूजनी

या४सदावाच्ये४कर्त्ता
 विद्युत्ययुजिता॥ ~~वृ~~ ~~ति~~
 यमाकायुज नविधि४॥

गत४ ~~वृ~~ ~~ति~~ ~~वा~~ ~~न~~ ~~पू~~ ~~ज~~ ~~नी~~
 न्यासादिबलाद्ये४
 पूजनी॥ ~~उ~~ ~~वृ~~ ~~ति~~ ~~वा~~ ~~न~~ ~~य~~
 २॥ ~~उ~~ ~~व~~ ~~र~~ ~~वृ~~ ~~त्ता~~ ~~य~~ ~~श~~ ~~न~~
 वा ~~न~~ ॥ ~~उ~~ ~~न~~ ~~अ~~ ~~हि~~ ~~यू~~ ~~र~~
 वृद्धानसुविद्युहयसू
 सिवय। आवाहयामिदा
 प्रसिंयुजय। यतिगृ
 प्रता॥ ॥ ~~न~~ ~~त~~ ~~वा~~ ~~न~~ ॥
 उंकाछार्यामननायक
 स्यवसभादावलिभाह
 धन४ ~~म~~ ~~वा~~ ~~य~~ ~~ध~~ ~~न~~ ~~य~~
 वृद्धनवविनयुये४
 लेहविने४ ~~अ~~ ~~ध~~ ~~र~~ ~~गी~~ ~~ति~~
 महामनिषहतिहि४
 सद्योमानास्वलायथा
 दानसदास्मिनायिवव
 ४४ ~~वृ~~ ~~त्ता~~ ~~वा~~ ~~न~~ ~~व~~ ~~य~~ ॥

पुनश्च नायकान् ननु यन्
महात्मनः ॥ ॐ ॐ दैविषु
॥ ॐ गत्वा यामीत्यर्थः
कदा ॥ यथियेन मं ॥ ॐ
स्यानयुधिविन ॥ ॐ यि
वीर्यवर्त ॥ ॐ वटवृक्षा
यनमं ॥ ॐ वृक्षशुद्धि
जननी लयीवा विलो
हिताम्यो ० सहयथा
जनवधत्वा निगमसि
॥ समंगलक्षणा यनमं
॥ ॐ द्वात्रिंशद्वी ॥ ॐ
निगमं ० ॥ ॐ व
त्वा विगमं ॥ ॐ वीज
हमं ॥ ॐ नमं ॥ ॐ
गायत्वा मं नाना तथ
स्वनमि विस्वीयं ०
हं ता इत्या ॥ ॐ यिवा म
वृक्षविक्रमत्वं मिथु
यिवात्वा नाली सा द
या म्यादि त्या डयत्वं
हं ० ॐ वृक्ष ॥ ॐ यिवा
नमं ॥ ॐ यिवा ॥ ॐ

नमः ॥ ॐ यतर्था ॥ ॐ
ॐ यतर्था ॥ ॐ यतर्था
वा यिती सा डययिनि
मदगृह्णन्त्येव्या
को नाना यथयुद्धं
जमवर्णनं ० ॐ कोकि
लाना दनम्या ॥ ॐ म
द्विमीर्गुणत्वा वृक्ष
नवर्णनं वानवृक्षस्य
गानवर्णनं विलो विलो
धुलाना वृक्षमिदं वि
हं यतर्था यनमा ॥ ॐ
ॐ ॐ यतर्था ॥ ॐ द
मा सननं मं ॥ ॐ यि
नमं ॥ ॐ यि ॥ ॐ य
द्वापनं जया दवान
कववर्णनं ० ॐ यि
वृक्षवर्णनं ० ॐ यि
ॐ यतर्था वृक्षवर्णनं
जया यथैव नयुधं नम
वेद ॥ ॐ यतर्था मं नड
नयतर्था यिवा यिवा वि

यस्य वृहभा विद्यायाम् ॥
 विष्णोदाधवयुना वि
 दकथिना ह्रीदवस्यस
 विष्णुयत्रिष्टुति ॥ स्वाहा
 ॥ सा ॥ ॐ ह्रीं गवधु
 वधुव्रीहकवकुलि
 लावन ॥ संवदं संवदा
 नात्राजयादवनभा
 युग ॥ ॐ विजया
 य ॐ दंसासननम ॥
 युयेनम ॥ ॐ नम ॥
 ॐ विजयादमवधु
 रुगकि वकोलात्म
 दा। एकवकाउसंस्तु
 श्रविजय ॥ सिद्धिदाय
 क ॥ विजयाय ध्यान
 यष्टानम ॥ ॐ ॥
 ॐ दं विष्णु ॥ ॐ ॥
 ॐ एकवकोउसंस्तु
 यीतवधुवधुवधुवधु
 वीर्लकावधुवधुवधु
 जयस्तनमासा ॥ ॐ ॥
 ॐ मुग्धदा ध्यायमास

धी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 मीय ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 वधुवधुवधुवधुवधु
 रुगुगानन। नलिस्तु
 दारु ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 नम ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 धुवधुवधुवधुवधु
 संकेवधुवधुवधुवधु
 रुयकधुवधुवधुवधु
 युगयति ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 कवाजाया ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 कतादयहयोवधुवधु
 कवधुवधुवधुवधु
 उवधुवधुवधुवधु
 युगनमासा ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 रुधुवधुवधुवधुवधु
 उवधुवधुवधुवधु
 यतिधुवधुवधुवधु
 ॐ मवधुवधुवधुवधु
 ॐ मवधुवधुवधुवधु
 ॐ उवधुवधुवधुवधु

संगमचनदीनां। विथा
 विथा अजायत॥ ॐ न
 मः अनेनमः॥ ॐ अम
 नायेनमः॥ ॐ ॐ म
 भगं॥ ग॥ ॥ ॐ को व
 समुद्रानेनमः॥ ॐ की व
 समुद्रायनमः॥ ॐ सु
 मुद्रादुमिमधुमा ३
 उदाहृत्या ७ धुना
 समुद्रात्त्वमानद। धु
 तस्य नाममुद्रयदकि
 जिद्रादवा नासमृत
 स्यनारि॥ ॥ ॐ सा
 मायनमः॥ ॥ ॐ
 शुक्रास्वनामृतधनं द
 भुक्तमरुषर्षि। वा
 (लोमदाधुनध्यायका
 नाधिधमरुसदा॥ ॐ
 ७॥ ॐ ॐ मन्दवा॥ ॥
 ७॥ ॐ हिममर्षमृष्ट
 नारुकागयष्टानिरु
 निव। गमक्यनारि
 गीरुसदाभक्ति

ययच्छु॥ ॥ ॐ अमना
 अनमः॥ ॥ ॐ अमना
 ॐ अमना ॥ ॐ अमना
 दममः॥ ॐ अमना
 नं वमना ॥ ॐ अमना
 मृष्ट॥ ॐ अमना
 द्वा॥ ॐ अमना
 कानिमुकावंगकि
 मुष्टयदा॥ नमामि
 धवलीसुनं अमना
 धानवृथका॥ ॥ अमना
 कानिमुकावंगकि
 ॐ अमना ॥ ॐ अमना
 अमना ॥ ॐ अमना
 यद॥ ॐ अमना
 दाध्यायदा ॥ ॐ अमना
 गमिद॥ ॐ अमना
 क्ववा निमयदय
 वावसमिस्तुना
 गमयति कालास
 गयसमनवतयुन
 ॥ ॐ अमना ॥ ॐ अमना

Y

[illegible]

नवनिर्गोव वरुहका न
 जासन। सर्वथका विधा
 दवतस्मिन् न्यायनन
 म॥ चन्दनी दिव्य धू
 यदीयने वरुनम॥ न
 म॥ **म॥ नवनि** ॥ उं सुय
 निष्कारवाय नम॥ उं
 यनर्थ॥ सविदु॥
 यजमानस्यामुकयति
 द्ययका वरुथविधावा
 वन॥ यावत्सुवदि॥
 नदा कुरु ३ नम
 ॥ **म॥ नवनि** ॥ उं
 मनीदति ॥ **म॥ नवनि** ॥
 उं म॥ वीथामहाका
 यउदयकि म॥ नि
 विविटथाय नम॥
 निसर्वदवनमस्तु॥
 उं उदिता वरुथयवृ
 द्यग्रहविद्यानिवाव
 यममसुयवृजामल
 कतृहोता नवना
 निर्यनकाका रुवा॥ अ

उगंधादि॥ **म॥ नवनि** ॥
 वनविधि॥

म॥ नवनि ॥ **म॥ नवनि** ॥
 न्यासाद्यजावृजामल
 किदावायनम॥ उं उ
 दसवृत्ताय नम॥ अ
 वारुन॥ उं उदिदकदा
 वरुका विद्युहासिदिह
 नव॥ आवाहया सिदा
 नस्मिन्पूजयवनिगृ
 कता॥ **म॥ नवनि** ॥ उं कृजं
 म॥ नवनि ॥ विहंगमगला
 हंगवती सीसिताः हं
 मनीतिनदो कलनिवि
 वनशीवृद्धदवालथा
 आभादा सुवथामना
 हवधनायथा कलारु
 सदाधीमानं हिदण
 गलरिवसितं ध्याय
 त्पदादुक्ति ॥ **म॥ नवनि** ॥
 उं उदविष्णु॥ अर्युक्त

[illegible]

चनं। ॐ कृष्ण गदा चक्र
यद्गच्छन्नेति मदनं॥ वद
ॐ ॐ नो वती धन
मती हिरण्य ॐ सुखं य
वसनी मन वद स
। वृत्त लाना दसी विवृ
वगदा धरु वृथिवी म
लिता मयूख ॐ स्वाहा॥
लो ॐ ॐ अतसी यथ
संकाशं ललक र्त्त नूय ॐ
रिगं॥ विद्यु सव विना
ॐ य वलु मूर्ति नभा मु
ग ॐ ॐ व वलु यन म॥
ॐ ॐ ॐ य वलु नक
वकु चरु वलु वलु कसं
लितां। त्वम रुट कवा व
ॐ ॐ नूति द्विष्ट मदनं॥
वद ॐ ॐ व वरु गोद व
षाद्या यतं यात्री यत म
द्वनं कल्य यती उ द्वय
हून यतां मा जिक वत म
स्व ॐ ॐ मा मदन दवी

ॐ उद्भवस्व ॥ १॥ ॐ
 कमलोदलस्य काशीयागधाम
 धामनमस्तु विना नमस्तु
 नामितं वदं नृदिनीन
 ननं ॥ ॐ उद्भवस्व
 अनमस्तु ॥ धामना ॥ ॐ उद्भव
 वीरं वदं नृदिनीन
 धुक्मधुर्ल ॥ यीतामन
 धनं ददं नृदिनीन
 नय ॥ ॐ उद्भवस्व
 अशास्त्र ॥ ॐ उद्भवस्व
 ननगन्धर्वजितं याद
 यं कर्ज ॥ आनाध्यामिवा
 नागं नृदिनीन
 ति ॥ ॐ धामना ॥ अनमस्तु
 धामना ॥ ॐ धीनवत्सु
 महातजायस्कं वदं
 स्कं ॥ सर्वगन्धर्वजितं
 नृदिनीन ॥ समुनिभवा
 ॥ वद ॥ ॐ धामना ॥
 ॥ ॐ उद्भवस्व
 वदं नृदिनीन

स्मिन् ॥ धामना ॥ ॐ
 धामना ॥ ॐ
 ॐ उद्भवस्व
 कवत्तु नृदिनीन
 धुमस्त्रिका ॥ ॐ
 मित्रिक ॥ ॐ
 गीवान्ध्याना ॥ ॐ
 ॐ उद्भवस्व
 नः वायुवत्तु नृदिनीन
 ॥ स्मिन् ॥ ॐ
 नमस्तु ॥ ॐ
 नमस्तु ॥ ॐ
 धामना ॥ ॐ
 नमस्तु ॥ ॐ
 लक्ष्मी ॥ ॐ
 ॐ उद्भवस्व
 विष्णु ॥ ॐ
 वं यथा ॥ ॐ
 नृदिनीन ॥ ॐ
 दक्ष ॥ ॐ
 माधव ॥ ॐ

भूय स्वा॥ॐ॥ मया यन
 म॥ॐ॥ गन्धवा॥ सव
 या यनम॥ॐ॥ मा नृज
 य॥ दत्ता यनम॥ॐ॥ का
 पुमका पुम॥ वक्रा य
 नम॥ॐ॥ त्वज विंदा॥ य
 वत्त यो गायनम॥ॐ॥
 वक्रा हने॥ यल्ल वा
 यनम॥ॐ॥ अष्टमूय
 नात्मा॥ यष्टुनी कक्षजा
 यनम॥ॐ॥ अष्टा कवि
 मिन्द॥०॥ॐ॥ यमो यद
 पुहका यथ ता विद्यम
 यनम॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ क
 तात्तं महिषा नृदं दनु
 हका हयानका काल
 यामध्वन कालक्ष अद
 क्षिण दिव्य गि॥ॐ॥
 ॐ॥ यम नदत्त॥ मा॥ॐ॥
 ॐ॥ दनु हका यम नद वंध
 मा॥ॐ॥ मह वल नव
 आवाह यिष्या मिधम

नाजतमा युक्त॥०॥ वन्दनादि
 यष्टुयदी हल नीवर्थ॥ॐ॥
 कालवलि॥ॐ॥ सुवर्ति सा रुवाय
 नम॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ यथा॥ ज॥ॐ॥ मान
 स्याम कष्टुति सा यज्ञानमूयनि
 दाना च नैव॥ यावदक्षिण दि
 र्ग॥ॐ॥ त्रिदिक् नृदं रतम॥ॐ॥
 हा॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ मनाक्षिणि॥
 जावला॥ॐ॥ मनाक्षिणि॥
 हाका मरिनाक्षनममयुक्त
 म॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ नित्यं गन्धमा
 दना॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 कृत्य वृत्त ग्रह तिघ्रा निवाय
 समस्त यष्टुजा समस्त क
 मृत् हाता नृदं नाज नित्य
 नक्षका रुवा॥ अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 ॥ॐ॥ तिदिक् तिघ्रा नाज नित्य
 वि॥०॥

ता॥ॐ॥ अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 सुजला॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥
 अ॥ॐ॥ अ॥ॐ॥

ॐ विष्णुविधं सदा तवा
 वाहयामि दानं नमः ॥
 धर्मिष्ठं दत्तं ॥ ॐ
 ध्यायन्तं कदापि तां
 त्वदिशं वक्तुं चलायं
 महज्जालादुत्तमं वदि
 श्वसकलादुत्तमं मानं
 सदायावात्मनि गच्छ
 समस्तमगच्छावदुत्तमं
 तालयानां नानावह
 तं अकज्जालीलासि
 नावद्विमं ॥ ॐ ॐ
 दीविष्णु ॥ ॐ ॐ
 तत्वायामि ॥ ॐ धृतिवी
 नमः ॥ ॐ स्यान्ना धृतिवी
 ॥ ॐ अष्टकवृत्ताय नमः
 मः ॥ ॐ अष्टकवृत्ताय नमः
 नमः ॥ ॐ कल्याणदाय नमः
 नमः ॥ ॐ दानाय नमः
 ॥ ॐ दानाय नमः
 मः ॥ ॐ दानाय नमः
 ॥ ॐ दानाय नमः

ॐ ह्यनाना ॥ ॐ यथा
 नमः ॥ ॐ यथा ॥ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 लनिविदवाविसी ॥ ॐ
 एकः ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 लयनानं ॐ ॐ ॐ ॐ
 यनिविदवाविसी ॐ ॐ
 दानवगलेति ॐ ॐ ॐ
 नानावाक्यमि ॐ ॐ ॐ
 सकलं अस्तु ॐ ॐ ॐ
 ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 अस्तु ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 कल्याणाय नमः ॐ ॐ
 क्रिययाय नमः ॐ ॐ
 अस्तु ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 मया विद्वानि विमनजा
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 नमः ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

।सर्वधामिकनंदवंधातानं
 वनमाशुभं ॥ ॐ विधा
 ननमः ॥ ॐ कर्मलो
 सनयुक्ता कर्मजसुग
 दारुयः ॥ विधाता कर्मज
 रथ सागमराय वरुयुष्टिपदाय
 कर्मावतार ॥ ॐ विधाता विष्णु
 उवाच ॥ यथा मया वा वि
 ष्णुर्लोकं न संनिष्ठाऽपराहिरु
 सो वसुना यथा स्वयं वृद्ध
 क्षिप्रं धाम सद्यः विष्णुव
 त्वा ॥ ॐ कर्मलो स
 नसुखो सीतं वरुणं संधि
 जारुयः ॥ कर्मलो वरुणं
 वविधानं नमः ॥ ॐ
 सामवदाय नमः ॥ ॐ
 ॐ वालसूर्यवरुणसामं य
 धिमं वरुणं वरुणं ॥ ॐ
 कर्मलो वरुणं ॥ ॐ
 आदिता ॥ ॐ सदा रुय
 यदाता न वरुणं विष्णु
 ह ॥ यधिमं कर्मलं वरुणं

ॐ
 मवदत माशुभं ॥ ॐ
 यनयमयनमः ॥ ॐ
 ॐ हनिदुर्गुहयसुवकुजा
 विगतकामं कर्मलो
 रुयाया विः चित्तं यदाय
 न विष्णु ॥ ॐ दामा जना जा
 या ॥ ॐ कर्मलो
 हनिदुर्गुहयसुवकुजा
 रं नमः ॥ ॐ वरुणं
 कर्मलो वरुणं ॥ ॐ
 नलो काय नमः ॥ ॐ
 लो काय नमः ॥ ॐ
 जाय विष्णु नमः ॥ ॐ
 मादनाय नमः ॥ ॐ
 यतानमः ॥ ॐ
 विष्णु ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ
 ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ
 मः ॥ ॐ

दादंदिदलिनं कमवुलं व
 उवाकं धी अरुहं नद
 न॥ **अ॥** ॐ गं दी अना
 खविधरता॥ **स॥** ॐ
 गं दी न स दृष्टि वं धुक्
 वधुहनीयकं ॐ द्यानी
 धमधम सुनु नी मिनिधं
 वरागवीं गनी अनायन
 म॥ **अ॥** ॐ ॐ द्यानी
 निराका नं धूलं वनधन
 द्वनी दृष्टासन सदा धी अ
 लु यं यं मं द्य ग्रह॥ **अ॥**
 ॐ गं दी द्यानी॥ **स॥** ॐ
 ॐ अदसी दृष्टा सं का द्यानी
 स्तनी नद न विरुं काल
 जेय विमलं वरान्त सामिग
 नं धनं॥ ॐ विरुं यध
 यन म॥ **अ॥** ॐ धी ल
 लु कल स रं ग ४ कं कं मा
 रु ४ कं न द्य सी ग द्य रु यं क
 नं धी अ द्या द्या ४ विरुं
 य ४ ४ द्या ४ ॐ नृ क सां ता
 ४ म सि ४ ४ ४ ॐ द्या ल
 स्तु ज न म सु र्य लं का ना स

नमा सुता ना क सा धि धनं थं
 तिदं व नं म सु सु वि री यं
 ॥ ॐ द्या य न म ४ ४ न॥
 ॐ धनं वी ल कं धी अ थ्यी
 न ४ ४ म म द्या ति ४ सा न
 द्या ज कला द्या न अ य द्या
 गा क व ४ स द्या ॥ **अ॥** ॐ द्या
 जाय त न ४ ४ ४ ४ ॐ
 न ४ ४ धनं म सु र्य सा न द्या
 ज कला द्या न ४ का न थ्यी नि
 धय ४ ४ द्या य व न मा ल
 न॥ ॥ ॐ गं द्या य न म
 ४ ॐ गं द्या नां ता ॥ ॐ स
 न सु र्य न म ४ ॐ द्या व का
 न॥ ॐ म द्या ल द्या न म ४
 ॐ धी अ म ल द्या ४ ॐ क
 धि ला य न म ४ ॐ उ नृ वि
 धी वि क म सा नृ क या य
 न सु धि द्या न द्या न
 धि व य य य क म ति ति न सा
 ४ ॥ ४ म म य य न म ४ ॐ
 न द्या नां ॥ स धी य य न म
 ४ ॐ कं मा नृ द्या म ॥ द्या

य नमः ॥ ॐ कां तु ग का तु
 गा न का ये नमः ॥ ॐ व
 जे वि र द्या ॥ ॐ य व स
 गा य नमः ॥ ॐ व ग ह
 नी य ल वा य नमः ॥ ॐ
 अ ध्व म य नमः ॥ स क क
 धु ध जा य नमः ॥ ॐ अ
 सा क मि ल ॥ ॥ ॐ व
 नू म य या ग ह स य ज
 ला धि प ग य नमः ॥ ॐ
 ना ॥ ॐ ना ग या म ध न
 ह स न ता य य नि वि य
 हां ग म क ध व लं ध म य
 ध नू र्ण म क ना स न ॥
 व द ॥ ॐ ॐ म म नू र्ण
 अ र धी र व ॥ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ग कि या ग ध ना नि र य
 म क न स म ह व ल ॥
 नि म म ॥ ॐ क नू य य न
 मा सु व नू र्ण य न ॥ ॥
 व द ना दि य म धू य दी
 य न व र्ज नमः ॥ ॐ ना
 न व ति ॥ ॐ स ॐ मि र

वा य नमः ॥ ॐ य न वं ॥
 ॐ य ज मा न स्या म क य ति
 ह य ल व र य नि द्वा ना स
 ग या व ल य मि म दि ग म न
 का क न २ क ३ नमः ॥ स्वा हा
 ॥ य ति ॥ ॐ म म ह ति ॥
 दान चु ति ॥ ॐ म ह वी थ
 म ल का य स व धु स ह ग य
 ति ॥ ॐ य दान चि त्तां गे ल
 ह म क स ॥ म र न ॥ ॥
 ॐ अ हि मा न ॥ य क व
 क य ह वि द्वा नि वा न य
 । स म स य क मृ जा स म
 लं द न गृ हा द ना व द
 ना ज नि र्थ न क का र
 वा ॥ अ ग न्ध दि ॥ ॐ मि
 य मि म दाना य व नि मि ॥

ॐ ॐ ॐ न दान न दाना
 सा नि य तां गे ना य मृ जा
 ॥ ॐ ॐ न दान वा य नमः
 ॥ ॐ ॐ न दान वा य नमः

॥ आवाहन ॥ ॐ अहि वा
 क न दान सु अरु नि वि
 धु सिद्धि आवा ह्या मि
 द्वा न सि न यु ज य धे मि तु
 ॥ श्री गं ॥ ॐ श्री मा
 न श्रु न डि ना जा हि म क
 न क री धे जा ना गु न न
 द द द म म ना ॥ ४ सु म
 नू ॥ ना ना य ह्ना ग ध ना
 वि न सा नि त्य स सु न ह
 मि थु ज न वि धि व न रु
 न ज ॥ ॥ ६ ॥ ॥ य म नू ध्य ॥
 व द ॥ ॐ द वी द्वा न ॥ ॥
 ० स द्वा ट वी ध म म य न
 व द्वा य ॥ आ न त्म न न
 न ल क को र न द का म ॥
 क मा न ल च मी व ता य ध
 ० न न ल क को र न द
 का म ॥ अ थु द ॥ ॥ ॥
 वा ये मि ॥ वृ थि वी न म ॥
 ॐ स्या ता वृ थि वी ॥ वृ थि वृ
 का य न म ॥ ॐ थ वृ क

वृ थि वृ ॥ ॥ ॥ ॥
 ना य न म ॥ ॐ द्वा ना द वी
 ॥ आ ना य ना न ध य न म
 ॥ ॐ व र्णा नि धी म ॥ व व
 रु न थ्या न म ॥ ॐ द्वा य
 वी ॥ य थ थ्या न म ॥ ॐ
 अ म थ थ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ श्री गे ल न्दु स म नू ना
 मा हि म न्द त्म वृ मि द्वा ल
 थ ना ना वृ क स मा क्ता
 नि क न क न्ता स दा स
 वृ न श ना र्थि म न ना ह
 न ध नि व य थ्ना वृ ॥ ॥ ॥
 ० रु टि का ॥ ॥ ॥ ॥
 त ना ज ना म गि व सा व न्द
 स दा रु कि ना ॥ ० ॥ ॐ वि
 वृ थि ना य न म ॥ ॥ ॥
 ॥ ॐ न का थ्ना म व न्द
 ० वि वृ थि ना क स मि न
 ग दा वृ क सि र्थि वृ
 ० क सि दि रु ल वृ
 ॥ ॥ ॐ थ ना दि म्म
 व न्द न वी थ ल म्म

म न्द वृ थि वृ
 न म्म

30
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cms.

धृतराष्ट्र

[illegible]

[illegible][illegible]

तत्रैवमार्क (पुत्राचवेनम
 ४१ॐ गणपतयनमः ॥ ॐ
 नमोऽस्तुते ॥ सवस्वये
 नमः ॥ ॐ यावकात ॥ महा
 लक्ष्मी नमः ॥ ॐ यीश्वर
 लेखी ॥ ॐ नवसिंहवन
 मः ॥ ॐ विष्णु नवाटमसि
 ॥ ॐ मया यनमः ॥ ॐ न
 च्छेदावी ॥ सवथायनमः
 ॥ ॐ ॐ माझे नूय ॥ दूवी
 यनमः ॥ ॐ काधुयैता ॥
 वकायनमः ॥ ॐ त्वं वि
 द्यादा ॥ यं वसुजायनमः
 ॥ ॐ वद्वारुणी ॥ धल्लवा
 यनमः ॥ ॐ अष्टसूयवा
 ॥ ॐ ॐ समस्तधजाय
 नमः ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥
 ॥ ॐ कृष्णवायवदाह
 सायधनाधिवतयनमः
 ॥ ॐ ॐ कृष्णवन्दयमा
 नूटं सर्वगत्त्वविग्रह

। धूर्वरुद्रविष्णुतादिसर्व
 सर्वविदायकां वद ॥ ॐ
 कृषिदंगयवत ॥ तां ॥ ४॥
 ॐ सर्वतन्त्रम (धु ॥ ४
 सामाजावृद्धिगः
 ॥ ॐ कृष्णवन्दयमाहक
 कृष्णसामात्मजनमः ॥
 चन्दनादिष्वध्वयदीय
 नेवर्द्धनमः ॥ ॥ तां ॥
 नवसि ॥ ॐ सूर्यनिष्कारवा
 यनमः ॥ ॐ अथार्थथा ॥
 यजमानस्यामूक्यति
 शायलावर्तयविद्वाना
 ज्ञेययावदूक्तवदिष्ण
 वदांकुर्वन् ॥ ॐ नमः
 स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ म
 नोदति ॥ द्वावभुति ॥ ॐ
 महावीर्यमहाकार्येषु
 द्वाष्टिकसन्ति ॥ ॥ ॐ द्वा
 नक्षिणं ॥ ॐ लं हिमवत
 सु ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ नहिमा

30
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cms.

20 15 10 5

[illegible]

म॥ॐ वावका न॥ लम्बो
नम॥ॐ श्री गणेशाय नमः
॥ गममयाय नमः ॥ॐ गं
भद्रायां ॥ॐ सधवाय नमः
म॥ॐ ॐ मानुषाय ॥ॐ
इन्द्राय नमः ॥ॐ काष्ठाय
॥ वक्राय नमः ॥ॐ त्रिंश
विंशाय ॥ॐ शत्रुघ्नाय
नमः ॥ॐ वक्राय नमः ॥ॐ
लवाय नमः ॥ॐ अश्व
सूत्राय नमः ॥ॐ कर्म
जाय नमः ॥ॐ अश्व
मिन्द ॥ॐ अश्व
किह साय नमः ॥ॐ
॥ॐ सकाद्विंशाय नमः
गमकमालाकमण्डलं
। दालमालाकलं वक्रं
किह संवृत्तं सनं ॥ॐ
ॐ अश्विमुखा ॥ॐ ॥
ॐ गीतमजमयं वक्रं
वर्णमहायुतिं च नमः

नमो किं हस्तमनिबन्धन
 भासुति ॥ वन्द्यतादिषु
 पक्षीयहस्तनेवद्यन्तम
 भावलि ॥ प्रजिष्ठा ॥ ॐ
 मनाद्राति ॥ **वनस्पति** ॥
 ॐ नन्दयक्तगवनकदी
 यंसर्वविद्वद्विनिवा
 तितयां दानाविद्वद
 स्मिन् ॐ नृपुत्रिकं
 उतासर्वसुदिनसेवा
 अरुगधादि ॥ ॐ स्वा
 मेयदावाच्यविधिः ॥

तमानेष्टवदा **नात्र**
 ॥ न्यासादिषु वदत्त
 त्वा ॥ ॐ नृपुत्रदानाय
 नमः ॥ ॐ नृपुत्रदानाय
 नमः ॥ अथ कर्त्तव्यं ॥ ॐ
 त्वायामि ॥ ॐ प्रथि
 वीनमः ॥ ॐ स्वा ॥ नाष्ट
 यिवी ॥ ॐ यात्येयानेनम

॥ ॐ अथ यथा ॥ ॐ का
 लिदावायनमः ॥ ॐ द्वा
 नादेवी ॥ ॐ भावलय
 नमः ॥ ॐ वत्ताविष्टं
 ॥ गलदायनमः ॥ ॐ
 गलनात्वा ॥ ॐ सवस्त्यो
 नमः ॥ ॐ वावकात ॥ ॐ स
 दालक्ष्मीनमः ॥ ॐ श्रीयश
 लक्ष्मी ॥ ॐ गममाय
 नमः ॥ ॐ गलदावा ॥ स
 ययामनमः ॥ ॐ ॐ मां नृ
 दाय ॥ द्वायनमः ॥ ॐ
 काधुता ॥ नदायनमः
 ॥ ॐ नृपुत्रदानाय ॥ यत्र
 सुगायनमः ॥ ॐ नदाह
 ने ॥ यत्तवायनमः ॥ ॐ
 अष्टमयना ॥ ॥ वाम
 नक्षत्रायनमः ॥ ॐ अस्मा
 कमिदु ॥ ॐ नृपुत्राय
 यत्तवायनमः ॥ ॐ नदा
 धियतयनमः ॥ **ध्यान** ॥

30
 25
 20
 15
 10
 5
 O cms.

20 15 10 5

काहंतं॥ यत्तु वा यत्तु नम
॥ॐ अम्बुसूयभा॥ ॥
सर्वभूतध्यायनमः॥
ॐ अस्माकमिदं॥ ॐ
वायवायध्वजहस्तय
यवनाधियगयनमः
॥ॐ॥ ॐ अयोनिह
विलङ्घ्याविलालक्ष
जधामिर्ल। यालेहगत्र
हगताहविलसंसमी
नर्ल॥ ॐ॥ ॐ अदवाय
वृहस्पतं॥ ॐ॥ ॐ
सर्वयाधधियवस
वृक्षवायुदवगाध्वज
हस्तमहायाक्षवायु
वदेतानमामुत। च
दनादिवृष्टधूयदीप
हलनेयद्यंतमः॥ ॐ
लिखदानं॥ यगिष्टा॥ ॐ
सनाहति॥ दानवुगि
॥ॐ अयंचयहंतवगि

॥ अगस्त्यादि॥ ॐ॥ ॐ॥
मयुजावाचनविधिः॥

ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
नासादिधूववत्क
त्वा॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
यनमः॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
वृक्षायनमः॥ ॐ॥ ॐ॥
दक्ष॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
॥ वृथिवीनमः॥ ॐ॥ ॐ॥
नावृथिवी॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
नमः॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
ॐ॥ वृद्धिद्वारायनमः॥
ॐ॥ दवायवी॥ ॐ॥ ॐ॥
यनमः॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥
मा॥ गलयायनमः॥
गधनात्वा॥ सनसंस्थ
नमः॥ ॐ॥ यात्रकान
॥ लक्ष्मीनमः॥ ॐ॥ ॐ॥
त॥ ॐ॥ ममथायनमः॥
ॐ॥ गधवात्री॥ सनया

यनम॥ ॐ ॐ मां नृदाय
 ॥ इवायनम॥ ॐ को अ
 न॥ नृदायनम॥ ॐ नृ
 जे विष्टदा॥ यनम॥ ॐ
 नम॥ ॐ नृदायनम॥ ॐ
 लवायनम॥ ॐ अष्ट
 स्तयत्रा॥ ॐ सुवति
 दधजायनम॥ ॐ अ
 साकमिन्द॥ ॥ ॐ ॐ
 नाय विष्टलरुसय
 सर्वदवा विष्टनयनम
 ॥ ॐ ॐ ॐ नृ
 अरु नृद विष्टलवा
 लवा विष्ट॥ ॐ नृद
 वमा नृद विष्टमाली
 सिला चना॥ यनम॥ ॐ
 नमी नृद॥ ॐ ॐ ॐ
 सर्वदवा विष्टदव
 नम॥ ॐ विष्टदव
 लरुसा मरुदव
 नायनम॥ ॐ ॐ ॐ

नादिष्टयष्टदी नरुलने
 वद्यनम॥ वलिष्टदान
 ॥ ॐ ॐ ॐ मनादीति॥
 दानम॥ ॐ अष्टयष्ट
 नृदव नृदवायमिति॥
 अष्टगत्वादि॥ ॐ ॐ ॐ
 दानम॥ ॐ ॐ ॐ

नम॥ ॐ ॐ ॐ नृ
 सादिकेष्टनृदवायन
 म॥ ॐ अष्टदव॥ ॐ नृद
 यामि॥ यष्टिष्टनम॥
 ॐ ॐ ॐ नृदवाय
 नम॥ ॐ ॐ ॐ यष्टि
 ॐ ॐ ॐ यष्टिष्टनम
 ॐ ॐ ॐ दवायनम
 ॐ ॐ ॐ नृदवायनम
 ॐ ॐ ॐ नृदवायनम
 ॐ ॐ ॐ नृदवायनम
 ॐ ॐ ॐ नृदवायनम
 ॐ ॐ ॐ नृदवायनम

श्रीधर्मलक्ष्मी॥ (मम
 यायनम॥ ॐ गन्तुं दानं
 ममयायनम॥ ॐ
 मां दानम॥ दत्ताय न
 म॥ ॐ काष्ठाय नमः
 येन म॥ ॐ त्वदिष्टदा
 ॥ यत्र स्याय नम॥ ॐ
 वक्राहणीयं वाय
 नम॥ ॐ अथ स्या
 (म॥ ॐ दानं दानं
 म॥ ॐ अस्माकमिष्टं
 ॥ ॐ विष्णुं वक्राहसाय
 यागालो विषयं नमः
 ॥ अथ ॥ अनन्तं यत्
 प्रोक्तं कुरुते दानं
 अतः ॥ विष्णुं दानं यति
 कोर्गं कुरुमी नृपं यत्
 यत् ॥ अथ ॥ ॐ विष्णुं
 दानं ॥ अथ ॥ यत् नमः
 यति नृपं मननं नाम
 विष्णुं दानं यत् नमः

गतिं मनकाय नमः
 ॐ ग॥ चतुर्मासि यत्
 धूपदीपकं लभेत् तं
 म॥ वलि ॥ अथ ॥ विष्णुं
 ॐ मना दानं ॥ दानं
 अथ ॥ ॐ अथ यत्
 तव प्रदत्तं यत् स्यात्
 दत्तं विनियोगं यत्
 ना विद्वत्सि तं ॐ दानं
 किं नृपं कुरुते दानं
 स्यात् ॥ अथ गन्तुं दानं
 विष्णुं दानं यत् नमः

गन्तुं दानं यत् नमः
 सायिकं यत् नमः ॐ
 ॐ दानं यत् नमः ॐ
 वक्राहसाय नमः ॥ अथ
 दानं ॥ ॐ दानं यत् नमः
 यत् यत् नमः ॐ दानं
 नाय विष्णुं ॥ यत् यत्
 नमः ॐ यत् नमः

आरदकौ धादशकर्म
 लो॥ वद॥ उं वदयस्तु न
 ॥ सोम॥ उं वदयानिधु
 रुमूक्तिमुक्तिस्तु ननिवा
 सितं॥ सृष्टिकर्तास्तु ननि
 र्वाप्तं॥ वदस्तु ननिवा
 वदनादिधूयदीवनेव
 र्त्तनम॥ वदस्तु ननिवा
 तिष्ठ॥ उं वदस्तु ननिवा
 नस्तुति॥ अयंचवस्तु ननिवा
 वददीयंमिति॥ अयंच
 वदि॥ ॐ वदस्तु ननिवा
 विधि॥ ॥

गंगा वायु प्रदोष नृप
 कर्म लोभ विमर्श नृप
 दूषणं ॥ ॐ गद्य गद्य नम
 ध्याना ॥ ॐ कवकु महा
 कायं धीग्वलु महाभूति
 गजवकु महाकायं वीर
 ध्यायद वगवधियां ॥ वद

ॐ ग नो धी त्वा ॥ सा गु ॥
 ॐ ग ऊ व क म हा वी नं म
 ल भा द क या नि नी । सु त
 वि धु वि ता ण म य नं म ध
 उ न मा यु ता ॥ अ न गं धा
 दि ॥ ॐ गि न न य नि क ल
 म धु वि वि ॥ ० ॥

त त ॐ ग न न य वि वि त
 उ क न य नु उ नु क र
 म धु ज न ॥ ॐ ग न व न म
 ॥ ॐ ग न ॥ ॐ क क म व धु
 स न्द्र ग म दि मा ल ॥ स य
 स र्वा ॥ ॐ ग न दि ग मा
 स्का य नु न म कि र्वा य
 त ॥ ॐ ग न ॥ ॐ व ह स य नु
 गि ॥ ॐ ग न ॥ ॐ द वी ना
 व स र्वा म धी ना ध र न द
 द य ॥ ॐ ग न म कि न म स र्वा
 स र्वा म धु वि म न द ॥ अ
 न ग म धा दि ॥ ॐ गि नु नु क

लगावृत्तविधिः॥

त त ॐ ग न न य वि वि त
 व धि न न य नि नी क ल ग ॥ ॐ
 ॥ ॐ गि न न य नि नी क ल ग ॥ ॐ
 वा ह यो ना दि ॥ ॐ गि न न य नि नी क ल ग ॥ ॐ
 ध्व न व नु व स द वी स र्वा
 न द ल स य न ॥ नि मृ ता द
 दि ल स न य नि नी स र्वा
 न म ॥ ॐ ग न ॥ ॐ ग न व द
 ग ॥ ॐ ग न ॥ ॐ ग न ॥ ॐ ग न
 वा पि ली द वी क य ल
 क रि धा नि नी वि धि म
 द क वी व व य नि नी स
 व द न म ॥ अ न ग म धा दि
 ॥ ॐ गि न न य नि नी क ल ग
 वि वि वि ॥ ॥

त त ॐ ग न न य वि वि त
 व धि न न य नि नी क ल ग ॥ ॐ
 ल धु ज न ॥ ॐ ग न ॥ ॐ ग न
 न म ॥ ॐ ग न ॥ ॐ व द न

धिगं कं गं धिगं गं धिगं गं
 वनं । वं गं गं गं गं गं
 धिगं गं गं गं गं गं
 दा ॥ वं नं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं गं
 यवा यवा यवा यवा यवा
 शं सव यव सव सव सव
 द्य यवा लन गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं गं
 गं गं गं गं गं गं

गं गं गं गं गं गं
 कं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 यन गं गं गं गं गं
 सव यव यव यव यव
 लन गं गं गं गं गं
 द्य यवा यवा यवा यवा
 वं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 कं गं गं गं गं गं
 यवा यवा यवा यवा

न कल्य कां ॥ वं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 सव यवा यवा यवा यवा
 यन गं गं गं गं गं
 यवा यवा यवा यवा यवा
 वं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं

गं गं गं गं गं गं
 कं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 यन गं गं गं गं गं
 सव यव यव यव यव
 लन गं गं गं गं गं
 द्य यवा यवा यवा यवा
 वं गं गं गं गं गं
 वं गं गं गं गं गं
 कं गं गं गं गं गं
 यवा यवा यवा यवा

ॐ

[illegible][illegible]

५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३ ककलगाधनि । डिग्नानिकयूहि

[illegible]

गगनचूर्णस्य नमो (१५५)
(मयस्योक्तिः) ॥ ५॥

कलमूर्तयनमसु॥
कलमूर्तयनमसु॥
वंद॥ उं गिवा नामा सि
॥ ॥ गद कि दी ॥ उं नि
डा कलमूर्तयनमसु॥
वंद॥ उं ग वृद्ध वृद्धि
नं॥ ॥ आन॥ उं यति
डा कलमूर्तयनमसु॥
वंद॥ उं स हृ यणी यो॥
०० ति गि या नि क र म्
यै न वि वि ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 लक्ष्मीकृष्णार्चनम् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 देव्यां विभाक्ता सं ग
 ति ॥ वद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुदता ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 देव्यां विभाक्ता सं ग
 ति ॥ वद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुदता ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गगनं तिलाव्यववा
 रिमंतीकुत्वा ॥ थंठि
 लाचैर्ष ॥ उं अयादि
 ॥ सुजाजी ॥ वृथैराज
 नं ॥ न्यासधर ॥ उं आधा
 नक्षकअनूमशु ॥ कुत्वा
 आवाहनं ॥ उं गन्ध

सनायनम॥ ॐ सुवल्गु
सिगनमात्रिकुनिनि
मयुगं वदुवृद्धयन
नयक्षीसामआत्मा
दा०स्यमनि ययै ३०
विनाम। सामगननवा
मयवां यज्ञायक्ति यय
वृद्ध्यासरा० सुवल्गु
सिगवत्सा० ३ दिवं नक्त
स्व० यत॥ ॐ द्वात्रायन
म० ॥ ॐ द्वात्रादवी ॥ ॐ
तात्रा० यनन० ॥ ॐ व
त्वा० भृग० आवाहन॥
ॐ आमिन्दुनि॥ ॐ ग
त्वा० यामि॥ ॐ स्वादि
द्वात्रयुजनी॥ ॐ ग०
नत्वा॥ ॐ वृहस्पति॥
ॐ यात्रवदा० ॥ ॐ
नभावयु॥ ॐ यत्रा
लायजासावनी॥ ॐ

[illegible]

वायतक्ष्णः सुविनया
यतावन्मलमात्रेण वि-
दिता ॥

ॐ क्लीं वृ य प्रि अ नु म
 ॥ व द ॥ ॐ यं ज न ॥ ॐ
 श्री प्र न ॥ ॐ नो वा य न
 य वा नु प्रि अ न न ॥
 व द ॥ ॐ ॐ द वि ष्णु ॥
 ॐ आ वि न ॥ य रं वी जि
 ध म न क सा न न सा न
 न य ॥ न अ प्रि थि ह न
 य व न अ नि लु वि ष्णु
 धे नं त्वा ॐ ॐ वी ल ॥
 ॐ नो व द य क
 न न म ॥ य द ॥ ॐ ॐ
 नो व न ॥ ॐ ॐ नो व
 य द ॥ व द ॥ द म य
 मा य ॥ य य न व न ॥
 अ नि न मृ न ॥ अ र व द
 य रि य द न अ ज न
 य ल य न ॥ ॐ ॐ ॐ

* साक्षिचवचयदिवादे

द ० सदायः प्रकिस्र न
 य ० दिवी व न क न
 न ० म ॥ ॐ जी नि य न
 ॐ दि वा वा नि न ॥ ॐ
 स ह प्र णी य ॥ ॐ
 ध न ॥ ॐ स य र्मु सि
 ॥ ॐ नि य नि य नि य
 म ० न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ
 वृ ह स्वा त कू दि न सि
 था ध न मा म न क ह हि
 न ० ज ॥ सि य ग सा मा म
 न क ह हि य नि ष र्मु वि
 ध ता मा या ग क ॥ ॐ
 ॥ ॐ अ स्मा क मि न्द्र ॥
 न ॥ ॐ धू न सि ॥ ॐ
 यो ॥ ॐ न ज ॥ सि ॥ ॐ
 ॐ म न ॥ द ० नि ॥ ॐ
 न ॥ ॐ ॥ ॐ वा म य
 स ॥ स न स्व नी र म व
 माल म्नी सदा द कि
 ॐ यो ॐ य स ग द

ह्यममं गीतमनमानमः॥
 सहस्रसि निस्वययायभू
 लयातिनेमामुनः॥ अ
 र्गंधादि॥ ॐ नमः
 अरजकलगीतगजिभि

तमातामयलिं नमः
 न॥ ॐ सद्याजागयंदि
 यश्चकु॥ १॥ ॐ नमः
 एवया॥ ॐ मयलिं ग
 निवसर्वरूपयिनी
 वसुधैव कुटुम्बकम्
 मा॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 द॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 व॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 पुनिरुदयं गंगामुदय
 दध्नात्रिणीसर्वमाय
 हवृक्षेववदहंयनम
 निर्व॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 नि॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः

तमातामयलिं नमः
 धर्त॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 वृद्धजा॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 अरजकलगीतगजिभि
 नमः॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 कायश्च ना॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 वृष्टहवाहं सन॥ ॐ नमः
 गंवादिदद्यानामभि
 नार्थविरावयत॥ ॐ नमः
 द॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 ॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 ॐ महानागमकनसू
 महवलेष्टनाधनन
 निवसागसेनितनमा
 नमः॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 निनागपुजा॥

अथयदयकलीपुज
 न॥ ॐ नमः १॥ ॐ नमः
 सहितायेनमः॥ ॐ नमः

50
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cm.

20 15 10 5

ॐ मिथुनिद्वन्द्वद्वन्द्वद्वन्द्व

साय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
 यथापनिस्तिताद
 वीतीलात्यलदलय
 तां। सिंदुवुधद्वहस
 भ्रकातिथीवनकीति
 दां। विद ॥ ॐ यावका
 न॥ साय ॥ ॐ नमः
 यथिथादतीसिंदुवा
 मृजधाविही। लाका
 नीजीवरुतायेनका
 येनकसीयककमिनि
 ॥ ॐ लक्ष्मीः दय्यलह
 साय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
 यथासनस्तितादवीधु
 द्दशुटिकसंनिसा। अक
 दय्यलहसावधनधान्य
 वनयदा॥ वद ॥ ॐ शीघ्रत
 ॥ साय ॥ ॐ नमः रुविरुया
 यथदय्यलयालिनी। अ
 सिनककुवनकाकूवृषद
 निजामिक॥ अगगन्धादि॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥

तान्मूलवत्सलं च मनो नानि
वयं जमानत धर्माच्च य
जमाना धृत्वा ॥ मूलमलं
॥ ॥ जन्मवासा ॥ पुंश
शाल्यलाकया लं य
क्षायविमूत्रादिना वि
द्यानां धर्मसनाथययू
यं वासुगिवाक्या ॥ य
कसं नक्षत्रा ॥ अथ विद्या
नां धर्मसनाथययूयं स
वाहनकायसंनिधा य
गिवाक्या ॥ ॥ ॥ पुंश
हर्षा ॥ यनः कलहद्वयं
आदकं नक्षत्रं ॥ यनः क्लि
नाममनिधायवाकु ॥ पुं
उमायकंगव्याथलिग
ययधनोयवोर्कवाय
नमस्तुत्यं रक्षा नयहका
नका ॥ अथ दकृताथलन
रुगवात्मवमलुल ॥ मधि
नथिय ॥ ततः सनद्वय

नां जन्मवासा ॥ पुंश
॥ ययकजनी ॥ असावमा
॥ ॥ जन्मवासा ॥ पुंश
धर्मकथनेम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दिना ॥ पुंश ॥ पुंश विम्वेसमा
तायिनामदवी नाना य
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वदाता निवर्तिन कि वृथो
ध्यायद्वहं सगलका वि ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यश ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लक्ष्मी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गोरोसवीथका मरुलेदा
यलोतो उमा मरुलोम
निवर्तिना दीवास्तं गह
स्वाङ्गलिनाथान्मि ॥
अगमधादि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मदिकलभा वीविवि ॥

तान्मूलवत्सलं च मनो नानि
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तस्यै नमः सर्वगोत्रिणः ॥

नमः कुलुत्थाईयधि
मदिविपिरागं कुत्वा
॥ नकरा (नरक) नदि
निसक भाजानमधि
दवतामरित यूज
नं । ॐ रुद्रित्वा क अ ४

सत्ययथा कं॥ॐ॥ गोतम
 यस्तदा जा विष्णुमिहसा
 येवव। यमदनिवृत्ति
 ह्यको अथाः कि सा
 वव। सायात सक काना
 वेयथा संवेत वा भय
 ॥ॐ॥ जनी॥ॐ॥ रुत्ता का
 अ। गोतमसु यथा अनि
 द्वायमस्य गीकृत्य स
 नम॥१॥ॐ॥ रुत्ता का
 यस्तदा जं सुयथा वाय
 द्वायमस्य गीकृत्य स
 नम॥१॥ॐ॥ रुत्ता काय
 रुवद विष्णुमिहसु य
 अथा दित्यदवा यम
 नृपय कृत्य स नम॥३॥
 ॥ॐ॥ रुत्ता काय यमद
 निवृत्ति यथा वृहस्यति
 द्वायमस्य गीकृत्य स
 नम॥१॥ॐ॥ रुत्ता का
 ला काय वगिहसु य
 यव व लय वगा यय
 कि धु न्य स नम॥१॥ॐ॥
 ॐ॥ यत्ता काय क स्येव

मृगय ॐ॥ रुत्ता काय यम
 रुवद विष्णुमिहसु य
 सत्ता ला काय यम
 यत्ति यदवा यम
 उगति कृत्य स नम॥१॥
 ॥ॐ॥ रुत्ता काय यम
 यत्ति यदवा यम
 नृपय कृत्य स नम॥३॥
 यथा यम यदवा यम
 वत्ता निवृत्ति ॥ॐ॥
 सायात नृपय ॥०॥

यून ४००० मिनिनी क
 ॥ॐ॥ रुत्ता काय यम
 रुवद विष्णुमिहसु य
 सत्ता ला काय यम
 यत्ति यदवा यम
 नृपय कृत्य स नम॥३॥
 यथा यम यदवा यम
 वत्ता निवृत्ति ॥ॐ॥
 सायात नृपय ॥०॥

कर्मा विमर्श उ॥ कृत्य
 गुरुमन्त्रावर्जनं ॥
 का अस्तु वदुवतस्तना
 रि काया वा पृथिवी अत
 रि की। कः सूर्यस्य वदवृ
 हता जतिरुका वदवदु
 मसंजता जाः ॥ ॥ अथ
 दानादकना अं कर्मा
 ॥ अं यवि रुक्मा ॥ अं अं
 सहसा दगत मूर्ध धूम
 क्ता गमः ॥ त्वं स ह्य
 स्या नाय वृणा विमर्शमेत
 विधन वजाय स्ता ह ॥
 वृति मर्क न वे उ क द नि
 द्रवता कलु मध्व यूजनं
 ॥ वृति वृजा विमर्शमेत

गगन सर्व वाक्का धान रि वा
 सिंहासनमाभारुतां अं
 मि काय कर्मा मी ग स ग र्ग य
 क्ता संयुतां हन त्वं सर्व विद्या
 निवन माक्ता अदहि म ॥ नि

वग किं स्व नृवाय सर्व लोक
 हि नाय व। त्वदीय वा दय
 मायं न मा सु विमर्श मर्क
 य ॥ अं मृ (वद क्ता य श व
 दसाम वद त्व थ वृणा गु
 न साध क अरु क्ता म्ना
 यु न स क्ता ॥ क्रिया कर्मा
 विधान अस्तु विमर्श न
 य कर्मा वृणा तां च ये वि
 वं य क्ता या य न का थ कं ॥
 सिंहासनमाभारु कर्मा मि
 गुण उ क्ता न मा मि यूमा
 न क्ता मि वा क्ता दि दानि स
 त्व नं ॥ अथ कर्मा मी ॥ अति
 द्रवता कलु मध्व यूजनं
 ॥ सर्व विद्या निष्का दय की
 ॥ वक्रि नाय ग्रा ज य ॥ ॥
 अं वक्रि (ग २ ॥ यज मान न
 सूर्या र्थ क्ता ॥ अथ राज
 नं ॥ मृला वा अस्तु य धा त्वं (न
 ग्ता दीनां वृह स्य नि ॥ गे
 व म म य क्ता अ वा य त्वं रु
 व य रु ॥ अथ राज न स म

यथासि ॥ अथ येन हन
 ॥
 ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ॥ अ
 थ कुण्डली कर्म काल यत्
 ॥ ॐ नमो ॥ ॐ अथ कुण्ड
 ॥ ॐ सिद्धि वस्तु ॥ युव स्म
 मा साध ॥ अथ जीमवुते
 वासं काल यत् ॥ विष्णो
 ध्यात साधनां ॥ अथ य
 काव्य ॥ अथ मनुष्य काव
 नां ॐ ॐ मं मं गं गय मू
 ॥ ॐ गं गं वय मू न वं वं
 दावा नि सव स्व गि ॥ निर्मद
 सिद्ध काव विज मि न स
 निधी क्व ॥ ॐ ति गो धा ति
 संकल्य ॥ अथ येन नि स
 दि यं ॥ ॐ अथ ४ को व
 क्क म अ गि द्वा य व स ग
 पुला ॥ ति ल ॥ सिद्धा थ कं
 ये व अर्धा र्धा ग ४ य गी ति
 गा ॥ ॐ को व द ग क न सा मा
 दा य य य य ॥ ॐ यो ग
 याम ॥ ॐ यो ग य स्वा हा

यनाय स्वाहा ॥ यनाय स्वा
 हा ॥ चन्द्र स्व हा ॥ अथ
 य स्वा हा क थ स्वा हा म न
 स स्वा हा ॥ अथ ति ल ग पु दि
 ॥ ग क ल न नात्मानं सि व थ
 ॥ ति ल कं वि क्ष य य य
 ची ॥ अथ य य नि जी क गी
 ॐ यो ग य धी ४ य धी जा ता
 द य स्व दि य ग य ना ॥ म न
 न व नु ध म ह ४ ग त धा मा
 ति स य व ॥ अथ स र ग नि
 वि क ली ॥ ॐ म ह ४ ॐ ॐ
 अथ ह म अ ठ गी कं म म
 य क ठ ॥ ह नु या य आ सा
 द थि य व व थ दि य ॥ ॐ
 मं त्वे मं गृही त्वा वा म ह स
 नि क्ष य ॥ ॐ स मि न ४ सं क
 ल्य य ता ४ स थि आ ना वि
 य म म न स्य मा ती ॥ ॐ
 मृ थ म ति सं व मा ती सं वा
 क्क म ४ सि सं य जा स म वि
 त्या ना क वी अ न य नी य

धिया रुवतत्तं ॐ यमस्य
 मानाय धिहि ॥ ॐ ज नं ॐ
 ॐ द्वाय २ ॐ व ज रु साय
 २ ॐ सु वा धिय तय २ ॥ व
 न ना दि धू ज नं ॥ व लि य दा
 नं ॥ ॐ ग मं ग ण पा ति य २ ॥
 ॐ ग नो नां वा ॥ ॐ कौ क
 उ या ला म २ ॥ ॐ व म् गु ण य
 ॥ कं व लि ॥ ॐ कौ द न
 य २ ॥ ॐ या ग व दा ण गृ धू
 या म सा म म ना ती य भा नि
 ज हा ति व द । स न ४ व वि ष
 ग ति द म्म नि वि ष्म ना व व
 सं ग द रि ता ल्य नि ४ ॥ द न
 व लि ॥ व न्य ना दि धू य दी
 य स्म ७ ४ ॥ ० ॥ ॐ ग ण
 द्य न क मा न द्य ॥ द नं ॥ ॐ
 या नि ती ग ण ४ रु न वी
 य क ना ग म् गु ण ४ ॐ ॥ या
 नि ती ग ण ४ रु न वी य क
 ना ग म् गु ण ४ रु न ग ण
 रु थ ॥ ॐ कं व लि य

ॐ नं द वा स य क मा न मं । अग्नि १०
 जा म्म सु सि ल्य क वि । ग य त
 ४ । रु न क वि द्य स द्या ता व य
 क तु स म यि गा न ॥ अ न ग
 म्म दि ॥ व लि य २ ॥ ० ॥
 ॐ व ज वि ष्म दा स द्या य
 दि गृ धू धा गि वा न द्या ता क
 म ग त्म ना ॥ ता य द कं म
 ॥ ॥ य न गी य म्म न क द क
 धु नी नी द ग ॥ ॐ य द्वा द
 व रु म्म ग त्म द न सा वि ष्म
 न्म य ल ४ रु स ष य नि स म्
 रु ण ॥ ॐ मा न स्म क त न य
 मा न ज्ञा य वि मा ना । ग म्
 मा ना ज्ञ ॥ ॐ य नि नी य ४ मा
 ना नी नां नू द ला वि ना व धी
 रु वि ष्म क ४ स द मि त्वा रु
 वा म रु ॥ ॐ य न य ती ॐ वी
 मृ त्व वि न स ल्य नि न न
 रु क ४ ४ स व ग ४ स ल
 न द्रि ग व रु रु क धू म्म
 म रु रु वा ना अ द व ४ ॐ

ॐ श्रीकृतं सवयं दवस
 सविदुः सवः ॥ सव्यं ग्या
 य ग क्ता ॥ वागीश्वरी पूज
 ना ॥ ॐ वक्ता रुतं वने दंत
 य ह लं वैष्णवी मिदम ह
 नं वल गमूक्ति नाम यक्षो
 भ मिष्टाय ममाख्या निवः
 स्वा नदम ह नं वल गं हं म
 क्ति नाम यक्षो समा नाथ
 म समा ना निव स्वा नदम
 ह नं वल गमूक्ति नामि य
 भ सव न्थ य म स व न्थ नि
 च स्वा न मे दम ह नं वल ग
 मूक्ति नामि य म स जा ता
 य म स जा निव स्वा ना ल्हा
 कि नामि ॥ गि सु गी क लु व
 ह नं थं व स ग ल वा न क
 व स ल ॥ ॐ हि न ल व लु
 ह नि ती स व लु व ज ग ॥ ॐ
 ता ॥ व द्या हि न ल यी ल द्मी

जात व द्या म मा व ह कां ॐ
 आव जा दाल द्मी म न स
 ग मि नी ॥ ल द्मी दू ज न
 ॥ ॐ म ना द्मी ॥ स क्ता न
 य ति ष्ठा ॥ ॐ लं मू क्ति वि न
 ॥ का ष्ट ग ह ली ॥ ॐ ग ल्वा
 य मि ति का ष्ठा ल्हा द ली ॥
 ॐ ॐ ध ना स्त्वा ग त ॥ हि
 मा य म न ॥ स मि ध म हि
 । व य स्व ना व य स्व ना ल
 दं रु त म द द्वा सा म द ल्हा
 वि ग व सा स्व कि भ या न
 म सी य ॥ का ष्ट नि ध य ॥
 म य यी ॥ ॐ मू त व ष्ट ति
 का ष्ट क लु यू ज ना ॥ व न्द न
 सि न्दु त य क्ता प वी त य य ॥

ॐ सवसुक्तः सवसुक्तः ॥

गमा नै मू ल्य द्वा ना वा य
 य ज मा न न स य का का
 द व ले द्वि ज य ह द्वा स
 य हा द्वा व द्मि य द्वा ल्हा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धि
 वीर्यमसि वीर्यमहि वल
 मसि वलं मेधि धि र्वाजा
 म्वा र्वाजामयि धि मयु न
 सि मयुं मयि धि ॥ त न मे
 लु लामि व का ला रु व का स
 गु लामि ॥ म लु मं वा म्वा ॐ
 अग्नि मूढा दि वक्ष कथयति
 ४ वृ थि था मूर्य ॥ अया ४ वृ ता
 ४ सि जि त्व गि ॥ य ज मा न न
 त द मि मा था य ह स स म य
 धी ॥ आ वा य स त म ना द कि
 ६ स्या य ॥ ॐ न का हा ल गि
 ॥ अग्नि निर्मा चूर्त ॥ ॐ अ ध्व
 वा च गि ॥ व लि पु दानं ॥ य
 वा क त ति ल ना ॐ क वा दा
 ग य स्या ह ॥ गि ला क ति
 ७ यं दृ ता च ॥ ॐ क वा द नं म
 मि य हि ना मि दू मं य म वा अं
 ग वु द वि पु वा हं ॥ क वा दा
 मि स य वि स्या अ वा हि ४ दि
 य म् ॥ ७ य म् य न न ॥ ॐ ०००

वायमि तत्रा जा त व दं द व
 आ ह वृ त व रु उ य जा न न ॥ अ
 न व क धी ॐ अग्नि मूढा ल
 मि न्ना स ॥ अग्नि वी ज ना
 मि न्ना स य ज नं ॥ ॐ ३
 नूं ३ वा ३ व कि मू र्थ य ॥
 अग्नि सं व द ॥ क व र ना व
 गु ल नं ॥ म य गी न स ग ॥
 ॥ ध न म् दा मृ ती कृ त्ये त्वा
 ॥ त ता अग्नि कृ ती त्वा ॥ ह
 त जा ४ न व द व आ ति य
 की कृ त्वा न ल ग यं ॥ व क
 ह य स मं अग्नि वि गि आ ति
 कृ था स न न ॥ आ ता नं हा
 व थ ॥ ६ वृ वी य व द कि क
 ल य ॥ ७ य म् य म न म ति मा
 लु की आ ती नि धा य थ ॥
 ० ॥ ॐ अग्नि नृ म साम
 ७ म क धं त्व हा नि य थ मा
 जा त व दा ४ अ नृ स य थ
 य नृ मा व न मी न न आ वा
 वृ थि वी आ त तं थ ॥ अग्नि
 कृ लु थि य द कि ती कृ त्वा ॥

यक्ष्णानि स्थापनसम
 क्रुमसु। उंमयि गृह्णात्य
 यमनि ११ नायथा वायु
 सपजात्वा यस्य सूवी था
 यमामयवता १ सूवता
 १ स्वस्ति स्वाहा ॥ स्वाहा कं
 कामो उं स्वस्ति ताममीग
 त्यादि ॥ य ०७ ॥ अग्निषु
 शेका उं ममातिग वम
 लक्ष्म दयानि सामस्त्रा
 वाजा मृगना नूव काम ॥
 उना वृषी था वन गसेक
 लाहुजयं त्वा नूद वा
 मयं ३ ॥ वालकानि नूदा
 थ ०० मृगय मना निष्ठ
 क वंशो ॥ उं यष्टा दि विष्ट
 ११ अग्नि १४ विष्टा यष्टा
 विष्टा अथधीना दिव ग १
 विष्टा नना सहसा यष्टा
 अग्नि १४ सना दिवा सतिष्ठ
 त्या पुनका ॥ अग्नि समरु
 न ॥ अग्नि युक्ता ॥ ॥

पूर्व ३
 दक्षि ३
 वायु ३

मृगयादि च उं वंश सनं ॥
 कृष्ण कृष्ण ॥ उं मृगयाय
 ०० दं मा सनं ३ ॥ उं यश्वदाय
 ०० दं मा सनं ३ ॥ सामयदाय
 ०० दं मा सनं ३ ॥ अथ वंश दा
 य ०० दं मा सनं नमः ॥ उं
 य ॥ उं अग्नि मा उयनादि
 तमिति ॥ यवा दगा वाटनं
 ॥ उं ०० वंशेति ॥ दक्षि ००
 दवाटनं ॥ उं अग्नि मा उं
 यद्विती ॥ यद्वि अग्नि मा उं
 न ॥ उं गता दवीति ॥ उं
 य अग्नि मा उं ॥ उं य
 दयुज नं ॥ उं मृगयाय
 अग्नि ॥ गताय सामयवता
 यम अग्नि कृष्ण सनम ॥
 उं यश्वदाय नूदाय ००
 यय वयु दगा यय वृ
 द्वा सना उं सामयदाय
 यय द्या नं काय यमना
 यय द्या वता यय गताय
 यय सनम ॥ उं अथ वंश

दायवद्वान्त्यागमयः
 द्रवद्वान्त्यागमयः
 सनमः ॥ तालाक
 यालाचनं ॐ द्वायव
 कुरुकायगजासनायसु
 नाधियतायनमः ॥ १ ॥ ॐ
 अमयगकिरुकायसंनो
 कृगमसनायगजाधियग
 यर ॐ यमायदगुरुका
 यमहिवासनायधताधि
 यताय २ ॐ नीमृगयवम
 रुकायनववाहमायवा
 कसाधियतय २ ॐ वन
 लायवागुरुकायमकवा
 सनायजलाधियतय २ ॥
 ॐ वायवध्वजुरुकायमृग
 वाहनायधवनाधियतय
 २ ॐ कवनायगदाहका
 अमृधवाहनाययकाधि
 यतय २ ॐ नीमृगनायधि
 गूलुरुकायवृषरासना

यमवैरुताधियतय २ ॐ
 विष्णुवैरुकाहकाहमास
 नायवाताधियतय २ ॥
 ॐ वक्रागहमासनायक
 मगुलुरुकायसुमाधिय
 तय २ ॐ सुमाय २ ॐ
 मयाय २ ॐ यातानाय
 २ ॐ मध्यामसुदवती
 मृद्धमवायलाहिवधु
 यववहकायववाह
 नायवाहयतीसमति
 तायगजाधियतयनमः
 ॥ ॥ दसमिध्वामंनकं
 ॐ कायगजाधियतय
 कयाता ॐ नवाहदवध
 गिमुनयवा ४ यवोरुजा
 ग ४ सउगवृक ४ सुवजा
 ग ४ सजनिध्वमान ४ यवृज
 नानागिगिगिसवाताम
 स्वीमृनिमंस्वीकवली
 स्वायवकासमंयनीतास

उक्तमप्यगं॥ वक्तायुज
 नो॥ उंशीविपदाविचक्रम
 ॥ यणीगयुज नं॥ उं नमा
 सुनीलगीवायसहवा
 कायमीदृय॥ अ॥ थय
 अस्यसत्ताहत्तं॥ थोकरं
 ॥ अनियुज नं॥ उं वक्ता
 हनंमिनिपंचसूतलक
 वुवद्वर्णा॥ उं कथानधि
 उ॥ अ॥ उवद्वर्णिसदायुध
 ॥ सखा॥ कथासविष्ट
 यावृणा॥ यविष्टनर्णक
 ॥ कर्तनपूर्वायुधान्तं॥

नमाअथायध्वविधिमनु
 लकलभचनं॥ थगुला
 दि॥ अ॥ घयगं॥ गृहीत्वा॥ थू
 ववद्विधाननयुवद्वाना
 दिपकिक्कमलमा॥ मया
 गकलगडद्वायुजय॥
 नागयंकथकलीशील
 क्षी॥ गमयर्लिमदिस

गलंयुज नं॥ उं तिधुव्वक
 लगल्लुलाच्चलविधि॥

अथकुसुमसीयंगत्वा॥ नमा
 रधयदासाधनं॥ द॥ क्षी॥
 दक्षिणयुयराजनः कम
 वुल॥ यविष्टवृद्धनानिषा
 निधविज्ञाति॥ थोकावा
 उ॥ अ॥ थ॥ क॥ ती॥ व॥ वृ॥ क॥
 ती॥ सं॥ मा॥ ऊ॥ न॥ क॥ ल॥ उ॥ य
 यमनक॥ ल॥ समिधस्त्रि॥ य
 ॥ क॥ थ॥ ॥ उ॥ न॥ उ॥ द॥ व॥ ल॥
 म॥ ल॥ द॥ र्ग॥ द॥ य॥ ल॥ ल॥ ल॥
 थू॥ थ॥ अ॥ अ॥ ग॥ ल॥ न॥ ल॥ ल॥
 थ॥ थ॥ द॥ द॥ वा॥ तं॥ थू॥ ल॥ ल॥ ग॥
 तं॥ थ॥ कि॥ व॥ वा॥ वा॥ ॥ उं॥ थ॥ व॥
 स॥ वा॥ स॥ वि॥ उ॥ नि॥ थ॥ थ॥ थ॥ क॥
 ल॥ ॥ उं॥ थ॥ ॥ ग॥ थ॥ ॥ ग॥ ग॥ व॥ ल॥
 रं॥ वा॥ क॥ वा॥ ऊ॥ रु॥ वा॥ म॥ ल॥
 स॥ वा॥ य॥ ॥ उं॥ थू॥ म॥ क॥ य॥ ॥ ग॥
 थ॥ अ॥ नि॥ अ॥ न॥ रं॥ थू॥ ॥

[illegible]

*४४५ लगुलनिमयः॥१३

[illegible]

त्वं शुभं धीं ॥ किं श्रुत्वा तु
 तं किं च ॥ तथैव चिन्तये
 कं वा का न य ॥ ॐ धूम
 सीति ॥ उदकं न स तुल
 यकालं न ॥ ॐ सुमि रिया
 नति ॥ उदकं निधाय ॥ ॐ
 आयाय सुखति ॥ की नं
 निधाय ॥ ॐ गं आसिति ॥
 धृतं निधाय ॥ ॐ अया ॥
 वसं नति ॥ गं न निधाय
 य ॥ य विभु न संकाय ॥ ॐ
 जनं ॥ त्वत्सिद्धं न यज्ञो
 यवीत युध्यते ॥ ॐ वक्र
 (१२) ॥ ॐ विष्णु वर ॥ ॐ
 सदा गिवा य ॥ ॐ यज
 यत य ॥ ॐ वक्र यज्ञ
 नं ॥ ॐ ॐ दं विष्णु ॥ ॐ न
 मं ॥ सुवाय न ॥ ॐ य
 जाय गतं गि व नू य जनं ॥
 ॥ ॐ स (१३) अति प्रियं गि

[illegible]

ॐ गङ्गा अस्या वधीनां गङ्गा व
नस्य गीतां ॥ गङ्गा विष्णुस्य ह
नस्य ॥ न गङ्गा अस्या मसि स्वा
हा ॥ ॐ हंसि न स स्वाहा ॥ ॐ
यस्य वदो नाय स्वाहा ॥ ॐ स्व
मित्यक्तम न च ल ॥ हंसि स्वा
हे स्वाहा ॥ हंसि मत्ता न य
नाय स्वाहा ॥ ॐ माहि बुद्धि
युदा कलु मरु आता न न च
यहि ॥ हृता स्व कल्या डय मृष
ये ॥ स्वायथा अन स्वाहा ॥ हंस
क वचा यद् ॥ ॐ हंस जातक
मसं न स्वाहा ॥ ॐ कोय स्वाहा
कस्य स्वाहा कस्य स्वाहा धीमा
ताय स्वाहा म न जाय म न य
स्वाहा विहं विहं ताय स्वा
हा दिव्य मय स्वाहा दिव्य सु
मृती काय स्वाहा म न स्वयं
स्वाहा म न स्वयं स्वाहा वका
य स्वाहा म न स्वयं वृहत्य
स्वाहा वृष स्वाहा वृष यमश्वय

स्वाहा वृष न न वि काय स्वाहा
त्वष्ट्र स्वाहा त्वष्ट्र न डनीय
याय स्वाहा त्वष्ट्र न न न न या
य स्वाहा विष्णु स्वाहा विष्णु
धनित्वाय स्वाहा विष्णु
निव विष्णुय स्वाहा ॥ हंस
जाय स्वाहा ॥ ॐ हंस घृता
कनाय स्वाहा ॥ ॐ त्वम न
धृति ॥ हंस अस्या स्वाहा
॥ ॐ निष्क मनाय स्वाहा ॥ ॐ
य स्वाहा वा अ न नि ना च
वाव दद सय यव य मृता
जात यद सयि यमि न न स
० सिध स्वाहा ॥ ॐ हंस अस्म
राय नाम कल ॥ ॐ स्वाहा
॥ ॐ याय स्वाहा या नाय
स्वाहा या नाय स्वाहा व द
य स्वाहा ॥ ॐ याय स्वाहा वा
य स्वाहा म न स स्वाहा ॥ ॐ
हंस लया म नाय स्वाहा
॥ ॐ या ० हंसि नी ॥ ॐ हंस

ॐ श्री साहा ॥ ॐ शुभ कंज जा
मह ॥ ॐ हं मातृ विर विम
ऊ नाय साहा ॥ ॐ मातृ व
वृषं वृषि वी य निष म नि ०
स्य आता व रा नूषा ॥ गान्धि
विष्ट वं मृगु रि ॥ सं वि दान
॥ य जाय वि वि श्व क मा वि
मृगु रु साहा ॥ ॐ हं सर्वो य
साहा ॥ ॐ हं मृगु कल
भाय साहा ॥ ॐ वी हं द
वृषि ॥ ॐ हं वं ० रु रु व ०
सं वि श्व क मा सा क य सा
हा ॥ ॐ हं म न या ना य सा
हा ॥ ॐ वि श्व त श्व क व र गा
॥ ॐ हं मृगु य वि श्व त श्व क
॥ साहा ॥ ॐ म ना द्वा मि ॥
वि मि ॥ ॐ हं मृगु द ग कि या ॥

॥ मा ॥ मृगु न य ॥ ॐ
नी ला ल य ल द ल ग मा मृ
ॐ म द्वा नू ला व न ॥ स च व द

॥ सं य कं सर्वो म न द वि
गं ॥ मृगु द ग कि धृ गं त र्थ वा
म य क रि मृ ल धा ॥ धा ल ध
मा वि श्व त श्व मृ नि धा ला
उ वी ज व र ॥ ॐ मि वि श्व य
मि श्व वि ॥ मृगु न ॥ म र्वा
नू रु य द का वि ॥ ग कि ह
सा द ग ग न ॥ मृगु रु वी
व व कं व प द लि त्यो व क
मृगु ॥ स क व र्ण व र्ण
का मृ व गृ मृ द कि ॥ ग क य
सा हा य ती सु ता वा म मृ
गृ मृ ग कि का व क ॥ ॐ
य ॥ द म र्ण धा न य र्ण न म ॥
ॐ हं मृगु न ॥

ॐ स मि धा नि दू व स्य त धृ
न वी व य ता ति धि ॥ मृ
मि ह द्वा श हा न ॥ मृगु
द ग म मि द मा द य ॥ ॐ
स र्थ वी मि रु द दि य रु

दायक दवदुसा । तथ व
 युक्तं न आय ४ सव
 जयति १ स्वाहा ॥ धा ७ न
 रुद्रया ॥ न कं डी कान
 गस्वाहा ॥ न कं वरिगति
 धाय ॥ वामहस्त नमि
 वीथ्य क (गत व का स्पृष्ट
 ॥ ग्रवा यय न्वं निधा
 य ॥ दक्षिणहस्त नमस्क
 या ॥ ग्रवन ॥ ॐ मन्त्र
 यजाय गय ०० ॥ ॐ दम
 नय यजाय गय गायि ॥
 ॐ गस्त्य लव ॥ गेयार्क
 स्वात्मन ॥ ॐ यत्यर्गन ॥
 अर्घ्येय भद्र दिग कनि
 षां तुलिय लि य ॥ एग
 सहिगने सर्वगत येव
 कर्तव्या ॥ ॐ गमा स्य वधू
 ग १ गमा वधू ताजूना
 गमा दित्या नमि यति
 स्वादिगि व ॥ ॐ विषय

सियवर्गो धित्वा दित्या स्त्व
 तुदिवत्क रनी नमि विषय
 सिवाद्य मयी यति त्वा यव
 माधु ॥ ॐ संवीथ्य क (गत
 वक्रि शिवा लसुले दीथ्य ॥ ॐ
 अग्रवा ज जिवा जं त्वा सनि
 कर्ण वा ज जिवा जं त १ संमा
 यि ॥ ॐ यजं मत मूल नात्स
 युजन ॥ ॐ ॐ दस्य वजा
 सिवा ज सा त्वा यं वा ज १
 सत ॥ वजि स्य नूय गव
 मात वं महि मदि गिता
 मव वसा क नाम ह ॥ यत्या
 मिद विष्णु वत मा विव
 गम स्यात्ता व वस विता
 धर्म सा विषय ॥ वामह
 क्त वर्य दय य मत क (ग
 १ गमि नूय जय ग ॥ ॐ ॐ
 दाय २ ॥ ॐ वज हे सा ये
 २ ॥ ॐ सना विषय य २ ॥
 ॐ जता नमि दस्य व ॥
 ॥ गत यजाय गि यव

नामानसंविन् ॥ वक्राप्र
 क्षीतवदलोकयालाचन
 ॥ धनहीमयदवगाचन
 ॥ कलुषयथातवृक्षमलु
 लंक्ष्मातय ॥ तत्तलु
 लो ॥ उवक्ष्मात ॥ उवर्णा
 ताय ॥ उमृत्वादि वउ
 वदासत ॥ उं वृद्धादि
 दगला कयालया नमः ॥
 गद्यतिदृग्मस्वकातक
 जयालाय ॥ उं विवचा
 य ॥ उं वउथ ॥ अय ॥
 उं वग्मताय ॥ उं दि
 ॥ २ ॥ उं विदि ॥ १ ॥ उं
 स्वम्माय ॥ उं मयाय ॥
 ॥ उं यातायाय ॥ उं मे
 य ॥ उं धाया ॥ उं कया
 य ॥ उं सुयाय ॥ उं
 यागीययाय ॥ उं मला
 या ॥ गीययाय ॥ उं हय
 या ॥ उं दययाय ॥ उं आ
 लिभयियाय ॥ उं दामय



वगाय॥ॐ सर्वथादवस्था
 ॥ वचनादिमं वृत्तं यथा
 तयथा जित्तिं दद्यात् ॥
 अर्चनामकवर्णं ॥ ॐ जि
 धानामाशीर्णी ॥ यथा नाग
 यत्वाहा ॥ ॐ रुच्यनमाद
 वस्य ॥ वाक्म ॥ नदायय
 दधमयसुवेन ॥ कृष्णतिल
 जलन ॥ ॐ दक्षि स्वधायि
 हय ॥ सवनायस्य गत
 ॥ ॐ ॐ गच्छीत्वा वीथी
 नृणां ॥ ॐ दक्षि स्वधायि
 ॥ अर्चनामकवर्णं ॥ ॐ वृ
 र्णमवतांत्वायावायुधि
 वी अर्चत्वायावायुधि
 सुहि ददवस्य ॥ ॐ द
 आश्चमदि विमोहस्वाहा
 मं अतिथि अतिथि स्वाहा ॥
 ॐ वनघृणमुरुवाधातं
 नर्ण ॥ ॐ तिमिद्वयथा
 न ॥ ॥ गतये नृणां

मं ॥ ॐ अर्चनामकवर्णं ॥ ॐ द
 मं ॥ ॐ अर्चनामकवर्णं ॥ ॐ सोमा
 यत्वाहा ॥ ॐ दमायत्वा
 हा ॥ ॐ अर्चनामकवर्णं ॥ ॐ
 हा ॥ ॐ दमेतिवा माया ॥
 ॐ द्युपयक ॐ मिथ्या स्वाहा
 ॥ ॐ दमिद्वयनि र्ण ॥ ॐ अ
 निर्दिष्टा गिगुद्दवस्था
 धानि धानि मरुवायययय
 रुच्य स्वाहा ॥ ॐ दमायत्वा
 ॐ दिनधायि स्वाहा ॥ ॐ द
 दिनधायि ॥ ॐ कनकाय
 स्वाहा ॥ ॐ दकनकाय ॥ ॐ
 नकाय स्वाहा ॥ ॐ दकन
 काय ॥ ॐ दकनकाय स्वाहा ॥
 ॐ दकनकाय ॥ ॐ दकनकाय
 स्वाहा ॥ ॐ दकनकाय ॥ ॐ
 अतिथि काय स्वाहा ॥ ॐ द
 मतिव काय ॥ ॐ मधुव
 नृणां स्वाहा ॥ ॐ दमधुव
 रुच्यय ॥ ॥ ॐ सकवर्ण

ममूयसमिधः सयः शिवा
सकमृषयः सकधामयि
यामिसकदागः सकधात्वा
यजति सकयानि रायुगस
द्युतनत्वाहाः सकजिवा
सामः ॥ ॐ सकजिवाह्वय
नः ॥ ॥ गतध्वजगवाहा
मः ॥ ॐ ॥ नवगीधनमध
हिरातः सववमीनीमत
थदगस्याः शुक्लानाद
मीविपुत्रतदाध्वययुधि
वीमरिगामयुयः स्वाहा
॥ ॐ द्रविष्मवित्रकमग
धानिदधयधमः समुत्
मस्ययाः सवस्वाहा ॥ ॐ
मानकाकगतः ॥ ॐ द्रव
वह्निर्तयवकागयः ॥ ॐ म
गवदगातः जीवमगुनद
गातः स्वाहा मगवदगातः
षववामिगवदगातः
वीनोऽप्यामिगवदगातः

हयध्वजगवाहाः ॥ ॐ विज
दवानामदगाः ॥ ॐ मग
यस्यैकगयस्वाहा ॥
ॐ दमः यस्वैकगय
योगः ॥ ॐ गिर्यचगवाहा
मः ॥ ॥ गतावदाहमि ॥
ॐ मवदायस्वाहा ॥ ॐ द
सुम्वदायः ॥ ॐ धृतिवीस्वा
हा ॥ ॐ दधृथिवी ॥ ॐ ॐ अ
नयस्वाहा ॥ ॐ दमः ॥
ॐ धीतवः यस्वाहा ॥ ॐ
दधीतवः यः ॥ ॐ दध्वज
स्वाहा ॥ ॐ दध्वजः ॥ ॐ सा
मायस्वाहा ॥ ॐ दसा मायः
ॐ धजावतयस्वाहा ॥ ॐ द
धजावतयः ॥ ॐ दध्वजः
स्वाहा ॥ ॐ दध्वजः ॥ ॐ
लदीयः स्वाहा ॥ ॐ दल
मीयः ॥ ॐ दानीयः ॥
स्वाहा ॥ ॐ ददानीयः ॥
ॐ दध्वजः स्वाहा ॥ ॐ दध्वजः

य ॥ ॐ मृषियः स्वाहा ॥ ॐ द
 मृषियः ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा
 ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ म
 य स्वाहा ॥ ॐ दममय ॥
 ॐ यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ दय
 क्षाय ॥ ॐ धावमय स्वाहा
 ॥ ॐ द धावमय ॥ ॐ स
 दसस्यतय स्वाहा ॥ ॐ द
 ससस्यतय ॥ ॐ अन
 मतय स्वाहा ॥ ॐ द अ
 नमतय स्वाहा ॥ ॐ
 यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ द
 यक्षाय ॥ ॐ अक्षयि
 काय स्वाहा ॥ ॐ द मक्षयि
 काय ॥ ॐ वायव स्वाहा ॥
 ॐ द वायव ॥ ॐ ग्राव
 य स्वाहा ॥ ॐ द ग्राव
 वय ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ मक्षाय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ धावमय स्वाहा

॥ ॐ द ॥ ॐ ससस्यतय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ अनमतय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ ससस्यतय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ ससस्यतय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ
 द यक्षाय ॥ ॐ नक्षाय स्वाहा
 ॥ ॐ द ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ मक्षाय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ धावमय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ ससस्यतय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ अनमतय स्वाहा ॥
 ॐ द ॥ ॐ अक्षयि
 काय स्वाहा ॥ ॐ द अक्षयि
 काय ॥ ॐ दियस्व ॥ ॐ स्वाहा
 ॥ ॐ द दियस्व ॥ ॐ वक्ष
 म स्वाहा ॥ ॐ द वक्षम
 ॥ ॐ वक्षम ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥
 ॐ द वक्षम ॥ ॐ यक्षाय
 स्वाहा ॥ ॐ द ॥ ॐ म
 य स्वाहा ॥ ॐ द ॥ ॐ य

सहवानुनधिस्याह॥ॐ
 मनिववृणत्याह॥
 ॥ॐअथोष्ट्राग्रस्यनसिग
 स्तिवाग्रसत्वमित्तमया
 अमि।अयानायकवहा
 स्योनारधदिवेरुधज
 वस्त्राह॥ॐदमया।ग्र
 ॥ॐअतुगतंवरुणिस
 रुचंषस्तिवायागवित
 तामहाकशातित्तोअ
 अयथिताथद्विद्विषूवि
 ग्वमेश्वरुमनूत४स्वका
 य४स्त्राह॥ॐदस्वनू
 यासविणविषूववि।ग्र
 व्याधवस्यामनूह४स्व
 कौत्य४॥ॐउदलमंवन
 लयागमस्मदवाधमवि
 म॥धम४॥॥अथ
 वयमादित्यवागवा
 नागसाअदितायस्याम

४ सा हा ॥ ॐ दं व नू न
 यादि त्या धिय न था ॥
 ॐ नि य ॥ वा नू न ॥
 ॥ ॐ श कृ व ॥ ४ व न
 (॥ सा हा ॥ द हा य ३
 उ र् य वा ॥ न (ये व व न
 य ही न व द ला क या
 ल क ल हा क लिल
 ना म य क उ क ही
 ही ल मी म ल न व
 या नि न्या दि ॥ य वे दि
 क ल हा ॥ वि दि क ल
 हा ना ॥ स्व स म क हा
 दृ ना कू नि द या न
 ॥ ॥ ॐ कार्म काम
 धू य धू क मि गा य व
 वृ क्ष य च ॥ ॐ ला आ
 धि र्या य धू य आ र्य
 ४ आ य धी य ४ ॥ सी हा
 व दृ न य ल व य ही न
 ति धा य ॥ ६ क हा व
 न ॥ ॐ य क न ॥ ॐ

समिध ४ स क जि द्वा स क मृ
 ध य ४ स क धा म धि या मि
 स क हा ४ स क (धा हा ज
 य नि स क य नि वा धृ व ल धृ
 ग न ह ४ म्वा हा ॥ ॐ नि धृ ता
 कृ ति धू धु ॥ ॥ ग र हिला
 कृ ति काल था ॐ द व स्य वा
 स वि रु नि मि वा दि या ज य
 क ही ॥ ॐ य य र ४ व क र्ण
 ॥ य र्था र्ण ॥ ॐ अ न सि ता मि
 ता सी ति ॥ स मा ऊ न वी हि
 य र्वा हि ति धा य वा धृ
 ॥ ॐ य वा क र ति ल मि र्ण
 धे अ मृ ता स मि ध क ॥ स मि
 धे अ र ह ल य र्था व क व म्वा
 क मा लि का ॥ न र ति धा य
 ॥ गु र्वा वा य धृ ज न ॥ ह हा
 ध व द न य धू य वी र व
 क आ ल का ना दि धू धा
 ॥ ॥ धू य धी य ४ वी ही या

ॐ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं क्लीं ॐ
 सवालं कानसंयकं कंकनं
 मृदिकागिच। ककुलानि
 मृकृणानि गुरुयः ४ यतिगृक
 तां। यथायत्नं कलं यममि
 माथसर्वसाधकं मया
 क्लितानि संयुक्तं यतिगृ
 तां। आयुः श्रियश्च कल्या
 णं कुरुष्वेधनानि त्व। रुव
 तां युक्तं सादृतं सर्वकाय
 ॐ सिद्धिदं। यतीकमत॥
 आवायुः श्रियः कल्या॥ ॐ ह्रीं ॥
 ॐ ह्रीं क्लीं। वीहि यूजनं॥
 मम श्राव्य ७॥ कृष्णं क
 तलं जलनं। यथा नामा
 ॥ यथा यथा ननाय गिलाह
 तिसं कल्य सिद्धि नमु॥ म
 हाद्याहति यद्वै गिलाह
 तिकालयत्॥ ॥ वमः
 वहीतः यदः लाकयाल

गभायति दुर्मादि॥ पूर्वदि
 कलग्ना॥ जयादि ८ वद ४॥
 यग ४॥ गलावि ४॥ अमुवा
 मु॥ लक्ष्मी॥ गीति क॥
 यष्टिका॥ आगमुके लग्ना॥ ना
 ग॥ यका॥ यदगी॥ गील
 क्ष्मी॥ गिव॥ मूलकलग्ना॥
 मृत्कं जयकलग्ना॥ यतिमा
 कलग्ना॥ कलित्तादि॥ स
 वं वां तिलाहति रुद्रया
 ७॥ शिष्यश्च मन्वा॥ धृताह
 तिकमग॥ अक्षतवर्ग
 दत्वा॥ ॐ पूर्वदिद्विषवा
 यनगसुहृन्मयनवायत
 ॥ वस्तवे विकीर्णवहा ०
 ममूर्ज ४ गतकाली स्वाहा
 ॥ ० ॥ ॐ गिलाहति यद्वै ॥

ततायथा कर्मकालयत् ७॥
 ॥ स्वर्गमयत्वा॥ प्रजगता

सुमय हिली वासुकि
 का वा॥ अथ लक्ष्म
 य वसुकि॥ ॥ य
 रुमलुया ददिनी
 छानका (६) स्नातम
 लुथ॥ य वस्नाय धं
 का यथ न॥ य को वै
 या या व दे थ य य
 यथ नि या य॥ य व
 की या दि मि दि ग क
 ल हा अ क क ल हा
 न॥ य व की या द
 (६) स कं न या व ध
 य लं न॥ य य ल हा
 म रा (६) नि धा य॥
 क व न स्ना न उ य
 धी॥ ॥ अथ उ द क
 व लि य दानं॥ य ऊ न
 ॥ ॐ ग ल हा नां त्वा॥ ॐ
 अ भ्य अ भि क॥ ॐ

नभा व द गु य॥ ॐ अ सं ख्या
 ता॥ ॐ वा य दि (६) स्ना हा॥ धृ
 य दी द॥ जा य का य ॥ व लि वि
 स ऊ न॥ स्ना न म धु म का य का
 व स्ना न स वा व क॥ ॥ ग
 १ ह र्या या द॥ या स वं अ
 द या य धृ ऊ न॥ ॐ रु द क
 (६) अ क क ल हा ना ती य॥
 ॐ अ जि य क ल हा॥ स्ना य
 न॥ ॐ ॐ म भा ग (६) य म न
 ॥ वा वि धे धृ न हा॥ ग ल हा
 थ वा ह न॥ ॐ अ ग क क
 म हा हा ना॥ स म द १ स वि
 भा क मा १ अ हा सा मि ध
 ॥ ॐ व क क १ य ध व न
 यां ता॥ ग ल हा म व (६)
 क धु न म द अ स व स गा
 ॥ ग म व य म नां या॥ नि मि
 य नू द म हा ल य॥ न ल ग
 व ३ (६) म हा व द हा
 म व स ऊ न॥ (६)

वलीशमनथासहवेसि
 नवव॥विश्वयादस्मिन्
 यवहिमवक्तविनिमता
 शमत्यचमहातीथाम्
 गच्छतुर्वरुवउ॥स्नानार्थ
 धवदवीनाःमयासध्वनि
 मेकिता॥सत्रिता॥साग
 ना॥सर्वसंमदानेयक
 शानदा॥आयानुयज
 मानस्यद्विगतकथकात्रि
 का॥ॐत्यावाअ॥गज
 लनयुक्तु॥॥अथयुज
 नं॥ॐयुक्तुअनकाय॥
 ॐकालसमूदाय॥ॐ
 समूदादुर्मिर्मभूमा॥
 उद्यानउद्या॥धुनासमसृ
 तस्यमाना॥घृतस्यनाम
 पुअयदकिजिक्तादवा
 नाममृतस्यनारि॥॥
 ॐमृत्तिकाय॥॥ॐअ

शकाकनथकाकविष्
 काकवसुवन्॥॥॥
 वनाहनेद्वैतनगाव
 रुना॥मृत्तिकावद्वैतद
 लाचकागयनारिमनि
 ता॥मृत्तिकाहवमयाय
 यत्तयाद्वैतनगा॥॥
 याद्वैतनयायनसर्व
 याय॥यमूचा॥॥
 आनयवासुकि॥॥॥
 ॥ॐक्रीनसमूदाय॥
 ॐसमूदंजिक्तासलिल
 यमध्यायनानायय
 निमिषता॥॥॥
 यावनेकीवृषशावना
 यता॥आयादवीनिह
 नारवतु॥॥कत्वाय॥
 ॐविष्णुवनाटमसीति
 ॥॥॥
 ॥॥दक्षिणःतद्वका
 य॥॥ॐद्विषसमूदाय

२॥ ॐ समुद्राय स्वाहा वागाय
 स्वाहा स निवाय स्वाहा स्वाहा
 वागाय स्वाहा अनाद्युष्ट्या
 यत्वा वागाय स्वाहा अत्र
 स्य वेत्वा वागाय स्वाहा
 निमिदो यत्वा वागाय स्वाहा
 हा ॥ ॥ यत्नव ॥ ॐ हूं
 दक्षिण विरिति ॥ ॥ ने
 मृत्वि ॥ कर्कश काय २॥
 ॐ धृता समुद्राय २॥ ॐ स
 मुद्रा ददय मय्युक्त ४
 सत्वा विष्णो वा यधीन ता
 य ४ यत्न सत्वा यत्न य
 ग सुका को नभा वाक
 विवेमय स्वाहा ॥ ॥
 यं वा मृता ॥ ॐ मृता वत्सा
 मृता वृध ४ मृदुल्लोक्त
 मृता वृत्त ४ धृता धृता
 मधुधृता विना ॥ ॐ

नाम कामध्या अकीमाना ॥
 ॥ यत्निमः यत्नय २॥ ॐ
 सनादन समुद्राय २॥ ॐ
 समुद्रा सि विष्णु वा अ
 जात्ये कया ददि न सि वृक्ष
 वागसी नु म सि सदा हा
 दानो मामा संता क मध्वना
 मध्वना पतिमा नि वत्त
 किमसि न्यथि दव यान
 दयाता ॥ ॥ यद्वा दय ४
 ॐ वृक्षे यत्न मिति ॥
 ॥ वायवाः महायद्याय
 २॥ ॐ दृष्टा दक समुद्रा
 य २॥ ॐ समुद्रा सि नरु
 त्वाना ददान ४ गति म
 या हन रिमा वा दि स्वा
 हा मवृता सि मवृता गेव
 ४ गति मया हन रिमा
 वा दि स्वा हा वन यन सि
 इव स्वा धूं ह मया हन

[illegible]

ॐ । आ । य । म । न । ज । य । नी । ता । स
 ह । रि । वि । श्रु । आ । ग । व । न । न ।
 वृ । द्वा । न । ॥ ॐ ॥ वी । हि । ॥ ॐ
 वी । रु । य । श्रु । म ॥ ॥ ग । न । धी
 व । श्रु । न ॥ ॐ व । सा । ॥ य । वि
 श्रु । म । सि ॥ ॥ स । ह । य । धी । न
 वृ । ज । नी ॥ ॐ स । ह । य । वि । स
 ह । य । सा ॥ ॥ य । श्रु । न । वृ
 श्रु ॥ य । श्रु । म । ॥ ॐ ॥ ग । म । द
 क ॥ स । वृ । धी । द । क ॥ न । धी
 स । न । म । द । क ॥ ग । म । द । क
 ॥ ग । म । द । क ॥ र । स ॥ यृ । ध
 यृ । ध । वृ । ज । नी ॥ ॐ ॥

ॐ अथादि॥ ॐ नन्दाह
 दीमिमल॥ ॐ अथवा
 यति॥ वलि॥ मगः रुं गा
 उवा नत्वय॥ या हिमलि
 मिनत्वय॥ सास्त्रयुवि
 धिधु॥ ॐ अमिदु वि
 देहनि सि॥ ॥ निला

वलाहर्ष॥ॐ हिनयगर्ह
 ति॥ हनिदावलाहनं॥
 ॐ वासुदेवात्तत्रांमंषे
 तीकविष्कर्मणि। यस
 वितासयद्वाताद्वाउत्त
 नमानम॥ त्वयिसंयुजि
 तामीगनात्रायवमनाम
 र्यांनरित्सर्वधावत्त
 त्रिद्वियकासदाव॥ॐ
 गिय॥०७॥ स्नानकलण
 नयथमस्तानमनु॥ॐ
 अग्निमुखा॥ ॥मृत्तिका
 स्नानं॥ॐ स्थानाष्टयित्री
 ॥ ॥कवायस्तानं॥ॐ
 यस्तानं॥ॐ विष्णुवना
 मति॥ ॥यद्वायस्तानं
 ॥ॐ वस्तुयस्तानं॥ ॥क
 स्नानं॥ॐ नमः॥ॐ
 यवा॥ ॥दीनस्तानं॥ॐ

यश्चष्टयित्री॥ ॥दधिसा
 नं॥ॐ दधिसा॥ ॥घृत
 स्नानं॥ॐ गजासि॥ ॥ख
 पुस्तानं॥ॐ यश्चनयः
 नस्तानं॥ ॥नपुस्तानं॥
 ॐ मधुवातामृतायतन
 धुवनं॥ॐ सिद्धवः॥मा
 धीर्नस्तानं॥ॐ मधु
 नक्तमृतायतनमधुमनयो
 यिव॥ॐ नक्तमधुमान
 शुनयिता॥ॐ मधुमान्ता
 वनस्तानिर्मधुना॥ॐ
 सुस्तानं॥ॐ माधुनीवार
 वस्तुन॥ ॥ॐ मय
 स्नानं॥ॐ मयस्तानं॥ॐ
 ॥ॐ मयस्तानं॥ॐ
 यशी॥ ॥यश्चनयस्तानं
 नं॥ॐ सन्तुष्टानि॥ ॥
 ॐ दस्तानं॥ॐ नयत्य
 नोक्तमधुना॥ॐ मधु
 दस्तानं॥ॐ दस्तानं॥

नमो विष्णवे ॐ नमो भगवते
 रमणीयानां प्रियविशेषं
 दृष्ट्वा धृष्ट्वा वा न विदुः ॥
 ॐ वावकानां सवस्वती ॥
 ॐ चादयिषीष्टुता न विदुः
 तकी सुमतीनां यद्वद
 धसुवस्वतीम् ॥ ॐ महा
 जगत्सु सवस्वती यत्र गज
 तिकुमुना विधा विष्णु
 विनाजति ॥ ॥ कृष्णद
 कस्तानां ॥ ॐ दवस्वती ॥
 ॥ गृष्णदकस्तानां ॥ ॐ कृष्ण
 कानां मिदं यतिपुलं
 द्यावृषामानां वृषरुमु
 वायातं ॥ दृष्ट्वा सुखा मनसा
 भादमाना ॥ स्त्रोहोदवाभू
 मृतीमादयन्ताम् ॥ ॥
 सुवर्णदस्तानां ॥ ॐ हि
 वस्वती गति ॥ ॥ नदी
 संगमादकस्तानां ॥ ॐ य
 ज्ञनय ॥ सवस्वती ॥ ॥

नमो भगवते ॥ ॐ ॐ
 मंभा मंभयमून ॥ ॥ वे
 त्नादकस्तानां ॥ ॐ हि वस्व
 नदी गति ॥ ॥ गंभीरदक
 स्तानां ॥ ॐ मन्वद्वानां ॥
 रसस्तानां ॥ ॐ नदी स
 ता गति ॥ ॥ उषधी
 स्तानां ॥ ॐ या उषधी ॥ वृ
 द्वाजा गदवस्वती यत्र ग
 म्ना ॥ मन्वी नदी कलमह
 ० गंभीरमानि सवस्वती ॥
 ॥ गंभीरदकस्तानां ॥ ॐ
 जगत्सु ॥ ॥ यव
 धूमविल्ववृक्षस्तानां ॥ ॐ
 दत्त नदी कलयता ॥ मन्वी
 ॐ आमिद्विद्विहविशि
 ता ॥ जगत्सु ॥ ॐ द
 यदादिता ॥ ॥ गंभीर
 द्यादया ॥ रकल गस्तानां
 न ॥ ॐ गस्तानां ॥ ॐ
 यद्वती ॥ ॥ ॐ समुद्रं

ॐ ह्रीं लिलह्यमक्ष ४ यना
 यंतीति समाना ॥ ॐ ह्रीं
 वजीवृषणा नवाह आधाद
 वीप्रहृमाह वनु ॥ दक्षिण
 ॥ २ ॥ ॐ आधादिष्टा ॥ वधि
 म ॥ ३ ॥ ॐ विष्णु वनाह म
 सि ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं
 ४ य विषद्वुनक विद
 सधागावदिषदतिथिद
 लानसमृषधनमदगस
 यामसदकारं ॐ गजा
 सिताजमदजालिगंवृतां ॥
 आ ॥ ५ ॥ ॐ सामा
 नाजति ॥ नमृय ॥ ६ ॥ ॐ
 विष्णुतयु ॥ वीयवा ॥ ७
 ॥ ॐ नार्या आणीति ॥ ८
 गहन ॥ ९ ॥ अधपूर्वस्व
 स्वमकुग ॥ गतधनस
 हसुधा वस्तान ॥ १० ॥ वसा
 ४ य विगमसि ॥ मृषादक

स्तानं ॥ ॐ ह्रीं निमीषा ॥ ११
 वस्य ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं नमृ
 ॥ गतधनसहसुधनय
 था गकिस्तानं ॥ १३ ॥
 गतिविमिस्तुला ॥ ॥
 धनविद्वय ॥ १४ ॥ ॐ सद
 सत्यति ॥ वीदि विद्वय
 न ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं
 विद्वय ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं
 ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं

अथविग्नकमायुजन
 ॥ अथनादि ॥ अथल
 मलायुजायाय ॥ १
 विग्नकमरुविषाव
 दसामनगामात्रमि

वमरुणवधसुतमेवि
 ग० समनमकयुद्धायथम
 याविहवायथासुता॥दिकि
 भविष्य॥का०१॥७॥विष
 कमीनममुखंरुलाकांरु
 धिकानक१॥यथायुधक
 नात्माविविधकमीनभा
 युता॥अ०कलमलाकाय॥
 क०त्रिकाय॥अ०कलनवक
 ग॥दकिलन०॥७॥य०अ
 कि०वधमन्यवयनिय
 निता०अ०वाचनवाच
 नादिधि॥॥वामन
 ०॥७॥य०अ०कि०न्यामाका
 मारुवीविषकसात्रथ
 सोनाधुमनृवाहसा॥च
 नलेनेयन॥७॥मानका
 क॥का०यलनवायक॥
 वन्दनसिंसिद्वनसुगम
 क०आ०न०॥म०लजाय
 ॥का०यदवानुनृधनय०

३॥॥दवसुत्वा॥क०ग०द
 कनीसिवन॥७॥दकिलवद
 वस्य०दवयंत॥७॥मद॥
 वययकमनृता०सूधानन
 दुंवा०गुरुवासा॥७॥दवद
 क०द्वीन॥७॥वथेगि०नय
 गिवाजन०य०वाययय
 कामय०गु०वा०न०वि०अ०रि
 ०सूनादिमानंयनायत
 मनय०अ०द०नृय०क०नि०
 मय॥व०का०व०थ०नि०धाय
 ॥ग०क०ज०वा०य०व०लि
 दशा०॥७॥य०अ०रु०य००
 ०॥॥गी०त०वा०य०रु०य०रु
 नी०ग०ख०व०नि०व०द०सु०रि०ने
 यो०ग०वि०धाय॥न०ग०ले
 वाम०गु०य०मा०व०य०वि०या
 म०॥७॥य०अ०य०ल०म०रु०॥
 त०ग०ने०म०रु०द०न०य०व०ती
 द०य०न०ला०को०य०वा०ले०क

त्वा॥ ऊँ ये मान न सा जा न
 य न॥ चा क्क (न त्वा नि वा
 च न य ॥ ००॥ म पु य य व म
 य ॥ ॐ ॐ द वि व नि य
 वा शि ॥ ॐ आ मा र डे नि शि
 ह ग व क र ड वी ० स्था य नि
 क्क य थ ॥ क ग ले म (ध ॥
 ॥ अ थ क न वा सा दि ॥ अ
 ध य च वृ ज ॥ ग शि क ल
 ग वृ ज न ॥ ॐ न म ४ ग शि
 वा य च ॥ ॐ म वृ क वि मि
 द वृ ग शि य नि व म य
 ॥ ॐ का धा म का लु दि मि
 व सु य नि वृ थ ॥ ॥ ग ॥ १
 ध य च गृ ह ण कृ तु मी
 य ग ल ॥ ध व य न वृ ग
 वृ थ न ॥ ॥ ग ॥ ४ ॥ अ ध
 न ॥ य थ म (अ ध न ॥ ॐ
 ह ४ वा ॥ ॐ ॐ द वि व
 ४ ॥ ॐ ह ४ वा ॥ ॐ न म
 ४ ग शि वा य थ ॥ शि ग

त्वा (अ ध न मि मि ॥ ॥ य ॥ १
 द व स मूल म कृ ण (अ ध य
 ॥ ॐ द व स मूल म कृ ण (अ ध य
 ॥ द व स मूल म कृ ण (अ ध य
 ॥ ॐ न मा ना वा य ध य
 वि म कृ मा ध वा स धी म दि
 म ना वि म कृ य धा द य म ॥ ॐ
 मि ग य ग ॥ गि ग त्व ३ ॥ य
 च ग त्व ३ ॥ अ ध गि ग त्व ३
 ३ ॥ य च वि ग गि ग त्व ३
 ॥ य वि ग गि ग त्व ३ ॥ ना ना
 य ध स मूल म कृ ण ॥ ॥
 ग ना द व द व क्क य ॥ ॐ थ
 नि क ल य ना य स ॥ ॐ क
 क य थ य नि न मि ॥ ॥ अ ध
 म गी धा त्वा ॥ ॐ व म कृ न म
 कृ ना द वा व स व कृ वृ ता कृ
 ता ध न थ कृ ण ग कृ सा कृ
 वि नि कृ व थ द ध ॥ ॥
 वी थ य द न ॥ ॐ न मा म कृ
 मि कृ हा मि थ नि य वि ग
 दि दि य ॥ ग कृ जि वा य ध
 वृ त ड ल कृ हा मि कृ न ना ॥
 ॥ न का य द न ॥ ॐ ल कृ

ओं संमदा समवगा ॥ यच्च
 आयवद्यासंजघासचोगात
 अवेदवक्षु ॥ ॥ आआरु
 मि ॥ ॐ वक्षयज्ञानं ॥ ॥ ॐ
 नामकलधयस्वाहा ॥ ॐ
 कायस्वाहाकस्मेस्वाहा ॥
 ॥ यथादवस्यनामलित्वं
 घृणंदय ॥ आचमयदवं ॥ अ
 मरुति ॥ ॐ व्याधयस्वाहाया
 मयस्वाहा ॥ ॥ संविधि
 निहवत ॥ ॐ रुलयागता
 यस्वाहा ॥ ॐ याडाषधीकुंजां
 वृजागादवस्यस्मि यगंयना
 मनीतूनजगंमह ॥ गार्ग्य
 मानिसयाव ॥ आआरु ॥ ॐ
 या ॥ रुलिनी ॥ ॥ ॐ अन्तया
 गनायस्वाहा ॥ अत्रयागुहव
 नतयंयसंयक ॥ ॐ न
 वविथगविद्ययथादवारि
 घागथा ॥ ॐ ययह ॥ रुविद्यन
 ॥ स्वाहा ॥ आचम्य ॥ ॐ कृपया
 दिवा ॥ आआरु ॥ ॐ अन्न

वगा ॥ ॥ ॐ कर्तुं दायस्वा
 हा ॥ ॐ वक्षयस्या ॥ आआ
 रूति ॥ ॐ रुदकधुति ॥ ॐ वृ
 षकलधयस्वाहा ॥ ॐ अया
 (नति ॥ वाकुरुनिह्वय ॥ ॐ
 वृहस्यगच्छदवसि ॥ आअन
 ॥ ॐ मूर्ध्नातंदिवा ॥ ॥ ॐ व
 गवंधनायस्वाहा ॥ ॐ अय
 स्वायास्तुवगायाजागवगानु
 विथ ॥ सामयिथासमगन्
 प्रयासात्वयि ॥ सहनीवा
 यगं वगानुमदीकादी
 कायतिमेवतामनूकयसु
 यस्यागि ॥ ॥ ॐ देवासंज
 (धेवास ॥ ॐ आवायवा
 स ॥ ॐ महवामंयययधन
 आवायवास ॥ आनिधायहि
 यासाहवामह ॥ ॐ यवासु
 वासा ॥ यनिवीग ॥ आगाग
 सुड ॥ (यथास्वतिजायमान
 ॥ गंधीनास ॥ कवयडनयकि
 स्वा ॥ (धामनेसायवयक ॥
 ॥ ॐ ममलावधनायस्वाहा ॥

बाह वसनान्निदिभञ्जित
 यनमानमावृकथाहनि
 क(ग)स्य४यगुन्नायेनयन
 मानम४गधिउरनायति
 वीमनयथीनायनयनमा
 हनिकगुथायवीगिनष्टं
 धृष्टनायनयनमानम४
 स्वाहा॥ ॥मालात्पुष्पा
 नं॥ॐआकृष्ण॥अनिनीय
 दानं॥ॐअन्नात्यनिष्ठता
 ॥ ॥रुहिनीयदानं॥ॐ
 शगात्रमित्द॥ ॥पासा
 दधिठिनी॥ॐयजायमन॥
 ॥शुष्ययदानं॥ॐगववायू
 वृहत्या॥ ॥ॐअयादि॥
 श्रीअकनकतानायथी
 लक्ष्मीदेवीकन्याउत्तमरु
 संयदद॥ ॥आयाकृति
 ॥ॐगंयतीरिनलूगकमय
 वायूयुगोदरिनूगहिन
 ल्पेताकंगरातासुकनस्य

लाकृतायवृक्षमधिलाव
 नदिव॥वंदाननञ्जाय॥गु
 लयकनगञ्जायरुंजिआवि
 या॥ॐगिनिवाहा॥त्रुथी
 ॥ॐशुभ्रकंजजामरु॥ॐ
 गिधवदंजियाविधि॥

यथायवस्यमूलमनुजदग
 म्वायश्चत्वारिंशोदृति॥आ
 शकृति॥ॐयनकूनस्यवि
 ष्ण्याविनसिन्नुदाययु
 धिवीजावदान॥यामेनय
 धनमसिस्वधारिसामधी
 नासाअनूदयजयकथा
 कधीनासादयद्विषगाव
 धासा॥अथजीवनास॥
 यवसुगं॥अधनं॥ॐवाव
 कृष्णमिष्टाकृष्णमि
 वकृष्णमिष्टाकृष्णमि
 धामिनारिकृष्णमिष्टा
 यकृष्णमिमधकृष्ण
 मिष्टमिष्टाकृष्णमिष्टा

धियायसदागिवायसाहा॥
 ॐ नमस्तु नृपय ॥ ॐ गियेच
 तत्तयास ॥ ॐ हस्वाहा॥
 ॐ उव ॥ ॐ स्व ॥ ॐ ह
 ॥ ॐ मरुतासाहा ॥ ॐ जनसा
 हा ॥ ॐ गये ॥ ॐ सत्य
 साहा ॥ ॐ रुवसीगि ॥ ॐ आ
 कृतिस्वा ॥ ॐ सुकसृषय ॥
 ॐ तिसकं वन्यास ॥ ॐ नि
 वातायसाहा ॥ ॐ निवत
 ताधियायसदागिवाय
 साहा ॥ ॐ नमर्गुवायवा॥
 ॥ ॐ विद्यातायसाहा॥
 ॐ विद्याताधियायवि
 श्वनमंसाहा ॥ ॐ ॐ दं वि
 श्व ॥ ॐ विष्णु आत्मात्वा
 यसाहा ॥ ॐ आत्मात्वाधिय
 तयवम ॥ ॐ साहा ॥ ॐ वक्र
 अहानां ॥ ॐ तिसिगर्वासा
 ॥ ॥ यथायवममूलमनु
 लगांवासहस्रवाकृत्वा॥
 गयगीमनुताआकृति॥

यवविगतितात्ता ॥ अरुणिगति
 कला ॥ गयगीमूलमनु ॥ ॐ
 तिसिगर्वासा ॥ ॥

गतावदयासे ॥ ॐ हदया
 यसाहा ॥ आआकृति ॥ ॐ
 जजायता ॥ ॐ निवससाहा
 ॥ ॐ सहसगीषा ॥ ॐ निवा
 येसाहा ॥ ॐ अह ॥ ॐ संहतां
 ॥ ॐ कवचाय ॥ ॐ साहा ॥ ॐ
 आगु ॥ ॐ निगता ॥ ॐ नगय
 साहा ॥ ॐ विगदृहता ॥ ॐ
 अमोयसाहा ॥ ॐ नमस्तु
 नृपय ॥ ॐ गयगीमूलमनु ॥ ॐ
 तिसिगर्वासा ॥ ॥ ॐ रु
 ॥ ॐ साहा ॥ यथायवसवद
 ॥ ॐ उव ॥ ॐ साहा ॥ यथाय
 वसवद ॥ ॐ स्व ॥ ॐ साहा ॥
 यथायवसवद ॥ यववा
 दगम्वद ॥ ॐ वृष्टादवि
 यत्रायता ॥ ॐ गिदव ॥ ॐ
 धनं ॥ ॥ ततायवसमी
 यगता ॥ अयवायं गृहीत्वा

५४२

[illegible]

अथमहाद्यादिसंस्तुता
 लुनगतामितादुतिदमाता
 यथायवस्यमनुसाद्यादुति
 ॥ १ ॥ तामायथायवस्यव
 तावतां ॥ ॐ अयादि ॥ अथ
 यथायवविप्रिताकालय ॥ ॥
 तथेकादशीवतायापनकाले
 विगेषदागसमिधक्षमअ ॥
 मूलावायव ॥ ॐ कगवाय २
 ॥ ॐ प्रिय २ ॥ ॐ लक्ष्मी २ ॥ वर
 वृद्ध ॥ ॐ यजायानतवदगति
 ॥ १ ॥ ॐ नावायव २ ॥ ॐ वा
 गीय २ ॥ ॐ सनस्य २ ॥ वन
 गता ॥ ॐ अथसुवा ॥ २ ॥ ॐ मा
 धवाय २ ॥ ॐ काक्षी २ ॥ ॐ दाक्षी
 २ ॥ इवना ॥ ॐ उदस्यजागवा ॥
 ३ ॥ ॐ गविद्याय २ ॥ ॐ क्रिया
 य २ ॥ ॐ काकाय २ ॥ यलाग ॥
 ॐ मंदवा ॥ ४ ॥ ॐ विष्णुव
 ३५ २ ॥ ॐ लक्ष्मी २ ॥ ॐ माताय २ ॥ अ
 यामा ॥ ॐ उदस्यजागवा ॥ ५
 ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः ॥ ॐ धृ

५
 ॥ ॐ अथसुवा ॥ ६ ॥ ॐ विवि
 माय २ ॥ ॐ लक्ष्मी २ ॥ ॐ अता
 काय २ ॥ तदिना ॥ ॐ अमिर्मूला
 ॥ १ ॥ ॐ वामनाय २ ॥ ॐ धीति
 २ ॥ ॐ अमीय २ ॥ समि ॥
 ॐ गताय २ ॥ ६ ॥ ॐ धीधना
 य २ ॥ ॐ नक्ष २ ॥ ॐ धृ ॥ क
 गवा ॥ ॐ धीधुता ॥ १ ॥ ॐ द
 वीक ॥ १ ॥ ॐ मायाय २ ॥
 ॐ माहिताय २ ॥ वेक ॥ ॐ
 विमद्वर ॥ १० ॥ ॐ यदना
 काय २ ॥ ॐ धीमताय २ ॥ ॐ धर्म
 दाये २ ॥ तासिदाति ॥ ॐ सैन ४
 सिधुवसि ॥ ११ ॥ ॐ दामादना
 य २ ॥ ॐ महिमाय २ ॥ ॐ मति
 माये ॥ इव ॥ ॐ काक्षी २ ॥ १२
 ॥ ॐ तिसमिधदुत्यकागीव
 तथगिष्टाविगेष ॥ ॥ ॥
 १३ ॥ ॐ गविद्याय २ ॥ यथायव
 तयि ॥ महाद्यादिसंस्तुता
 कृता ॥ १४ ॥ ॐ यथायवस्य
 वतायापनसंस्तुता ॥ ॐ

वृक्षं वदित्वा पातसंघं ॥ वृ
 क्षं ॥ ॥ गगनयजमानदव
 र्धयस्सुगंधत्वा ॥ शिखरं नवी
 आकृति ॥ ७४ ॥ लाजायुधि
 सरुना ॥ उं मनादृति ॥ अति
 ष्टा ॥ ७५ ॥ विवायतिष्ठ ॥ वति
 यतिष्ठ ॥ अकृत्वा ॥ गगनवक्त्र
 दिवन्नामी ॥ गगनआकृ
 ति ॥ यथागमसंस्थादृति ॥ ना
 जायगयजमानआवाय
 नमयागिलादृतिदयादा
 आकृति ॥ वाआदिकृत
 कलंकदण्डगलसर्वयागि
 लादृतिव्याआकृति ॥
 गगनआकृति ॥ ७६ ॥ अ
 कि ॥ यद्विकादृति ॥ उं शु
 चकं यजामह ॥ नमसर्वआ
 कृति ॥ दण्डयाठिदण्डवलि
 दयाग ॥ गगनदण्डवलिदृष्ट
 न ॥ निवावायता ॥ ॥ वा
 कृष्णदिहं यमासनरुका

धादिष्टुजा ॥ ॥ गगनवी
 हीक्षामी ॥ उं यवधान
 लाजा ॥ समिध ॥ यायस
 गुणयत ॥ द ॥ ध्याधन ॥ जा
 मीन ॥ धीरुत् किम्यना
 लिकलवदलीरुत् ॥ अ
 यधीगुष्टुआदिगिरुत् ॥
 शिकधारुमजयुथकं
 लयदकं गलसमधव
 गगिलनकगिलगगय
 धिर्गुं गुं गुलवत् ॥ न
 कं कं मस्कंधमूलरुत् ॥ ग
 मूल ॥ यकान ॥ इद्वीक
 ७७ ॥ दूदमिष्टानुक्षमये
 ग ॥ अष्टवीही ॥ सादा
 ने ॥ गगनवलि ॥ यदाती ॥ उं
 गगनवलि ॥ उं अष्टमूलि
 क ॥ उं आनानियुहि ॥
 उं दृगंधुग ॥ उं उरुधि
 वगमं ॥ उं अष्टगानुक्ष
 ॥ उं विष्टुग ॥ ॥ उं

नमो वक्रगया ॥ ॐ असंख्य
 गा ॥ ॐ अथ वाच ॥ ॐ अ
 चोदि (ग) स्वाहा ॥ ॐ तिष्ठ
 जतं ॥ ॐ द्वादश गला क
 यालसर्वदवा नैव अ
 दिद गतं ॥ ॐ अतः पायि
 ति ॥ ॥ पूजने दवा दीन
 यथ यथ वदत ॥ वाक्
 भदि अतः संकल्य ॥ अ
 द्यतं ॥ ॥ मूलाया
 द्या दिष्टा दीपवृत्तिका
 हामा अक्षरानगाष्टा
 द्वातिंशु द्याता ॥ ॐ अ
 वं वाचं यथ अत्रेक्ष (ग) ॥
 मना यश ॥ यथ असा मया
 अथ यथ वद (ग) ॥ यथ यथ
 वा (ग) ॥ ॐ सहीयामयिषा
 मया (ग) ॥ १ ॥ यतः द्विद
 वद सा हृदयस्य मनसा वा
 तिदं पुं वृत्तस्य तिभिर्देवैर्द
 वा ॥ गतिं तव पुं वृत्तस्य

यस्य तिष्ठ ॥ २ ॥ ॐ मयश ॥
 ३ ॥ कथानधिगम्य वदती
 सदा वृद्धं सत्त्वा ॥ कथासविष्ट
 यावृता ॥ ४ ॥ कल्पासत्त्वा मदा
 नाम ॥ हिष्टमत्सदं सद्दृष्ट
 विद्यापूजवसू ॥ ५ ॥ कंथां
 त्वं पूजयन्तः सत्त्वा नाम वि
 तां निष्ठं गतं रवात्यत
 या ॥ ६ ॥ कथास्त्वत्तद्व्याहि
 यमं द (ग) वृषत ॥ कथास्त्व
 द्वा अक्षरानगा ॥ ७ ॥ ॐ द्वा
 दिष्टस्य वाजति ॥ गत्वा वि
 पूनूक म ॥ ८ ॥ गत्वा वा
 त ॥ यवता ॥ गत्वा संकल्य
 स्य ॥ गत्वा कति कदं द
 व ॥ यज्ज्या अरि वर्य ॥
 १० ॥ अक्षरानि गतं वदन्तः ॥ ग
 ११ ॥ गीतं गीतं गाम ॥ गत्वा
 ॐ द्वा गीतं वता मनो रि ॥
 गत्वा ॐ द्वा वदन्तः वात
 या गत्वा ॐ द्वा वदन्तः वाज

सोमोसमिन्दासामासविना
 यगंथा॥११॥गन्ताददी
 प्रसिद्धयथायाहवतुयी
 तथागंजाप्रसिद्धयवतुन
 ॥१२॥स्थानावृथिवीनारु
 वानुक्रनासितिवगतिथ
 कन०गम०प्रथ॥१३॥
 आयाहिष्टामयाउवका
 नडऊदधगत०मरुवध
 यवकस॥१४॥याव०गि
 वतामावसकस्यराजय
 गहन०डगातीनिवमात
 व०॥१५॥गसा०गमा०मवा
 यस्यकयायजित्वथआ
 याजनयथवत०॥१६॥
 ओ०गम०किनीनिद्र०ग
 कि०वृथिवीगमकिनाय
 ०गमकिनायधय०गमकि
 वनस्यमय०गमकिविष्ट
 दवा०गमकिवृक्षगमकि
 ०सर्व०गमकिनिगमकि

अवगमकि०सामगमकिप्रधि
 ॥१७॥दो००हमामिगयमा
 वदयासवीनिहगातिस
 मीकगातिस०मिगयहंवे
 कसवीनिहगातिसमीक
 ०मिगयवदयासमीका
 मरु॥१८॥दो००हमाय
 क०गि०जीवा०गि०क
 गि०जीवा०गी॥१९॥न
 मरुहवससाविषनमरु
 अस्तुविषाअयासअसा
 रुवतुरुतय०यावका०
 सय००गिवाहव०॥२०॥
 नमरुअस्तुविषातम
 सतमयिनव०नमरु
 रुगवतुसुय००स्व०स
 मीरुस॥२१॥यगा०या००
 समीहसगानाअरुय
 क०न०गि००क०वृक्षजाया
 रुय०न००युय०॥२२॥स
 मिष्टिथानआय००वधय

गतुद्रुमिनिआंगसीमनुआ
 स्मान्दद्वियचवयदिष्वा॥२३
 ॥ गच्चद्रुद्विगंदूनसा
 गुकमच्चनत्यागामगनदस
 तंजीत्रमगनदगात०गृक्ष्या
 मगनदसंगंधवचामिगन
 दगातंमदीनास्यामगनदग
 तंरुयग्रगनदगात०॥२४
 ॥ ॐ श्रुवंचाव ॥ ॥ गग ४
 यायश्रिक्तुलामं ॥ ॥ ॐ र
 ०स्वाहा॥ ॐ ०० दं ॥ ॐ कुव
 ०स्वाहा॥ ॐ ०० दं ॥ ॐ स्व ०स्वा
 हा॥ ॐ ०० दं ॥ अ० अ० न० ॥ ॐ
 यं वं नू० ॥ ॐ त्वं त्वां अं
 त्वं वं मं ॥ ॐ मं यमनकृष्ण
 यस्याग॥ यचवा नू० ॥ ॐ
 त्वं त्वां अं त्वं वं नू० ॥
 ॥ ॐ स त्वं त्वां अं त्वं वं मं
 रं मं ॥ ॥ ॐ अ० या० अ० न
 स्यनरिगमि॥ ॥ ॐ अ
 मंगरा॥ ॥ ॐ ॐ दं रं मं

वदूयाग॥ सागपूर्ववरा॥ ३॥
यथमनकृष्ण॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हि॥ ॐ याहिनाअ॥ मनसखा
हा॥ ॐ याहिनादिवदसखा
हा॥ ॐ यं हं याहिनां विलाव
सखाहा॥ ॐ यं हं सर्वयाहि
नागकगीखाहा॥ ॐ नून
सखाहा॥ ॐ नूनानिनि
कांशहामिखाहा॥ ॐ नूति
मिकांशहामिखाहा॥ अनो
हागयदाहं गतस्वकि
यागमम॥ सर्वगदा॥ नीक
त्यतिविहितगियदादिन
॥ खाहा॥ वक्रिगयगी॥ ॐ
वैष्णाननायविमरुअन
नाय॥ धीमही॥ तत्तावक्रि
॥ यथादथा॥ ॥ ॐ दव
कगस्थेनसावयजनमसि
खाहा॥ ॐ मनसकगस्थे
नसावयजनमसिखाहा॥
ॐ यिदकगस्थेनसावय

जनमसि स्वाहा ॥ ॐ आत्म
 कृतस्य नमः सावय जनमसि
 स्वाहा ॥ ॐ जनसा जनसाव
 यजनमसि स्वाहा ॥ ॐ य
 ब्राह्मना विद्वांश्च कालय
 ब्राह्म विद्वांस्यसर्वस्य न
 सावय जनमसि स्वाहा ॥
 ॐ हनमये च वृषिब्रुव
 मरुता स्वाहा ॥ ॐ शुभ्रावा
 यवचाक विद्वायमरुता
 स्वाहा ॥ ॐ स्वः सूर्या यदि
 वमरुता स्वाहा ॥ ॐ ब्रुव
 ४स्वः ४वृद्धमसं तकाणां
 दिव्य ४यजायतमरुता
 स्वाहा ॥ ॐ ब्रुयत्तु
 धाअनिप्रनिदवमवा
 गाय स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 यववृजि द्वा निवधाना
 य स्वाहा ॥ ॐ विष्णुकिञ्च
 क्ववृषयसायानिसाम
 दवगवा नाय स्वाहा ॥

ॐ यद्यकिञ्च वृषयानि
 वायुदेवाऽऽनाय स्वाहा
 ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 वृषयदेवा समाना य स्वाहा
 ॥ ॐ अनुयागि अवाकति नंज
 तयत्रैव क्षममृगा विधा
 नाय स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 तनमः ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 या अ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
 निवर्तस्वा ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 या विष्णुयन्त्रा विष्णुयस्य
 नि स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 धाननामसि ॥ ॐ अग्निद्व
 वा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॥ अवधानादि ॥ यीयवृकि
 कां वल्लानि धा यवलिह
 नर्ण ॥ निवद्वानि अवा
 य ब्राह्मणादि दक्षिणां
 न ॥ यावर्त ॥ वक्ता ॐ ॐ ॐ ॐ

वासुदेवविष्णुदत्ता ॥ ॥ गंगा
 दिनशुक्लकृत्तिकालय
 ॥ ॐ शुक्लपञ्चमिनाथ
 गति ॥ ॐ आश्विनसप्तमि
 ॥ ॐ हिमसाता ॥ ॐ अथ
 माद्वितीयाक्षय ॥ ०७ ॥ ग
 तआसंसाय ॥ ०७ ॥ ॐ मनु
 र्थ ॥ सनुकलगलुल
 त्यादि ॥ जायमगुलसा
 ॥ ॐ ॥ ॐ मृगदायस्थिति
 ॥ ॐ नकागुका ॥ ॐ त्यादि
 ॥ ॐ यद ॥ ॐ यययक
 वसंस्तुति ॥ ॐ शुद्ध ॥ गक
 ॥ ॐ यदस्ययावतसुखा
 कनविद्रवृन्दगधर्वव
 मयनिगीतनिगातकी
 ति ॥ आगदुवदिरास
 दादयस्वत्रयं यामा
 दनुशुवनवृयधनमस
 ॥ ॐ यावदीया ॥ ॐ ॐ द्या
 आलाकयाल ॥ यदियाय

क
 स्य ॥ सनुसनुनिर्गत ॥ ॐ
 ग ॥ विनि ॥ सनुसनुता ॥ ॐ
 तिसागं ॥ ॐ ॐ दं विष्णु
 नि निधवागी वीदी ॥ ॐ
 आजिद्यनिकलगणीवा
 दं ॥ ॐ अनिमृषिनि ॥ अ
 निनागी वीदी ॥ ॐ स्वलि
 ॐ द्या ॥ अथ याशदक
 नावाया विष्कं ॥ ॐ य
 ददक निवदनी ॥ ॐ य
 स्यकृमा ॥ आवायागी
 वीदी ॥ ॐ गनुया ॥ नसीनि
 ॥ नकाकनर् ॥ ॐ आ
 यषमिति क ॥ नविस्
 तिलकं कालय ॥ ॥
 यजमाना विष्कं वाच
 नमदकन ॥ चन्दनादि
 ॥ आगी वीदी दं दं दं ॥
 गामुला वायनिचासा
 दि ॥ अद्विदया ॥ ॐ
 स्वस्तिवाचनं ॥ ०७ ॥ ॐ

निदिनस्य कर्मविधिः॥

गगनाय जगन्नी ॥ द्या
 स्वातंत्र्य ॥ धर्मवृत्त्य
 गीतस्य द्यायात्तमं गतं
 ॥ ॥ रुच्रीमृगं दंगसंय
 कं नारी जगन्नी क्रिया
 । यदि निद्रावशाजगत्
 दृष्टति भवती ॥ गुण
 गुरुनृपयत्नमकिञ्च
 क्रियते पुनः ॥ अनन्तवि
 दानन्तमनुजायेकका
 लयग ॥ ॥ ध्यान ॥ च
 उदुजोचउदुकागर्व
 चकगदाजितं ॥ कलुप्त
 (धृष्टिगंधायगउदया
 कसमयत्नं ॥ ॥ निध्या
 नं ॥ नारीकर्म ॥ ० ॥

ततश्चातश्चात्तदीनि
त्यक्मकालय॥ अतः

वा दय कालं ॥ मूल चार्थ
 षयुश्चरुज नादि ॥ न्यासं का
 लय ॥ गुरु सनर्ग ॥ त गुरु
 द्वे द्विभानमयुर्वेदनादि
 कलगाचनं ॥ दिविदिक्
 लगाचनं ॥ यूर्ववत ॥ च
 उल्लोकयालाचनं ॥ ग्नीकि
 कयदिक ॥ वासु ॥ अमु ॥
 लक्ष्मी ॥ नाग ॥ अक्षयकुली
 ॥ धीलक्ष्मी ॥ गमयति ॥
 ॥ सुखिलादि ॥ यूर्ववत
 मनयुजनं ॥ ॥ गतायुज
 मानमयवगिलादनादि
 यूनयग ॥ दागवा ॥ न्यासा
 दि ॥ आदिति ॥ दगयक्षु
 यं वा ॥ यूर्वाकमभादिति
 यूर्जनं ॥ दद्यात् ॥ नाजादग
 ऊजमानायाश्चनक्षु
 कनं कनगयागिलादिति
 दद्यात् ॥ यथैदवस्यव

गार्वनं॥ अ० अ० द० ति॥ ५४
 ॥ व० य० ति० ॥ अ० अ० द०
 ति॥ १४॥ भ० ति० का० द० ति॥
 द० ति० का० द० ति० ॥ भ० ति०
 द० ति० क० न० व० गी० य० ति० ॥
 अ० द० ति॥ ७४॥ ला० जा० य०
 ति० का० स० ह० ॥ उ० म० ना० द०
 ति॥ ॥ उ० अ० ० भ० ति० ० ॥
 भ० का० द० ति॥ वी० रि० ह० म०
 ॥ य० व० द० या० दि॥ व० लि० य०
 दानं॥ उ० ग० भ० त्वा॥ दू० व०
 व० ॥ वा० द० न० य० उ० न० ॥ दी०
 य० व० रि० का० द० म० ॥ उ० य० व०
 वा० व० य० ० ॥ या० य० यि० रि०
 ह० म० ॥ अ० अ० न० ॥ य० च० वा० न०
 न० ॥ व० उ० ० या० ह० या० दि॥ भ०
 का० द० ति० य० य० क० ॥ ॥ भ०
 जा० य० य० न० म० ॥ उ० न० जा० क०
 का० ति० यि० य० मि० ति० मु० ति॥
 व० लि० ह० न० र्ग० ॥ वा० द० न० य० द० ति०
 भ० दानं॥ उ० वा० व० य० न० य०

नां

ति॥ सं० य० व० द० य० न० ॥ ५
 य० य० ग० न० ॥ उ० म० मि० रि० य० न०
 ति॥ य० रि० गी० रि० य० क० ॥ य० रि०
 उ० ला० उ० अ० य० अ० य० त्वा० वा० रि०
 व० ० न० स० न० स० म० स० ग० रि० ॥ य०
 य० त्वा० न० न० अ० ग० म० क० म० स०
 ० स० ज० व० य० स० य० ज० य० व० य०
 न० न० च० ॥ य० रि० ग० म० व० न० ॥ व०
 क० म० य० द० य० य० य० द० ति० भ० द०
 त्वा॥ ॥ ग० ० स० द० य० द० ति०
 काल० य० ० अ० म० क० व० ना० या०
 य० न० य० क० स० द० य० द० ति० स० म०
 द० क० म० स० ॥ द० वा० म० उ० रि०
 द० म० उ० रि० त्वा० म० उ० मि० न० ०
 म० न० स० स० गी० ० म० द० व० य० क०
 ० स० वा० वा० न० य० स० वा० ॥ अ०
 ० य० य० का० ० अ० न० न० का० य०
 सं० य० ॥ उ० अ० य० य० स० स० म०
 उ० रि० यि० न० ० स० म० व० य० ॥ र०
 वा० वा० य० य० स० स० ग० ॥ य० ॥
 उ० सं० ग० य० य० स० स० म० य० न०

कामसमर्पयन्तु स्वस्व
 ॥ ॐ ह्रीं मन्त्रं जलायुग्म
 लयलिययामसि। उगः
 दहिनां उवा निद्वेषां उरुय
 उंसीरुदहिनां उवानि
 द्वेषां उरुयजं ॥ अतिकीद
 निवृत्तनयं दृष्ट्वा ४ गिनि
 नागमग। अजागं गिं वक्त
 वृणं धृष्टदयं मम धृष्ट
 ॥ विष्टनैवतं वक्ता कां गि
 नजागवदकामायु। मां ध
 वक्तृगं धृष्टनमस्तु तव
 ॥ विष्टकलादिगयी वक्त
 वृवर्तुनमास्तुग ॥ अविक्त
 नहि वक्तृसां तासां गवस्था
 मय्यथ ॥ ॐ दुष्टुर्गद्वेषा
 उवृत्तनमस्ति विष्टुग ॥ ग
 वानिधनं आनृजयत्वं
 कृतं जसा ॥ काये लंटी सर्व
 लीकीं वानिधनं कयेवतं
 । वनृष्टवसां क्रमिमेमयुर्गं
 धनकसि। यावदादित्यस्य
 तियावदाजमवदुमांश्या

वदतां प्रवाजिता वङ्गी
 वत्वया सह। यनकं प्रका
 थलभाहमां न जीवति
 । यथामयका नां य
 जीवति स जीवति ॥ एक
 सरुत रुक्तं न द। गतं स्व
 विष्टतं गृथिती लं उय
 मानं त्वकं कृयलद। उ
 न ॥ ॐ समहि वक्ता
 ४ रुविद्या घृत्तं न समादि
 खेव सति ४ स म नृदि ४ स
 मिन्धा विष्टद्वेषां विष्टका
 दिष्टं तलां गद्वुयखाह
 ॥ ॥ ॐ ह्रीं दवाटनक
 ॥ यथमेतकं ४ यति
 सुनलकं ॥ अष्टुतां न स्वा
 रुति रुद्रया ॥ ॥ ॐ
 नवमं गृहीत्वा ॥ ॐ अम
 सन्ता ४ सन्तु कलन
 सुलुलवैष्टनना दि। य
 वता ४ सयाता वनदा रुवतु
 उत्र ॥ गवाक्ष ॥ १ ४ गुरु
 रुवतु नाजा धर्म विजयीत
 वक्तुर्धमा स विन ४ रुय

गद्यरादयामुक्तमप्रजमा
 मस्यसंगद्यनिवासाभा
 यनलीयमेवयजनधन
 मेलकोसंगतिसंगानवृद्धि
 नमु॥ द्विपदप्रुष्टयदस्य११
 संश्वउ॥ सर्वसत्वातं११ सुवि
 नसु११ यज्ञं वां कालयधीरु
 वडासर्वविधियनिष्टुम
 मु॥ गभाकाकुरुलसंथाकम
 मुअमकनाकु११ जययगाप
 वृद्धिनुमु॥ ॥ मलुलसा
 ७१॥ ॐ नमो अस्तु ॥ ॐ न
 जायंत्वातिविश्वरुक्
 लखरुन्यावकंरुष्टुव१
 स्व११ सर्वार्थवाकविश्वमति
 जननमि तंराखनंगकिरु
 र्ना११ जो अखगनासाकन
 कमधिकवंगुक्कसुक्ष्मागिष्ट
 क्षं वन्दवधुअकं र्गुंरुव
 र्ना॥ ॐ अष्टवदायस्ययादाय
 रुनयत्रयद११ सामदा११ थरु
 र्ना११ काथव्रीदिगीयंगराय
 थवदन्वाक्षगं वृक्षधाय॥

गायत्रीयुगलं नयनमयनिष
 (कुण्ठं मे) धेवदंष्ट्रविष्णुचक्र
 नमूर्तिरुवयतिवदन्तं यरु
 नूयीवनाह॥ नकाधुक्काति
 कृष्णशियथयदगागुमि
 दद्यादिमागतात्वाणीविष
 कानात्त्वमयिर्जवेननीणिनि
 कालयवधा॥ वदामागासुग
 र्ना११ विष्टुवतुवतागिष्टका
 नोसमसादवीसंस्थासुवृथा
 ११ निर्वोसजयगुजगतानिष्ट
 नूयागिवात्मा॥ ॥ यथय
 रुषं संछादिलिविधिलिवा
 संछिगादवगायाकृ११ वृवा
 वक्षिमध्यकलगायनिगता
 मलुलुलिलवा॥ ११ सर्वसक्तु
 दवाअलिमाकुरुलदामलु
 र्ना११ तावतुयामुदामला
 विहीनायजनयनिविधि
 कीनदायाकुरुसु॥ ॥ य
 कल्लाखवनर्त्तनसतिविष्टु
 ठिकायादूकाखवनर्त्तया
 गालदिवासिद्धि११ विष्टुवत

सहितादिश्रवित्तमविश्रान्ति
 सिद्धिं श्रावधीनायनयुतुवि
 शिष्यनंगमूदंमनुवायेवेद
 अथयसादात्मरुवगुरुवगा
 मन्तिवप्रसन्नो ॥ ॐ ह्रीं
 लाक्यालाःस्वस्वैसदिगव
 सिताःस्वस्वमूदस्वयकाश्र
 दित्यादिप्रहंमवसन्तिउवि
 सदाजसयत्राःस्वयकाःमृ
 कायासस्वतिथ्यागलुगुनू
 वदकाःस्वस्विलमाहकाश्च
 सिद्धिंश्रयादयागुरुवकु
 वसुमतीयहृद्वृक्षुगुहासु
 ॥ ॥ यावद्भारगस्तस्यप्रह
 वतिउवनयावदाकाग
 गंगयावत्मागनयाज
 गलगलयतिस्मयतिवी
 गलेगमःयावद्वकायिता
 काहृतिविमलजलद्वयसि
 द्धान्तवागीगावत्तवृक्षो
 चंसजतयत्रिवृतावक्षग
 मजलक्षी ॥ ॥ यदवा
 यदनागमप्रहगलसकला

हानकविश्रवाःथवयाथ
 वसाताःतिथिगलसकलाथ
 वतर्कगजोगमथलनाःक
 लुवलाश्रकवतेयेयसाव
 लुसगीववद्याःस्वस्वीतंसनु
 नित्येतिनिजसूदप्रदंसंउ
 मनाजलक्षी ॥ ॥ वक्राविश्र
 श्रमकंवलनयमवलदक
 यागीसमीवःशीयकगमन
 दृग्जगहगलवसुरिःसंयू
 गांसर्वनागमःहलन्नाःसि
 द्विबीनाःद्विनागरुयहनाथ
 दुस्य्यादिथवाथानित्या
 याश्रमाताःसूनवननमि
 गाःयागुवःसर्वथवाः॥
 अंकानवृदमूलकमयद
 कथिर्कद्विस्विलुगमत्वा
 श्रुकयगंसामयर्थयशन
 खिलेद्वलथेवगर्ध्ववदक
 यागश्रुयासगीगद्विजग
 लसुमनेतीयाश्रयनेत्य
 यागश्रुकल्युद्वःशुचिग

नमस्तिष्ठिः या उवाच ददुः
 ॥ ॥ कृतार्थं नानसिद्धिं वि
 कृति कृतमस्वन्नकनगधना
 र्गगआलिः यदालकं शतव
 हसदगं दन्तिनी कासून्या
 निरुत्तायस्य गगमधगज
 र्गिर्दानवन्द्यो हिनर्धसा
 यं वाहुस्वयं वेयति कुवतुम
 हसिद्धिं नृथगविष्णुः ॥ ॥
 कालो वर्तुः (मसाजं) नम
 लजलासामर्गरीववगाभृ
 यदाथैवोलायदकमक
 थिनायायमूर्त्तीगर्गगा। क
 द्द० रुनागसाम्गितयथ
 कृतिलाव निविद्यावरागा
 नाक्षविषाधयगम्यजन
 नविष्णुनकैकतावदगंगा
 ॥ यवाकृतिं तुलकृत्क
 यदाष्टलावमवया। आयुर्द्व
 द्विययत्नेन यजमानस्यै
 कना॥ गव० कीलेयदास्य
 क्षिपिषास्वावावसंक्षिगा।

वाक्षस्तवचित्रविह्वल्य
 द्याष्टिवीगथा॥ ॥ काले
 वर्षनिधवाक्षिनिधिवस
 दासस्यसंयुक्तुगावदाक्ष
 संनुविद्योऽसकलनृपतिथ्या
 धसुवेनिधजाश्रितत्वाति
 यालेनवप्रहवतुसकाका
 शुभसार्थयुक्तानिथ्यात्मा
 ह्यमाधक्षितिवसुसंग
 गंसर्कजायुगलक्ष्मी॥ ॥
 यावद्वक्त्राहनिहनेधवाद्या
 मसामार्कगुगायावद्विनी
 मदनववनीसागनायाव
 दमृ० यावन्मन्त्रवृत्तिनि
 नय० कृमी। लघीवहेन
 ॥ तावलक्ष्मीरुवउरवता
 मिथ्यलोदीधमाय० ॥
 यदावयन्तुकालजनय
 नुवसंक्षीणवृद्धिआदिस
 क्षीनक्षीनाद्या० संयुगावा
 नयविप्लवमति० योवैश्व
 नाजाधविणी। गूलत्वासा

धृष्टगः कल यव गिजनाया
 उरः खविता गंला कानां रु
 किशोरु वउ वलसधारु
 किशया गिजामु ॥ ॥ स्वस्ति
 यजात्यय गिया न त्वं न्याथ
 नधमीयत मही मही ग्मा
 गावा (गयः) गुरु ममुनि
 खंला का समसा सविना
 रुवतु ॥ ॥ कालं वषति
 यजुः नृः पृथिवी सस्यमा
 निती (द) ग्मा यजुः रुवति
 गवाक्ष्म लः सतु निरुया ॥
 ॥ सतः सतु निरत नं स रु
 गिना विधु सया था दया ना
 जानः यत्रिया लय नुवस
 धाधमस्ति गा सव्वदा कालं
 सतु वषिना डल मत्रः स
 नुयजाय ल्या दामा दगाधि
 नवृद्धि वाध सतु ग्मा धी
 यमादां सदा ॥ ॥ जिक्का
 धाया ल्यव नवल नाग (ग)
 यना विन्दु या गा ससेदा
 गुर्वलि वनयति गेलु कय

अकननु। मागही नय विक
 यणिं यथ मान विनष्ट भा
 सर्वत दधिव मया साध
 मत्त दमधी ॥ ॥ अरुना
 लूनदा बाहम मका रु
 गयं लुतां वा न्यदा बाहं गं
 मदा प्रजा विधा न क म म
 नवलिरिः सा यल्ल न
 मरुः यल्ल गल्ल नधाया
 दिह दिव रुग वा न्य मया
 सवती नीयं सधु र्गुत व्वस
 वंदल नव दन वयो अ
 ली सय सतः ॥ ॥ क्रिया
 लोपधु काम प्र क्रिया ला
 वदयं क नीय दक्षि म
 क्षिपं वा वं दम गां यन म
 म्वना ॥ ॥ यदि दया क्रिय
 यं स्य आवा यं स्य वि (ग) व
 गः सतु मदा विही न न ग्मा
 मय ० नदा यदः ॥ ॥ माग
 वाक नही न त्वं वं (ग) यिव
 वि (ग) य गः गु वि गी ला

दिग्गंतयजमानाश्चक
 मस्य॥ ॥ वदन्मयाशु
 द्विजियादहीननयहिता
 । तसर्वदुर्महसिर्वह
 निवसर्वदा॥ ॥ धोषण
 नाहुर्वनेरुकिरावावाप
 त्यइष्टमूनयश्चवैरा
 गू। नूनाधिकंमनुकृतं
 योध्वनंनकसमवममक
 मरुजा॥ ॥ नाणीसुसिदि
 नसुसिस्वसिमध्वदितास्मि
 तास्वसिहयाहुवनित्यं
 स्तिसर्वगसर्वदा॥ ॥ तं
 मिःसर्वहृतातसिंहिता
 वनावनंअकश्चानह
 तातद्विष्टव्यनमध्वना॥
 ॥ कर्मनामनसावावावा
 नाग्रागिर्मम। मनुकीन
 क्रियाहीनरुकिहीनंय
 कृता। मनावाकायंदाध्वक
 श्रंतामनमध्वना॥ अगर्गन्धा

दि। उ। कर्मसु॥ मधुल
 लुप्यतगिनसिहवर्ग॥
 मधुलविसर्जनं॥ ॥ उंठि
 धुर्लुकमिगिदवाणीवा
 द॥ उं॥ अ। उ। यु। कलमिगि
 कलगाणीवायां॥ उं॥ विष्ट
 तश्चद्विगिसर्वगध्वनी
 वायां॥ उं॥ अ। गि। मृ। वि। यद
 मानवाश्चजन्मध्वनादि
 तां। गमीमहंमहोवयं
 ॥ अ। ग्राणीवायां॥ ॥
 उं॥ स्वसितं॥ उं॥ अ। य
 धागादकनोवायांलिथ
 कां॥ उं॥ यदयकगिचद
 तां॥ उं॥ यस्मकूमो॥ अ।
 वायांणीवायां॥ ॥ उं॥ उ
 लिष्टवद्व। लस्यगधव
 यंतस्त्वमह। उयमुयं
 मन्मसुदानं॥ उं॥ उं॥ अ।
 गुर्ववासवा॥ उं॥ अ। वि
 सर्जनं॥ उं॥ उं॥ द। विष्टुति
 ति॥ यणीगविसर्जनं॥

ॐ कल्पाविम्वतिमत्वा
विम्वतिकस्मैत्वाविम्व
वतिकस्मैत्वाविम्वति॥
याथायत्रकसहिगमसि
॥वक्ताकगमावर्त॥ॐस
मिहियानति॥वक्ताकग
नवगीमादकनातामि
वकं॥ ॥वक्ताकगसंक्
वयसमिधहामं॥ॐह
ताकमं॥ॐह॥ॐह
ताकमं॥ॐह॥ॐह
गीताकसमिधहयात॥ॐ
जातवदगस्वाहा॥ ॥ॐ
तनूया॥ॐसि॥ॐमयाहिआ
यद्वा॥ॐसयायूमदहिब
वीमदहि॥ॐमजमाग
लाडनीतामआपृष्टा॥ॐ
तिनका॥ॐमधमधव
मविगाआदधमधमधम
दवीसुनखरीआदधमधम
धमध्वनीदवावधकाय

कनवजंविद्यंगनिवमआ
आयतावायुगधदृष्टा
उय॥ॐवलो॥ॐतिदगव
लां॥ ॥ॐशायवजमदग
कस्ययस्यशायुर्वाअदव
वशायुर्वातनामशुशाय
वां॥ॐगसुतसनालला
टयीवायादकि॥ॐवोदृम
लददितिलकंककाल
यत॥ ॥कलगधिविम
ऊने॥ॐउदयतमस्वति
॥ ॥अमकलगथमक्ति
कसमर्थी॥ॐवदवा
निआवायादिसमस्तक
लगसमर्थी॥ ॥अह
सिहसनाकनसक्तिक
यजमान॥ॐसमिन्न
ला॥अयदणी॥ॐनको
हनं॥निम्वकनं॥ॐअध
वावद॥वलि॥वहि॥दि
यत॥वनादीदकनाय
कली॥ॐवसायविशनि

[illegible]

ल॥ एषा यज्ञे यज्ञे यज्ञे यज्ञे
 हस्तक वाक ४ सर्वे वी न स
 रुषस्व हस्त॥ यज्ञे विसर्ज
 नं॥ वा सं दत्वा॥ आत्मा ली
 नं॥ यून ४ गवक्षामं॥ उं ह
 ४ स्वाहा॥ उं उ व ४ स्वाहा॥
 उं स ४ स्वाहा॥ उं ह उ व स
 ४ स्वाहा॥ उं यथा ना मा न
 य स्वाहा॥ मृष्टिय ४ कां॥
 ७॥ गच्छ गच्छ स न ॥ ४ ४ आ
 त्मा सं सा न वा रु न ४ य ग
 वृक्षाल या द वा ग गच्छ
 रुगा ग न॥ अस्मा य रुष्ट
 ॥ अर्धया गानि कूर्ध्व वा
 म्मा ॥ धा म स्वी कृत्य॥ इय
 य नं॥ आवर्तुं॥ क मा जी
 विसर्जनं॥ सर्व वा क्ष भ
 न रि वा द्य॥ गगा वा क्त ल
 राज नं॥ ॥ ॐ नि विष्णु
 ध निष्ठा विधान का र्या
 य ॥ ७॥ क कृ णी क र्म
 समा कं॥ ॥

अथ वदुथी कर्म काल ७
 ॥ अग्नि कृष्ण काल ॥ अ
 न्नाग्नि कृष्ण काल ७ ॥ क
 र्ण कर्म सुवैवता ॥ उं क
 या नश्चि गति यत्रिरेवर्ण
 ॥ ॥ यथा यथा विधि म
 नुष काल गन्धन ॥ तारा
 थयदा साधन ॥ समिध
 हामं ॥ अग्नि त्रा म क न र्ण
 ॥ विषे क्षरुति ॥ वदा क
 ति ॥ घृता कृति सुक न
 र्ण ॥ घृता कृति सुकु ॥ ॥
 यथा वदस्य मनुष्य कर्ण
 काल ७ ॥ शिवा त्वे न देव
 अवनस्यु ॥ गता ॥ लजा
 मरुति सुख गि ॥ उं म
 ना कृति ॥ यथा ग कि र्ण
 त्या कृति ॥ राजा द ग जे य
 माना यथ न ग थ गित ला
 कृति दशा ७ ॥ गन्ध्या क

ति ॥ यद्वि का कृति ॥ यव
 ध्यादि ॥ तलि प्रदानं ॥ वा
 क्त ल प्रज नं ॥ दीप वृत्ति का
 हामं ॥ उं मृत्वं वा व य ७
 ॥ मग्न्या यद्वि कृ हामं ॥
 आअन ॥ यं व वा न र्ण ॥ च
 उद्यादि त्यादि ॥ गन्ध्या क
 ति य र्ण ॥ उं मृत्वं य २ ॥
 उं गजा यं त्या कृति विष्णं ॥
 ॥ उं ति मुति ॥ वलि क न र्ण
 ॥ दक्षि ण दानं ॥ गन्ध व
 या गन ॥ यवि र्ण भा व नं ॥ द
 ग य ता का न द्या य ल व वि
 स र्ण नं ॥ वा क्त ॥ उं मया प्रव
 व र्ण क्ता य म द्या आ स र्ण द
 वता ॥ स यी ति गुरु द्या कृति
 मया यथ वि स र्ण य न ॥ का
 का या व म पु र्ण ॥ प्रज नं
 ॥ उं प्रज नं य र्ण नि मा ल्य र्ण
 कि र्ण व र्ण कं ल य ॥ य ७
 वा य द वा य स यी ति सु म
 ना र्ण न र्ण व ॥ का म ॥ उं

चतुष्टयं कृतं तिलं तमवा
 ससदा विद्य। गजवसंधना
 दवचनतायनमाहुः॥
 वक्रा (ग) दूतु ताण्डकिर्ण
 दत्ता। उं दवागुविता
 मा॥ संयुक्तु। उं आद्याय
 स्वसमंशु॥ ॥ आसंसाय
 १०७॥ यजमाना रिषकं यथ
 कं॥ वक्रायणी त विसर्जितं
 ॥ यरु विसर्जितं॥ सर्ववि
 सर्जितं॥ ॥ न्यासं कालय
 न॥ अर्घयाणां धाम स्वीक
 र्त्वा॥ कोमानी वृजर्त॥ सूर्य
 कि। सो विधाय॥ यता कादि
 नदी यवा रुयत॥ तिर्ध्वी मा
 ल्य स्वस्त्यं तदिये॥ यिना
 य विसर्जितं॥ छतित्रुथी
 यरु विधिभमा क॥ ॥

१ संस्तुत २८ मानुषि नृप
 का॥ १॥ लखत्संयुक्तु मे
 दा॥ गुरुमनुसंवेदा॥

१ सोमं कौक ४ अगस्त्याय क
 लाहवाय लायाम् जयताय
 स्वाहा॥ १०८॥ वनगातं॥ व
 दनयुक्तु॥ उं सकसृमय
 ४॥ १॥ सोमं कौक ४ रुद्रा
 जाय स्वाहा॥ कृगव॥ वद
 युक्तु॥ उं वक्राय स्वाहा॥ २॥
 सोमं कौक विष्णु मिश्राय
 स्वाहा॥ समिसि॥ युक्तु॥
 उं वाक्राय स्वाहा॥ ३॥ सोमं
 कौक ४ जमदग्न्याय स्वाहा॥
 इति नसि॥ युक्तु॥ उं वृह
 त्यत॥ ४॥ सोमं कौक ४ व
 लिष्ठाय स्वाहा॥ लाहसि॥
 युक्तु॥ उं वनगाय स्वाहा॥ ५॥
 ॥ सोमं कौक ४ कभ्याय
 स्वाहा॥ यिलासि॥ युक्तु॥
 ॥ उं मिश्रवन्ता॥ ६॥ सोमं
 कौक ४ अगस्त्याय स्वाहा॥
 अयामा न॥ युक्तु॥ उं ता
 अय॥ १॥ ८८॥ यगत्स्वता
 आयतवि (लेख) सकसिनि

विहामं ० ॥

ॐ ह्रीं स० विष्णु तनूना
नात्राय यमम विरुष (८)
अनता यस्वाहा ॥ वत्रसि ॥
यूष्म ॥ ॐ अ० ग० रु० व० त्रसि
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं स० क० यि ला
स्वाहा ॥ द० वि० व० सि ॥ यूष्म
॥ ॐ नीलयी वा ॥ २ ॥ ॐ
ह्रीं स० ग० य० य० स्वाहा ॥ व० त्र
ग० त्रसि ॥ यूष्म ॥ ॐ उ० द० रु०
जात वे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं स० ग०
क० र्ष० म० य० स्वाहा ॥ यि ला
य० त्रसि ॥ यूष्म ॥ ॐ वि० य० द्रु
रुता ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं स० रु० ला
य० य० य० स्वाहा ॥ क० ग० ॥ यूष्म
॥ ॐ उ० व० त्रसि ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं
स० म० वि० रु० य० य० स्वाहा
॥ स० मि० सि ॥ यूष्म ॥ ॐ दि
वा० वा० वि० य० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं स०
नी० ल० या० म० य० स्वाहा ॥ य० व० द०
त्रसि ॥ यूष्म ॥ ॐ वि० वि० य० द०

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं स० व० ल० रु० द० य०
स्वाहा ॥ ला० हा० सि ॥ यूष्म ॥ ॐ
श्रु० म० क० य० ज० म० रु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
स० म० न० य० ध० ना० य० स्वाहा ॥ अ०
या० मा० म० ॥ यूष्म ॥ ॐ स० य० द०
नि ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं स० ली० का० ला
क० य० ना० य० स्वाहा ॥ अ० दि० व० त्रसि
॥ यूष्म ॥ ॐ अ० द० य० ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं स० रु० मी० दा० य० स्वाहा
॥ व० क० क० सि ॥ यूष्म ॥ वि० य० ॥ ११ ॥
क० मी० नि ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं स० स०
रु० य० रु० वि० न० स्वाहा ॥ वा० सि
दा० डि ॥ यूष्म ॥ ॐ स० रु० य० नी
या ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं स० रु० य० य०
स्वाहा ॥ अ० क० य० ग० ॥ यूष्म
॥ ॐ रु० य० य० य० ॥ १३ ॥ ॐ
ह्रीं स० य० ग० नि० दा० य० स्वाहा
॥ द० वी० ॥ ॐ यूष्म ॥ ॐ ग० म० स०
वि० रु० द० य० य० ॥ १४ ॥ ॐ य० न०
क० व० गा० य० य० न० य० वि० ग० य० न०
उ० द० ग० सि० नि० वि० ह० म० वि० वि० ॥

ॐ ह्रस्वव० स्व० की० रू०
स्वा० ॥ ध्यान० ॥ ध्यानदायक
गुरुमस्तु सर्वजगतां ॥ ० ॥

सुवर्णकलगधजावाक्षु॥
 उंथावचन्द्रदिवाकनृषु
 वरुणाद्यामामननित्यसी
 यावत्सन्निमात्रलंष्ट्र
 तस्यांतिष्ठतिष्ठथीतलाके
 लागनित्रिजायति४सन्
 माथावत्तदीयागभत्त
 वर्णकलगधजन्तिनृष
 तातावच्चित्रंतिष्ठतु॥रुग
 वन्द्यवदवंगवन्द्याद्वंठ
 तगणवत्रासादंसमना
 नमस्तद्वदथ्यनिनिमित्तं
 ॥यथागच्छानूकृत्यनसुव
 र्णकलगधजं।तस्मिन्तव
 समानोऽयमेवेतन्द्यव
 तसा॥धीत्यावयनयारु
 क्तासीमनस्यैवमान
 सा।शक्यामिमहद्वद्व
 क्तायनमग्नय॥ ॥वृत्ति
 कावाक्षु॥उं वृत्तिकल्पम
 दग्धमनड्वर्त्तिमसदागि
 वं।यासादाद्वर्त्तिनद्वर्त्ता

नवयतमा सुग ॥ वा ६ ग
 किञ्चिन्नाजासुवीन ॥
 यजासुधा ॥ सुकूलं वृद्धिना
 निर्यसुलि को प्राक्तमवव
 ॥ यथा निवसुधा वृलि य
 धा वृलि सुधा निव ॥ नि
 ववृली समं य ॥ सर्व काम
 रुल्य दं ॥ ॥ निवृलिका
 कायनवा ॥ ० ॥

धनाध्या विना ज द्य का
 अना काम ना ज ॥ गुय ॥
 यथा द्य काम गुयान वनाम
 त ॥ ॥ मद्य ॥ मय ॥ ४
 ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ धन मद्य
 य ॥ मय कूल द ॥ ॥

मध्यैव त्वनामा ॥ ४ कनि
 यादिकु मने नु न ऊ नी मूल
 य ॥ क कल माला विधि
 य ॥ ॥ धन न कल माला धा

या ॥
 उद्धरा ॥ ग र व द्या नी मध्य
 रा ॥ ग द नि द ता ॥ अ धा रा
 ग र व सु ल क र्थ धा न य
 म धु वा ॥ उद्ध रा म न य ॥
 अं अ धा रा ग द य ॥ य ऊ त ॥
 धा न य वि द्य रा ग ॥ अ धा य
 ल क्सी सु व द्या ॥ ० ॥

०० द्य म ॥ ग द य ॥ ल क्सी लि
 र्ग ॥ ग म य म द्य ॥ ४ व द्य
 नी क ल ॥ ग मूल ना ग य
 क ॥ अ क्सा य नी ॥ क ॥ गु ॥
 नि दि ॥ ग ॥ रा ॥ ग ॥ क ॥ लि ॥
 क ल ॥ ग ॥ त ॥ गु ॥ ०० द्य ॥ स ॥
 नि धा ॥ न व ॥ म ॥ गु ॥ ल ॥ द ॥ व ॥ म
 र्च न ॥ ॥ क ॥ म ॥ अ ॥ म ॥ गु ॥ ल ॥ द ॥
 अ ॥ य ॥ क ॥ व ॥ वा ॥ म ॥ रा ॥ ग ॥ य ॥
 ४ ॥ द ॥ ग ॥ क ॥ ल ॥ वि ॥ धि ॥ य ॥ व
 य ॥ य ॥ य ॥ व ॥ य ॥ ज ॥ य ॥ ॥
 ०० ति क ॥ म ॥ वि ॥ धा ॥ न ॥ न ॥ व
 क ॥ ल ॥ व ॥ य ॥ न ॥ ग ॥ य ॥ ॥ ॥

धीयन्नमकरुवांगस्यथरु
 अनिरुलं वक्रादिन
 उवममृषीर्धमननववी
 ७॥ कृष्यवाक्यनरागव
 उथीयकालथ ७॥ धू
 वीरुनरुं धूमसोरा
 गुं धनसंघदं ॥ दक्षिण
 धिमवेवमृष्यानिदरा
 रुतां ॥ विसृजनेतिनायक
 विद्वानामधुयानथ ॥ ग
 लक्ष्मिनुमिन्दायधवा
 लक्ष्मीविथारुव ७॥ अ
 र्वनादिविधिं कृत्वा निमा
 लुं वलुयुजथ ७॥ नदीस
 मयर्षिं कृत्वा पश्चात्कीमा
 नी अर्चत ॥ १३६ मय
 लमृषीर्धमननववी
 मधुमा अर्धद्वारगर्ग
 वरादधमं धूमसोरा
 वुलकणी ॥ ॥ कनक
 लिर्गनीलं वलं वमो

किं कांतातिवक्रवत्ता
 निविंतासकलल्लभदया ॥
 ॥ भक्तिविधायिनिहवनि
 वृत्तिद्वानमनवाभक्तिरु
 तितनावायांतां नलस्यथ
 विधि ॥ ॥ गतिदिगतां न
 ॥ ॥ अनिवायधवदध
 सामस्यरुथिववयं
 तीर्थानिविषयकनतिष्ठ
 किदकि ७॥ वक्रादिन
 यिर्लुयाजाययादिरुमि
 कां ॥ ॥ गतिकनतीर्थ ॥ मि
 त्वावतिष्ठतं नद्यपरा
 स्यावसादिसुन ७॥ सत्यं
 ममनल्लभमृषीर्धमन
 यध्यावस्तितां स्याव
 स्यावनामवस्यसगतेमि
 यथाधुववायामास्तिन
 तासकगयवयासाववस
 र्वाव ॥ वामस्यवमि
 कृयवनयथायीतिरुया

30
 25
 20
 15
 10
 5
 O CMS

कथिवरुय्यीगिस्वरा
 नलनीलवर्णोद्यत्सया
 वयावयावदिवालसा
 भानिस्वराभनगीताम
 गात्रागलीयवृद्धिसाज
 शुर्वविजुनधनसुक्तिग
 मोक्षलंवायवर्द्धी॥मिथा
 ॥गकिनघीयतिर्नधागे
 नीलक्षीसुवस्वगी॥गल
 गस्किन्धनद्विधमूनथा
 वसुतिमला॥मिगवर्द्ध
 सदासीतंवाविनावलज
 सुधा॥मिगवर्द्धकनिधा
 मिथावर्द्धद्विधमदि
 नी॥मिसाया॥ ॥००००
 कलगकायवाक्य॥रग
 वत्तनलाकंगगकवृथ
 धनाधियसाकासकस
 नगसंस्वर्द्धिदिवायद
 गात्रकमानवीतनमाह
 लयासिगांतनृ सुर्त

॥अद्विगामिमयादवर्द्ध
 लामधुलवृद्धकांसयाह
 तस्ययक्त्यधगक्षानृ
 यिगां०००द्विन्धाथकलुर्
 तवस्त्यविगल्यतशसो
 शंयैमानसंनमनसाह
 कगांवसुधाधिय॥थ
 नकात्रविहीनय०गल
 वृद्धेयगांथका॥ ॥मम
 लंगवाविधुममलंगन
 उधुजंमंगलंयुलुनीका
 र्कमंगलमधुसुदनाडि
 नमानाजाभिनाजायसुव
 संयतिदयवासवली
 कयथाताथविधुमूक्ति
 नमानम॥ ॥गुरुकृद्धि
 यक्त्यावसयजात
 यदभाकयातमानका॥
 ॥यक्त्यमधुयगमयजाह
 सिंकडिनुगिक्कयवधा
 न॥अमिकुलुयागअग

[illegible]

अतः ब्रह्मणा जलमभासा
 सिक् ४ सिमता द्वाधनं च
 कूडलमलेरुं अकाक
 उड्छानवाकू उरुकाक
 १५ का १ क्का दोवी हि रं २
 अष्टादश समिधका ३ द
 अयिता उय १०८ अ ३ द्या
 उव उर सिद्धनका यलक
 उर आदू का यलक उर
 अमलसव उर द्य वकन
 २ क सिध २ द्वा न साध नि
 द्याग ४ सा दू द्वा ४ च द
 नगुठिका व उ १०८ अ २
 अयुनि व उ १०८ अ २ न
 यक न अ २ सम सव न
 नय द्य धि यं गु रि रु ला
 रि क दू द्वा म ड ष धी अ २
 कं ध ८ न उ ल दू वा वा न
 काल सा स्ना न ड ष धी अ
 वा कू य रु नि अ गं वा कं सा
 अ सि अ यं ग क दान वा

धानावयागलिमि१ चयाग
उठरुहासा॥५॥॥॥
लिरुवा१॥॥॥॥
रुयागवसयजायुजावलि॥

गवधनासानल॥॥॥
उयलुथाउयलानधन॥
यवदोकयागमालका
यलुमवुययागसिहान
मानका॥॥॥
गकवायागुनेयवयान
रुसिकलितवउ४॥
वमगअगयामालका॥॥
लगवउ६॥॥॥
वउ१॥॥॥
नागनावश॥॥॥
रुगकागयनय॥॥॥
गवउअनगअलिनी॥॥॥
खनविद्यगकु६०॥॥॥
गाक१॥॥॥
याल१॥॥॥
नागकु१॥॥॥
याग१॥॥॥

१॥॥॥
यंवनल॥॥॥
अ॥॥॥
वात्रयाग२४॥॥॥
लुयाग१॥॥॥
ऊनवा१॥॥॥
उ२॥॥॥
॥॥॥
याग३२॥॥॥
वाककु१॥॥॥
नका॥॥॥
॥॥॥
तकु१॥॥॥
विद्यामगकु१॥॥॥
गुदवानयाग१॥॥॥
दुगकु१॥॥॥
होमल१॥॥॥
उ२॥॥॥
लका॥॥॥
३॥॥॥
दं॥॥॥
वधी॥॥॥

30
25
20
15
10
5
0 cms

सिद्धकायल३॥यालवृ०
 रकिमिस॥वेनेयेरुल
 ठिकद्वयकणप्रयद्वर्क
 नममयगाययुयुनव
 न्दुविजा३ताधुनिजा३क
 धमलुलहुवाघारुन०
 उजा२॥काजानाय॥सय
 निनिलिमिवा॥२॥अंजल
 नाला१॥चाकनरुनिती
 यागरुनिती१कदानवादा
 नकंययनूथिडा॥लंकगर
 ने॥वकारुडाकाझा॥उगल
 लसिजावहाभाहावावा
 मा॥कंचरुसिवा४॥मृति
 काजानमालका॥॥अ
 धस॥यगवलिरुवता॥
 खानमालकावाहनमान
 का॥कधुपगाकाजो३०॥
 यंत्रयगाकाय३०॥००
 कलगायानाजानगा१
 न्दुयसुविजा॥धंठिलय
 यवाजवम१॥धमंयनेजा

नलधुयाना१मालका॥नमा
 वाअमुलि॥लमल॥आका
 मरुलुखान॥आकाखान॥
 गाययदवास॥१धंठिलका
 याग१धुनिजमकायिताउ
 ॥चरुथीयागयुजाजाकी
 मानीयुजादानमानका॥
 दयकयागयविद्यागिध
 गा॥गुरुमंभु॥ ॥

उयुखान॥अकासउप
 काक्षकाधालकायालम
 गा॥अनकवायगिस्कोश
 नमायगिष्कोकलगायवि
 द्वागययदमंभुगसका॥रु
 लाजआहुपुव॥रु॥३
 रुकायदिकी॥रु॥३गा
 आययिम॥रु॥३यय
 उरुन॥ ० ॥

यवगायमृलिका॥नृवदा
 नमृलिका॥नदीयानावा
 नमृलिका॥यदमंभुलमृलि

यज

30
 25
 20
 15
 10
 5
 O cms

20
 15
 10
 5

का॥ वनाहात्याट्टमुक्तिका
॥ वल्मीकमुक्तिका॥ रुक्मिण
कमुक्तिका॥ गणगुणमुक्ति
का॥ गोकुमुक्तिका॥ चतु
ष्टयमुक्तिका॥ विश्वज्ञान
मुक्तिका॥ निवृत्तानमुक्ति
का॥

एदवत्तवट्टविलाख॥ वं
नयनाग॥ ववंगग॥ ॐ गि
कत्वाथ॥

एदिनाख॥ दुम्बिनवनगता
अप्यथपलीग॥ गुत्ताठ॥
वकुठ॥ कदम्ब॥ अ० वल॥
आले॥ वातिसि॥ समि॥ ॐ
गियल्लव॥

एयन्नकणल॥ गन्नाचना॥
सहु॥ कृष्ण॥ वका॥ ग्रीवदु॥
कूकमी॥ गतयथा॥ नकचन
॥ अ० वलसि॥ विथयु॥ ॐ गि
नादि॥

तच्छा॥ युदा॥ कामुडा॥ लूसि
ऊनरुगि॥ चवग॥ कुलिरीमे
नाऊ॥ गु० ० समि॥ अ० री० न०

ॐ गि॥ संमिसरु॥ अ० वल॥ व०
क० क० क० द० मि० ला० था० क० ० कि
लि॥ ॐ गि० क० म॥ ॥

तं० श० श० आल॥ ॐ गि० गि० वृ०
एयलासायदिना॥ स्वर्क० वे
क० क० अ० व० द० म० मी॥ थ० व० द०
न० म० आ० मा० ग० न० क० न० वी० न० उ०
दु० म० न॥ ॥ ॐ गि० क० विल्लम०
मानं॥ अ० क० मा० ॐ क० का० मि०
न० चू० त० अ० ना० ग० का० र्थ० च० द०
ॐ गि० म० मि० धा० सु० थ॥ ॥ ॐ
एय० द० द० म० मि० ध० वि० धि॥

नाहासि॥ अ० य० न० सि॥ व० न० ग०
त० सि॥ वे० क० क० सि॥ उ० न० सि॥ स०
मि० क० र० क० र० वा० न० गु० नि० थ०
व० द० न० सि॥ अ० य० मा० न० क०
न० वी० न० द० मि० नि० श्व० ग० अ०
क० या० ग० सि॥ आ० ल० सि॥ आ०
मा० सि॥ दि० ना० थ० सि॥ अ० थ०
य० स्वा० न० सि॥ ग० ग० नि० सि॥ अ०
म० सि॥ नृ० य० स्वा० न० सि॥ ॐ गि०
अ० द० द० म० मि० ध॥ ॥ ॥

ऊ० द० मा० सि॥ थ० कू० ट० या० थ० न०
कू० क० म० रु० न० उ० मि० च० कि०

नमो ॥ १ ॥ १२५० नमो ॥ १०

किं नय ॥ नयस्वानकसूनि
वृत्तिमय्यायधी ॥ ० ॥

१६ वृत्तवलिनिनिनविथ
कं शुघानकनोवलिसकृत्
थानसवाय ॥ नवनलज
॥ यादकृत्तनकलनन
वाकृत्तननयथकम
सकमिष्टजानवकृत्तन
नयजज ॥ ॥ १६ वंथम
नयस्वानलननयस्वा
नउहासयकानिथवा ॥ २
॥ १६ नयस्वानन ॥ १६ वंथम
शुद्धनयानलनननल
मंग ॥ ३ ॥ १६ नयस्वानन
ननवृत्तनिलकउगुति
॥ ४ ॥ १६ नयस्वानलन
कलमृत्तिमाम ॥ ५ ॥ वाय
थनानयानमृत्तिमय्यन
गकृत्तन ॥ ६ ॥ १६ नयस्वानन
स्वाननययननगमोग
॥ १ ॥ १६ नयस्वानन
स्वाननययननगमोग

४ ॥ मध्ययाधननंधाकुच
नलमलिकवृत्तिसकलना
दुल्लयलजजयलनयनलज

कुजयनमृत्तिमय्यन
कयननलककृत्तननय
लावमनययथवृत्तन
दिगयानननयजज ॥
दीर्घयमालननयलिस ॥
अनयक ॥ वाकृत्तनन
॥ कृत्तननयननय
कृत्तननयननय
थिवीयननयलिस
वा ॥ वृत्तिमय्यनकविधि ॥

अननमृत्तिमय्यन
कृत्तननयननय
कृत्तननयननय
दीर्घयमालननय
नकलननयननय
दिननयननय
नयननयननय
कृत्तननयननय
नयननयननय

यादिदद्यात्वाद्यनयद्रु
ल्लयद्यालयाल्लय
लसखंविनगिहनुसाह
॥ॐतिजीवत्यासविप्रि॥

एवकाथाउ॥उउत्तान
उकासउ॥उकाथका॥
धमवकाथाल॥॥यदि
रुल।यहुरुल।वर्तनगुरु
ल॥इमिलरुल।यिलाष
रुल॥धमजशकाकगोधा
भमाल॥
यवजीवत्यासविप्रिलित्य
त॥यथमगाहृगुवि॥
यूनयासंयधयवानुत्र
थलखदह॥अथमृषिकुय॥

उंयालयागिहामनुस्यवक
विष्नुदवयपृयसला
मानिचुदासि॥उंयधदु
वताया॥यालयागिहया
विनिथाग॥

अगसंकल्य॥उंअयमा
सयद्रुगिथिनिमिलयुरु
ल॥अमकयवतायाजीव
त्यासयालयागिहामरुके
विष्नु॥तदनूदवकुगम
द्याल्युग॥उंआधीनग
कथर॥॥उंधमोय॥
॥ॐत्यासतंयविकल्या
॥उंकोपृधामुक्तय॥उं
कोपृधामुक्त्यायविपतय
गिवगलायनम॥उंको
विद्यागलाय॥उंको
विद्यागलायविपतयवि
ष्नुवनम॥उंॐदंवि
॥उंकोआत्मागलाय॥
॥उंकोआत्मागलायवि
पतयवकु॥॥उंवकु
यक्तान॥ॐतिगिगलव
नाल॥उंकोपृधामुक्त
लाय॥उंकोपृधामुक्त
विपतयवकु॥॥उंको
॥उंवकुगलाय॥उंको
आपगलाय॥उंको

यावाधिराथनिमूवरा॥
 ॐ द्रविमू॥ ॥ ॐ कोमज
 गलायरा ॥ ॐ कोमजगला
 धियायत्रुदायरा ॥ ॐ अ
 सि॥ ॥ ॐ कोवायगलाय
 रा ॥ ॐ कोवायगलाय
 गयल्लीधनायरा ॥ ॐ गव
 वाय॥ ॥ ॐ कोआकाग
 गलायरा ॥ ॐ कोआकाग
 लाधियायसदागिवाय
 रा ॥ ॐ नमस्तु नमस्तु ॥ ॐ निव
 वात्वा ॥
 ॐ कोदस्वाला ॥ ॐ दुवरा
 हा ॥ ॐ कोदस्वाला ॥ ॐ
 स कोदस्वाला ॥ ॐ को
 गयरा ॥ ॐ निमूवरा
 वरा ॥ ॐ कोदस्वाला
 दिसकात्वायस्वाला ॥ ॐ
 सयममयशा
 गावदय ॐ ॥ ॐ कद
 वायस्वाला ॥ ॐ यजाय
 ॥ ॐ कोनिमसस्वाला ॥ ॐ

सहस्रगवी॥ ॥ ॐ कोमि
 वायस्वाला ॥ ॐ अमृष्ट
 हा ॥ ॐ कोमववायस्वाला
 ॥ ॐ अमृष्टगिना ॥ ॐ कोम
 वायस्वाला ॥ ॐ विवादा
 ॐ कोममयस्वाला ॥ ॐ
 नमस्तु नमस्तु
 युवविगतिगलायरा ॥ ॐ
 कोममयस्वाला ॥ ॐ
 वायरा ॥ ॐ कोममयस्वाला
 नमस्तु करा ॥ ॥ ॐ कोम
 मारुगववायस्वाला ॥
 ॐ यमववायस्वाला
 धियायरा ॥ ॐ कोम
 वदित्वा ॥ ॐ कोम
 नाधियायरा ॥ ॐ कोम
 ॥ ॐ कोम
 धियायरा ॥ ॐ कोम
 नमस्तु वा ॥ ॐ कोम
 धियायरा ॥ ॐ कोम
 नमस्तु वा ॥ ॐ कोम
 धियायरा ॥ ॐ कोम
 नमस्तु वा ॥ ॐ कोम

30
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cms

ॐ कौस्तुभगत्वाधियायध
 कानाधिवेवाधिवेनगायरा
 ॥ नमः ॥ ॥ ॥ उदना ॥ कौ
 नृयात्वाधियायधकाधि
 देवांगुदनाय ॥ २ ॥ ॥
 ॐ कौनमगत्वाधियायध
 काधिवेवाधिवेनगायरा ॥ लि
 वना ॥ ॥ वादुदना ॥ ॥ ॐ
 कौगन्धगत्वाधियायधका
 धिवेवाधिवेनगायरा ॥ १०
 ॥ उदना ॥ ॥ कौगन्ध
 गत्वाधियायधकानाधि
 देवांगुदनाय ॥ ११ ॥

(स्वप्नय विग)
 धर्मे अगम्यया
 यदि न दुर्वा
 अं कुम स्वग
 शयन न क
 गति न लय
 यज न लिय
 स्वप्न क म
 वा ग म्य म
 मथ या न सेत

द्वि ७

जुनि
हमाशकतम
सिद्ध
कलाय
गुणमदक
कीनतन
सुन

नंदरु ४३ ॥ ३६ ॥
यल्लु ४३ ॥ ३६ ॥
मुकुट ४३ ॥ ३६ ॥
नकि ४३ ॥ ३६ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a library or collection stamp, surrounding a central circular emblem.

धूर्व
प्राक् न प्रवृत्तं भान
न स रूपां कलम
सुदिकान्दर्शकः ॥

कायनेन प्रत्येग
कायातेसाग

सर्वोपधी
नीमसुहिका

विनमोपनासकं कनगय ॥

मद्रिम
वृक्षः

Handwritten text in Devanagari script, likely a signature or name, written in black ink on a light-colored background.

57

20

15

10

5

Cons.

10



5

०८

54

or

निकुनक्षय्यमत्तं

३४२

五

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

धनिवसतया
वायंक ०॥

दायक ०॥

[illegible]

दायक ०॥

मद्यु
मद्यु

3

००५५५५

21

क

राधा कृष्ण
सदा

10

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मल्लिकार्जुन

五

176

11054

15

卷八

五

॥ १०॥

सुन

1875

15

卷一

生

五

附錄

15

10

१००० कलमयाः पीतवज्र
 १ विजयपीतगदा
 १ कृतयुग (ध्यातृगण)
 १ अज्ञान ॥ आदुरिकाण
 १ वलि ॥ कृष्णयज्ञ
 १ निद्रा ॥ ध्यातृयज्ञ
 १ गथा ॥ वातालव
 १ प्रतिष्ठा ॥ तातृयज्ञकृत्
 १ अग्नि ॥ गकि
 १ थास ॥ पीतध्वज
 १ वृष ॥ धनूगत्र
 १ यशस्वदः (ध्यातृकमाला)
 १ वलु ॥ ध्यातृगण
 १ यमया ॥ यमदण्ड
 १ यचलु ॥ कृष्णगदा
 १ कृतयुग ॥ पीतगदा
 १ वृहस्पति ॥ यज्ञ
 १ रुद्रमन्त्र ॥ नक्तकमलुत्
 १ योगिनी ॥ कलिकयाल
 १ वसु ॥ ध्यातृयज्ञनेत्र
 १ नैमृत्तया ॥ खम
 १ अथयौ वज्र
 १ अथयौ खलुदवयाभूतद्वयज
 १ विशीषणया कृत्कमचासन

१ युक्तया वज्रका गताय
 १ सामवेद नक्तकमलुत्
 १ ध्यातृनक्तकमन्त्र
 १ वरुणनामगण
 १ विधातृ रुद्रनिचक्र
 १ द्यावपृथिव्यगुरुनिचक्र
 १ गतेष्वनयमदण्ड
 १ कृतयुग पीतमाला
 १ लक्ष्मी सिद्धिमुद्र
 १ वासु पीतयुग्म
 १ कृत् मण्डनिचक्राङ्ग
 १ वायव्य ध्वज
 १ गण (ध्यातृमूल)
 १ यन्त्रगुणाम कृष्णकृत्
 १ नाद मन्त्र
 १ अथर्ववेदमणि
 १ विष्वक्मण्डप
 १ कृतयुग पीतगदा
 १ कृतयुग पीतकृष्णगदा
 १ कलिकृष्णगदा
 १ कृतयुग खलु
 १ मार्क (ध्यातृगण)
 १ युतृपीतयुक्तक
 १ ध्यातृकणिमूल
 १ युष्टिक पीतवज्र
 १ वृष्णातृ पिष्टल

१७६ क म लुत्
 १७७ त स सि क सैरा
 १७८ अ व क्ता मा ग्री व क्
 १७९ सा म अ व व लु ध्यात
 १८० मृ यं मृ यं
 १८१ अ व द यी त य क क
 १८२ यं मृ यं गं व द य त दि ग क
 १८३ ल ग चि क ल क ग ॥

१८४ वि व य वा दू च क
 १८५ ग कि ता य व न

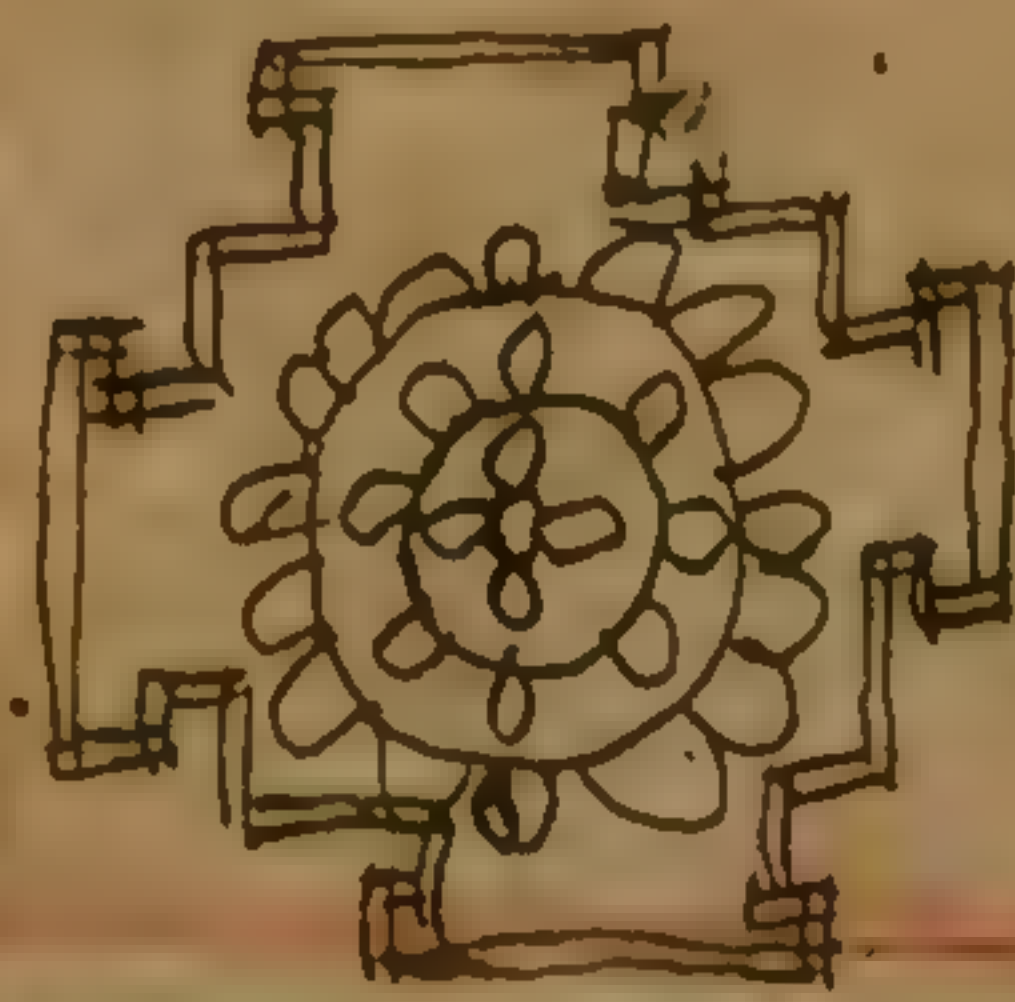
१८६ वि व वा दू च क
 १८७ ग कि ता य व न
 १८८ य धी ग वा दू च क

२ १८९ अ व क्ता मा ग्री उ अ स र्ग म वा त य
 १९० घ रि ता त ग य व क्ता
 १९१ व लि था व ड स य मृ यं ध्यात
 १९२ आ स या उ अ स ति म्मि दा क य प द
 १९३ क नू मा न या उ अ स स न य नी न व द
 १९४ वि री य ग या उ अ स ग म गी ता य व
 १९५ क य ग वा दू स व द य ग म द नि य
 १९६ य न गु ना म या उ अ स ग लु की न था प
 १९७ मा र्क लु य या व ड स की नि की ता क
 १९८ अ व क ल म स कू न सा क या र्ग

१९९ ग वि व ग कि र म र्ग क ल य ग नि व ग कि रि ध मृ कि ॥ नि व य उ मा त त ग कि र य उ मा म्मा धू ता मृ त म मृ त
 २०० म न व क्ता ॥ रा रा व लो क यो ल ग य क्ता य नि स न दि ग वि द्वा ना त स ना थ य य व मृ नि वा क्ता ॥ य य ॥ उ य को क न ॥
 २०१ ॥ य न ८ कि ना स न वृ ता ॥ क ल ग द य नृ क न दू न य वा उ ॥ उ वि य वी र्म य र ग दू र्वा वा उ य य ८ य ग ८ य न य क्ता य क्ता
 २०२ या ग य को कि र ॥ य य ॥ उ सि ता र्ग म य धि त यि य वा उ ॥ उ ड मा य र ग नृ य य लि ग नृ य ध ना य वा ॥ उ न ना य न म मृ य र क्ता
 २०३ नृ य क्ता न क ॥ य य ॥ य द य र ग य त न र ग वा मा य म लु त ॥ य न ८ य र न ॥ उ य नृ य ॥ उ य नृ य ॥ य नृ य न र्ग
 २०४ नो ॥ गि नि व ग कि य ना स न य र्ग न वि धि ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गगनकलधनमनुज
 धामभक्तविधानगतगणेशसदस्यम
 गच्छन्निनादप्रयत्नगणेशनिनाद्योग
 दधत्तुल्यविभुषणविभुषागणेशप्रक
 तुद्वन्द्वसुदंताकाठतुल्यधनप्रद
 नित्यकाल। त्रिरुद्रनाभः यन्निवृत्त
 वासुदेवनिनाः स्वामी मन्दिक
 द्योदिको यन्निनाः सनाग ॥

संन्यास आनंद गदाधर
लक्ष्मि लक्ष्मी





0 cms. 5 10 15 20 25 30

20

15

10

5



0 cms.

5

10

15

20

25

30





20

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

30

